एक बेल को भी है जीने का अधिकार

सूझ बूझ आस पास की : बोध कथाओ का संग्रह

२०१२
सृष्टि इन्नोवेशन्स
अहमदाबाद

एक बेल को भी है जीने का अधिकार

सूझ बूझ आस पास की व हनी बी पत्रिका की मुख पृष्ठ बोध कथाओं का संग्रह

प्रथम संस्करण : २००४

द्वितिय संस्करण, २०१२

प्रतियाँ : १०००

प्रकाशक : सृष्टि इन्नोवेशन्स

पो. बो. नं. १५०५०, अहमदाबाद - ३८० ०१५

फोन : ०७९- २७९१ ३२ ९३, २७९१ २७ ९२

फेक्स : ०७९- २६३० ७३ ४१

ई- मेल : anilg@sristi.org, honeybee@sristi.org
http://www.sristi.org

कीमत : १२०/-

सृष्टि परिवार

साधना गुप्ता, किरीट पटेल, रिया सिंहा, विजय शेरीचंद, आस्ताद पस्ताकिया, ज्योति कपूर, सुमती सेम्पेमने, हेमा पटेल, दिलीप कोरडीया, रमेश पटेल, महेश परमार, परषोत्तम पटेल, रामजी डाभी, आर. पी. एस. यादव, आर. भास्करन, उन्नीकृष्णन, देवसी देसाई, सुमित्रा पटेल, महेश पटेल, निर्मल सहाय, जयश्री पटेल, अलका रावल, तेजल डाभी, मुकेश चौहाण, चेतन पटेल, दर्शित पाठक, वैशाली रावल, केयुर पनारा, कनु पंचाल, दशरथ ठाकोर, गणपत चौहाण, सौम्या त्यागी, अनामिका डे, भूमि शाह, कमल दवे, ललित मोहन सती, विवेक कुमार, नितिन मौर्या, विपिन कुमार, अनिल गुप्ता

संयोजन और अनुवाद : साधना गुप्ता

टंकण : सुमित्रा पटेल, उन्नी क्रिश्नन

चित्राकन : पलाश ग्राफिक्स, डी.टी. पाडेकर

सृष्टि इन्नोवेशन्स, अहमदाबाद

ISBN 81-87160-03-9

प्रकाशन और मुद्रण- सृष्टि इन्नोवेशन्स की ओर से रिया सिन्हा चोकाकुला, AES बॉयज होस्टल कैम्पस, यूनिवर्सिटी लायब्रेरी के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९
प्रकाशन स्थल- बंसीधर ऑफसेट, अहमदाबाद।

एक बेल को भी है जीने का अधिकार

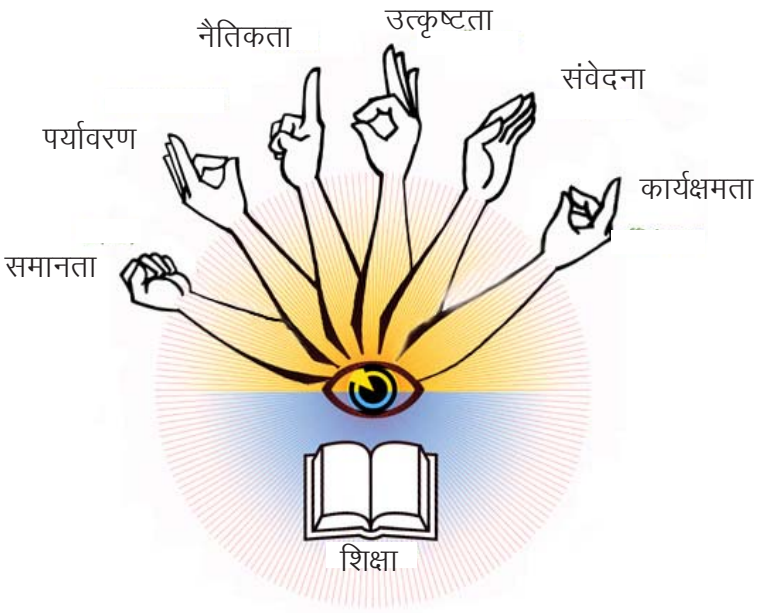

हनी बी नेटवर्क के मूल्य

सूझ बूझ की चुनी हुई बोध-कथाओं का संग्रह

सृष्टि

अहमदाबाद

web: http://www.sristi.org

हनी बी नेटवर्क परिवार

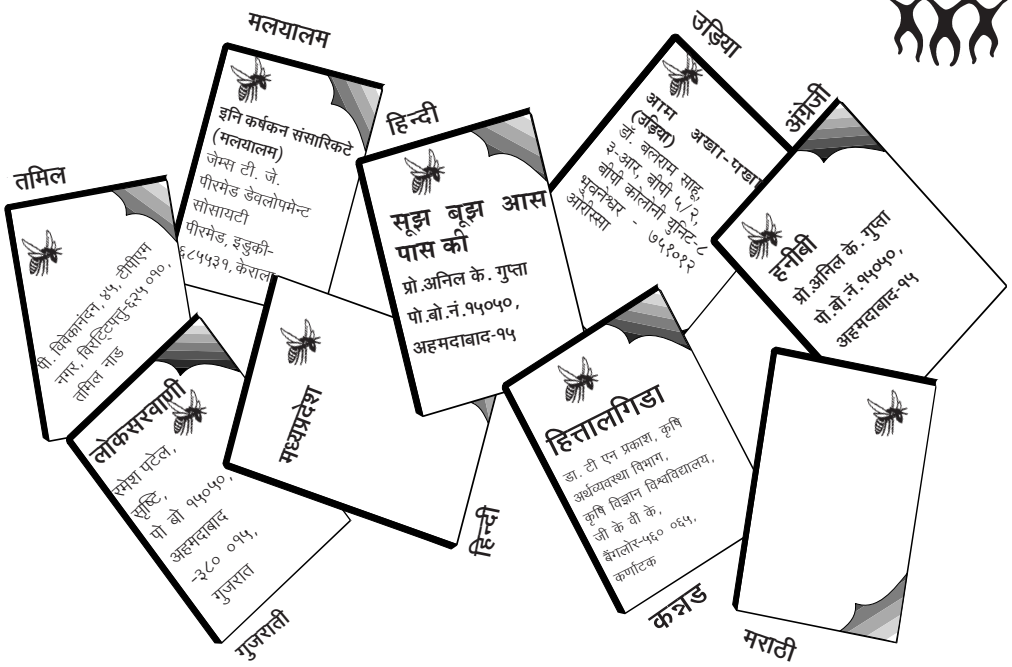

नमवाली वेलेन्माई (तमिल)
पी. विवेकानन्दन
४५, टी.पी.एम.नगर, विराट्टीपट्टू, मदुरै - ६२५०१०,
तमिलनाडु, vivekseva@dataone.in

हित्तलगिडा (कन्नड़)
डॉ. टी. एन. प्रकाश
कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि विश्वविद्यालय
जी.के.वी.के, बैंगलोर -६५, कर्नाटक
prakashtnk@yahoo.com

इनि कर्षकन संसारिकटे (मलयालम)
पीयरमेड़ डेवलपमेन्ट सोसायटी,
पीयरमेड़, इडूकी- ६८५५३१, केरल
pedes@peermade.com

पल्ले सृजन (तेलुगु)
ब्रिगेडियर पी. गणेशन वी.एस.एम (रिटायर्ड)
१०२, वायुपुरी, पो.सैनिकपुरी, सिकन्दराबाद,
आंध्रप्रदेश-५०००९४, ganeshpogula@hotmail.com

आमा अखा-पखा (उड़िया)
डॉ. बलराम साहू
३-आर, बी.पी. ५/२, बीपी कॉलोनी,
यूनिट-८, भुवनेश्वर - ७५१०१२ उड़ीसा
balaram_sahu@hotmail.com

लोकसरवाणी (गुजराती)
रमेश पटेल, सृष्टि, पो.बो.नं.१५०५०,
आंबावाड़ी, अहमदाबाद - ३८० ०१५
loksarvani@sristi.org

हनी बी (अंग्रेजी)
सूझ बूझ आस पास की (हिन्दी)
भारतीय प्रबंध संस्थान, वस्त्रापुर, अहमदाबाद- १५, honeybee@sristi.org, loksarvani@sristi.org

हनी बी नेटवर्क

सौजन्य

क्या आप शोधयात्रा में शामिल होंगे ?

ग्रामीण लोगों की स्थानीय सर्जनात्मकता को बाहर लाने के लिए और ज्ञान के संकलन, प्रचार-प्रसार के कार्य में सृष्टि संस्था अपने स्थापना वर्ष १९९३ से ही प्रयासरत है। स्थानीय सर्जनशील लोगों का उनके आंगन में सम्मान करने के लिये हमने शोध पदयात्रा शरू की।

दूरदराज के गांवों में बसने वाले किसानों व कारीगरों को अपने रोजमर्रा की जिन्दगी में पुरानी या नई तकनीक अपनाते वक्त बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए वे बहुत प्रयत्नशील रहते हैं। इन प्रयत्नों में सहभागी होने व उनके साथ चर्चा करने की फुरसत आज के वक्त में किसी को नहीं है। सृष्टि संस्था पहाड़ी, सूखे व मरुभूमि वाले क्षेत्रों के छोटे-छोटे गांवों व कस्बों में पदयात्रा का आयोजन करके, उनकी मुश्किलों व उनकी सूझबूझ का संकलन करने का कार्य कर रही है। साथ ही, समाज में सबल परम्पराओं के क्षरण या नाश को रोकने का भी प्रयास कर रही है।

सृष्टि ने वर्ष २००९ तक २३ शोधयात्राएँ आयोजित की हैं। भारत के अलग-अलग प्रांतों और अलग-अलग भाषा-बोलियों और दूरस्थ स्थानों तक पहुँच बनाते हुए सृष्टि ने इन यात्राओं के क्रम को टूटने नहीं दिया है। शोधयात्रा की यात्रा जारी है। इन यात्राओं में हमें गाँवों-कस्बों में अद्‌भुत प्रतिभाओं से मिलने का मौका मिला। शोधयात्रियों को इन यात्राओं में स्थानीय समुदायों की सूझबूझ और ज्ञान के अनेकानेक आयामों को जानने-समझने का अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हुआ। पिछले तीन साल में सृष्टि ने सौराष्ट्र में गीर से गढ़डा, उत्तर गुजरात में बालाराम और जैसोर अभ्यारण्य में अमीरगढ से टुंडिया, मध्य गुजरात में गोला गामडी से निघंट, कच्छ में नीलपर से नानी खाखर, साबरकांठा और राजस्थान की सीमा पर कसाणा से कोबा, महाराष्ट्र तथा दक्षिण गुजरात में मोहनदरी से धुलदा के बीच, सात शोधयात्राओं का आयोजन किया है। हम अभी तक लगभग १३०० कि.मी. पैदल चल तरह तरह की अद्‌भुत प्रतिभाओ से गाँवो में मिलें और उनसे नई.व पुरानी बाते सीखी। आगामी समय में सृष्टि सिर्फ गुजरात में ही नहीं बल्कि समस्त भारत के दूर दराज के गाँवों में जाकर स्थानीय ग्रामजनों की सूझ-बूझ को जानने, मानने और एकत्रित करने के लिये कटिबद्ध है।

सृष्टि के इस छोटे-से प्रयास में आप भी सहभागी हो सकते हैं - शोधयात्रा में सम्मिलित होकर तथा ज्यादा से ज्यादा अन्य लोगों को इस प्रयास में सम्मिलित करके।

सृष्टि

सृष्टि, AES बॉयज होस्टेल केम्पस में, युनिवर्सीटी लायब्रेरी के पास, नवरंगपुरा,
अहमदाबाद, फोन.नं. 079-27913293, 27912792
Email: honeybee@sristi.org, anilg@sristi.org, web:sristi.org,

प्रस्तावना

आज से २२ वर्ष पहले जब हनी बी नेटवर्क की शुरुआत हुई तब हमारा स्वप्न था कि हम एक ऐसे विश्व का सृजन करें जिसमें स्थानीय रचनात्मकता को पहचान पाने के लिये दर-दर न भटकना पड़े। हमारा उद्देश्य था कि बुनियादी नवसृजकों को गांव-गांव में ढूंढ़ना व उनकी सूझबूझ के आधार पर प्रयोग कर के उनके ज्ञान को समाज के कोने-कोने में पहुंचाना। प्रकृति व पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी ने हमें ऐसी सूझबूझ को ढूंढने के लिये प्रेरित किया जो प्रकृति प्रिय थी। नुकसानदायी रसायनों के उपयोग के बिना हानिकारक जंतु व रोगों को रोकने के उपाय, जमीन की उत्पादन क्षमता और प्राणी स्वास्थ्य के पोषण के लिए सक्षम तरीके, उर्जा बचानेवाले खेत उपयोगी साधनों का निर्माण करना, जमीन व जल संरक्षण के तरीके इत्यादि जैसे सूझबूझ से हरेभरे संशोधनों व नवसृजनों का संकलन व प्रसारण का कार्य हम करते हैं। इस के अलावा हम "सूझ बूझ आसपास की" नामक त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित करते हैं। जिसके हर अंक में हम पाठकों के लिए एक मुख-पृष्ठ कहानी भी प्रस्तुत करते हैं। यह कहानी हमारी मान्यताओं के अलग-अलग पहलुओं को भी प्रस्तुत करती है। निरंतरता को बनाये रखने की भावना समाज में आज भी मजबूत व प्रबल है और हमारी सोच व संवेदनशीलता का आधार है। तो फिर सवाल यह उठता है कि आज हमारे संसाधन क्यू ज्यादा से ज्यादा अनिरंतरता से उपयोग किये जाते हैं कि मानो 'कल' अब कभी होगा ही नहीं? ऐसा लगता है कि हमारे रोजमर्रा के निर्णयों में व्याप्त नैतिकता व हमें प्रकृति के साथ जोड़े रखनेवाली भावना के बीच की कड़ी निर्बल हो गई है या टूट गई है। प्रकृति के प्रति हमारी जवाबदेही इस बात पर निर्भर करती है कि हम कैसे बिल्कुल अनजान लोगों अथवा जीवों को देखते हैं। बिलकुल अनजान जीवों का मतलब है ऐसे जीव या जन जिनको न हम जानते हैं और न हीं जान सकते हैं। वास्तव में ऐसे बिलकुल अनजान लोग हैं। कौन? ये है ऐसी चिड़ियां, चीटीं तथा जन्य प्राणी जो हमसे सम्बन्धित तो हैं लेकिन हमें नहीं मालूम कि वे हमारे बारे में तथा हमारे उनके प्रति व्यवहार के बारे में क्या सोचते हैं? ऐसे भावी पीढ़ी जिसका अभी जन्म ही नहीं हुआ है, उनके विचारों के बारे में हम कैसे जान सकते हैं?

लेकिन ऐसे जन या जीवों के प्रति, जिन्हें हम नहीं जानते हैं और न जान सकते हैं, हमारी जिम्मेदारी हम कैसे पूरी करेंगें? जब हम प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह नहीं कर पाते तो हम कहीं न कहीं अपने प्रति भी अन्याय कर बैठते हैं। प्रश्न उठता है कि हम युवा विद्यार्थियों, शोधार्थी, नीति निर्माताओं और राजनैतिक नेताओं के मन में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का भाव कैसे पैदा करें।

बचपन से ही हमें कहानियां अच्छी लगती हैं। इसलिये नहीं कि केवल वो हमको कल्पना की दुनिया में पहुंचा देती हैं बल्कि इसलिये भी क्योंकि वो हमें धर्म निरपेक्षता और नैतिक पवित्रता के बीच, यर्थाथ व कल्पना के बीच और मौलिक व आत्मिक भावनाओं के बीच पहुंचा देती है।

कहानियां हमारे मन में द्वन्द पैदा करती हैं और कई बार अजीबोगरीब प्रश्न भी उठाती हैं उदाहरण के लिये हमारी एक मुख-पृष्ठ की कहानी में एक महिला, खेत में कुछ गिरे हुये दानों को उठाकर घर आ रही है। अकाल का समय है, फसल खराब हो चुकी है और चारों तरफ भुखमरी फैली है। रास्ते में उसे एक तोता मिलता है जो उसकी तरफ घूर-घूर कर देख रहा था। महिलाओं को किसी का घूरना कहां अच्छा लगता है। महिला उस तोते के पास जाती है और उससे पूछती है तुम मुझे क्यों घूर रहे हो? महिला ने एक लोकिट पहन रखा था जिसके हरे रंग का अगेट पत्थर

जड़ा हुआ था। तोता बोला, "ओह मैं समझा तुम्हारे हार में यह अनाज का दाना है मगर यह तो एक पत्थर है" महिला बोली, "इसका मतलब तुम भूखे हो"। महिला ने खेत में जो भी दाने पड़े थे उन्हें इकट्ठा करके ले आयी थी। महिला ने उसे घर आने को कहा ताकि वह भी खा सके।

लेकिन तोता उड़ गया। कनार्टक में हमने यह कहानी सुनी एक गीत के रुप में। कवि ने यह नहीं बताया कि तोता क्यों उड़ गया लेकिन हर पीढ़ी को यह प्रश्न तो उठाना पड़ेगा कि तोता क्यों उड़ा।

इस संदर्भ में एक और कहानी का उल्लेख शायद उपयुक्त होगा। यह कहानी हमने अमृतभाई से हाल ही में सम्पन्न एक शोधयात्रा में सुनी थी। अमृतभाई ने एक बैलगाड़ी के स्वरुप में आमूल परिवर्तन किया है ताकि देसी खाद को सीधा क्यारियों में डाला जा सके। उन्होंने ही पानी खींचने की घिर्री में भी परिवर्तन किया है, टिटोडी नाम की एक चिड़िया प्रायः जमीन पर अंडे देती है। कितनी ऊँचांई पर वो अंडे देती है, इससे किसान अंदाजा लगाते हैं कि इस वर्ष बारिश कितनी होगी।

यदि ज्यादा बारिश की उम्मीद होती है तो, टिटोडी अंडे ऊँचाई पर देती है। एक बार एक टिटोडी के जोड़े ने समुद्र के किनारे अंडे दिये यह सोच कर कि वह जगह सुरक्षित होगी। लेकिन समुन्द्र की लहरें यकायक टिटोडी के अंडो को बहा कर ले गई। टिटोडी बाकी जानवरों पक्षियों के पास गई और उसने अपने अंडों की चोरी के बारे में शिकायत की। सभी पक्षियों की पंचायत बुलाई गई और यह निर्णय किया कि सब मिल कर समुन्द्र में पत्थर फेकेंगे और समुन्द्र को टिटोडी के अंडे वापिस करने के लिए बाध्य करेंगे। सभी जानवरों ने कंकर उठाकर समुन्द्र की ओर हमला करने की नियत से बढ़ना शुरु किया। समुन्द्र को डर लगा और उसने टिटोडी के अंडे वापिस कर दिये। जरा अंदाजा लगाइये कि क्या हम प्रकृति के हमले का सामना कर पायेगें। यदि विभिन्न जीवों ने हमारे द्वारा पहुँचाने वाले नुकसान का बदला लेने का निर्णय लिया तो?

हनी बी या मधु मक्खी की उपमा हमने अपने लिये एक नूतन और अनूठा दर्शन अपनाने के लिये चुना। जिस प्रकार मधु मक्खी एक फूल को दूसरे फूल से परागीकरण के माध्यम से जोड़ती है, क्या हमें लोगों के ज्ञान, उनकी खोज व अन्वेषण को दूसरे लोगों तक नहीं पहुँचाना चाहिये। इस तरह के गठजोड़ को बनाने के लिये स्थानीय भाषा में सुगम लहजे में लोगों का ज्ञान व उसमें हुए संशोधन को उन तक पहुँचाना जरुरी है। साथ ही जिस प्रकार फूलों को शिकायत नहीं होती यदि उनका पराग लिया जाये, तो क्या हम यह सुनिश्चित नहीं कर सकते कि ज्ञान सम्पन्न लोगों का उनकी जानकारी लेने पर कोई एतराज न हो? उनको गुमनाम न रखा जाये, उनकी पहचान बननी चाहिये। यदि लोगों के ज्ञान में संशोधन करके या वैसे ही कोई भी नया उत्पाद पैदा होता है, तो उससे होने वाले फायदे का न्यायोचित हिस्सा ज्ञानप्रद लोगों को मिलना चाहिये।

इस भावना के साथ रचनात्मक लोगों को एक दूसरे से जोड़ने के लिये यह एक प्रयास है, हनी बी नेटवर्क या गठजोड़ का, आप भी इससे जुड़ये और इस दर्शन को आगे बढ़ाइये। आप हमे लिखेंगे?

(अनिल के. गुप्ता)

अनुक्रमणिका

१. प्रकृति के संग: जीती धनवर ने सफल खेती की जंग १
२. हम हैं प्रभात की पुकार, हम हैं सूर्य के पहरेदार ३
३. जमीन के बदले जीवन की बाजी- आरुणी ६
४. वहनीय विकास: सूक्ष्म और समग्र दृष्टि का संयोजन ८
५. कैसी है अकाल की वेदना: पशु, मानव और प्रकृति सबको है जीवित रखना १०
६. पुरुषार्थ का आयोजन : निरन्तर विकास का नया स्वरूप १२
७. चींटी ने क्यों काटा : कौतुक कुदरत का १४
८. निष्फल होने का निर्णय : आखिर क्यों? १६
९. छोटा आकार : बड़ा विचार १८
१०. अकाल में बीज की चिंता : मूक निगाहे, अनिश्चित दिशायें २०
११ आपत्ति की सूचना हम कब सीखेंगे २२
१२. जैव विविधता और स्थानीय ज्ञान : भूलती हुई परम्परायें २४
१३. ज्ञान बड़ा या बुद्धि २६
१४. रसहीन धरा हुई, दयाहीन राजा हुआ २८
१५. जैसे हो, वैसे ही भले - टूटे घड़े की कहानी ३०
१६. गेहूं के दाने में छिपा विश्व! ३२
१७. तोता आखिर क्यों उड़ा? ३५
१८. एक बेल को भी है, जीने का अधिकार ३७
१९. चावल ही क्यों, गेहूं क्यों नहीं? ३९
२०. असली मूर्तिकार कौन ? ४१
२१. क्या गाय को न्याय मिला? ४३
२२. सुन्दरता क्या है? ४५
२३. नर या मादा? ४७

२४. घंटी किसने बजाई? ४९
२५. आंवला किसने खाया? ५१
२६. ढाई किलो दाने क्यों? ५३
२७. जाल क्यों टूटा? ५५
२८. ऐसी क्या कसौटी थी? ५७
२९. यह कैसा सौदा? ५९
३०. ज़िन्दगी का मकड़जाल ६१
३१. दादी मां की कहानी : काम के बदले धान ६३
३२. हम जहां हैं, पर क्यों है वहां ? ६५
३३. क्या अधिक ज्ञान, कम ज्ञान से हमेंशा अच्छा होता है!! ६७
३४. जब बोझ बने बाधा : दाना छोड़िये, बुद्धि का सहारा लीजिये ६९
३५. दृश्य के पार ७१
३६. अनथक अन्वेषण ७३
३७. वेदना क्यूं हुई विविधता में ? ७५
३८. अज्ञात का भय ७७
३९. केवल अपने लिए ? ७९
४०. उत्तम होगी पहचान, अगर खुले रहें आँख-कान ८१
४१. सृजनात्मकता के पथ की मुश्किलें ८३
४२. हवा का शिष्टाचार ८५
४३. क्या छोटी-छोटी पहल होती है स्थिर और सबल! ८७
४४.बच्चों से भी सीख सकते है हम ९०
४५. कहाँ गई वो बूंद ९३
४६. एक अनगढ़ी मूर्ति की अपूर्ण कहानी ९५
४७. क्या खोजा, क्या पाया? ९७
४८. मुझे क्यों होती है परेशानी? १००
४९. आप साइकिल की सवारी क्यों करते हैं? १०२

प्रकृति के संग : जीती धनवर ने सफल खेती की जंग

एक जंगल में धनवर शिकारी, उसका परिवार और पालतू कौवा एक साथ रहते थे। वह शिकार के साथ-साथ खेती करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था।

रोज़ की दिनचर्या शुरू होते ही कौवा भोजन की तलाश में दूर-दूर तक जाता था। खा-पीकर वह जिस नीम के पेड़ पर बैठता था, उसके सामने ही सृष्टि के सर्जक ब्रह्मा का दरबार लगता था। इस दरबार में होने वाली बातों को कौवा ध्यान से सुनता था। शाम को घर वापस आने के बाद वह ब्रह्मा के दरबार की हर बात अपने मालिक को बताता था, जिसे वह रसपूर्वक सुनता था। एक दिन ब्रह्मा अपने मन्त्रियों को वर्षा के बारे में बता रहे थे कि इस वर्ष केवल पर्वतीय विस्तारों में ही वर्षा होगी, बाकी सभी जगहों पर अकाल पड़ेगा। यह बात कौवे को अत्यन्त महत्वपूर्ण लगी उसने धनवर को सलाह दी कि **इस वर्ष तुम**

पर्वतीय विस्तार में बुवाई करना। धनवर ने कौवे की बात मान कर पर्वतीय विस्तार में फसल बोई। पर्वतों में वर्षा होने के कारण इस वर्ष उनका खेत हरा-भरा रहा जबकि दूसरे किसानों की फसल सूख गयी।

इस दौरान ब्रह्मा को खबर मिली कि पर्वतीय विस्तार के एक खेत में बहुत अच्छी फसल हुई है। अगले वर्ष कौवा आतुरतापूर्वक राह देखता रहा कि आने वाला वक्त कैसा होगा? ब्रह्मा के दरबार में फिर घोषणा हुई - **इस वर्ष सूखा पड़ेगा और उस समय जन्तु तथा कीट फसल का नाश करेंगे।** इस बात को कौवे ने ध्यान से सुना। उसने मालिक से कहा कि इस वर्ष कीट खेत पर हमला करेंगे, इसलिये मैना जैसे परभक्षियों को बुलाओ। धनवर ने परभक्षियों की मदद से फसल की रक्षा की। पहले की तरह ब्रह्मा को खबर मिली कि धनवर के खेत में कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। यह जानकर ब्रह्मा आश्चर्य में पड़ गये कि एक व्यक्ति के यहां क्यों फसल को कोई नुकसान नहीं हुआ है।

उसके अगले वर्ष ब्रह्माजी ने घोषणा करते हुए कहा कि इस वर्ष चूहों के कारण सम्पूर्ण फसल नष्ट होगी। उसी अनुसार कौवे ने सलाह दी कि ब्रह्मा जी ने खेतों को नष्ट करने के लिये चूहे भेजे हैं, अतः ऐसी बिल्लियों को तैयार रखना जो चूहे खा जायें और फसल की रक्षा हो पाए। धनवर ने ऐसा ही किया और उसकी फसल बच गयी। ब्रह्मा जी चकित रह गये। उन्होंने घोषणा की कि जो किसान फसल में से उचित समय पर दाने नहीं निकालेंगे वे अपनी पूरी फसल गँवा देंगे। कौवे के कहने पर धनवर ने समय रहते अनाज़ में से दाने निकाल कर अपनी फसल को बचा लिया।

इस प्रकार प्राकृतिक उपायों की जानकारी की वजह से धनवर प्रतिवर्ष अपनी फसलों की रक्षा कर सका। जो लोग प्रकृति के संसर्ग में रहकर खेती की मुश्किलों का हल ढूँढ़ते हैं उनमें प्रकृति की भाषा समझने की योग्यता अपने आप आ जाती है। प्रकृति की वाणी समझकर, प्रकृति की रक्षा करते हुए कार्य करने से, प्रकृति स्वयं ही समस्या हल करने में सहायता करती है।

हम हैं प्रभात की पुकार, हम हैं सूर्य के पहरेदार

सर्जनहार ने सृष्टि की रचना की। यह तब की बात है जब रोज़ सुबह सूरज उगता, दोपहर तपती और शाम ढलती थी। रात होने पर सम्पूर्ण सृष्टि में शीतल अंधकार छा जाता, परन्तु पृथ्वी पर रहने वाले जीवों को यह तपता सूर्य असहनीय लगता था। एक दिन पृथ्वी पर समस्त जीवों ने एकजुट होकर सूर्यदेव से प्रार्थना की। आप पृथ्वी पर आना बंद करेंगे तो हमारी अनेकों समस्याएँ हल हो जायेंगी और पृथ्वी स्वर्ग बन जायेगी। ऐसा सुनकर सूर्यदेव रूठ गये। दूसरे दिन से ही सूर्य ने पृथ्वी पर आना बंद कर दिया।

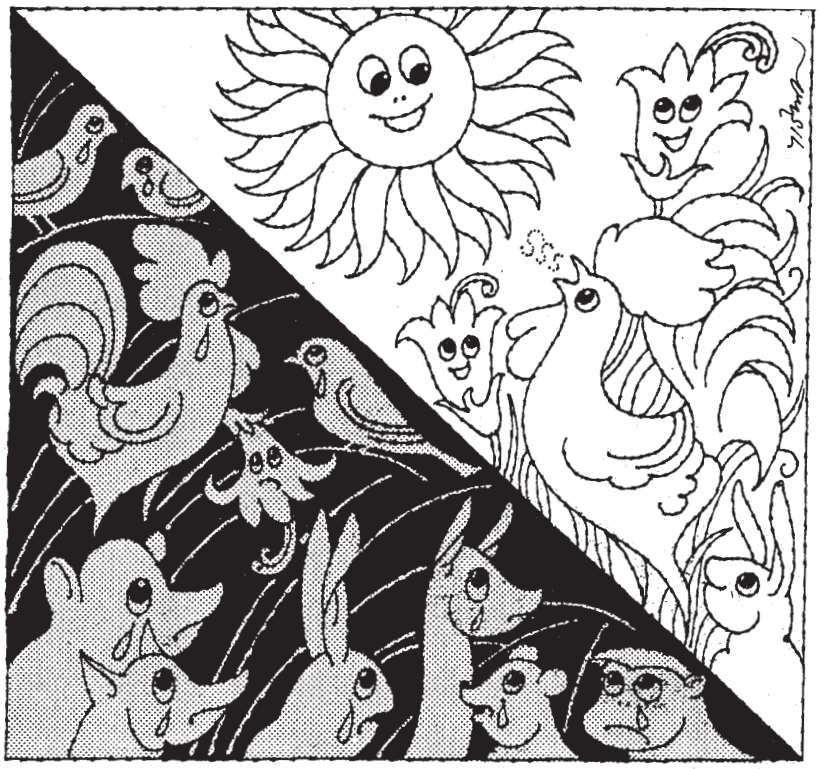

पृथ्वी पर समस्त जीव खुशी से नाच उठे। अब मजा ही मजा है। बहुत से लोग तो खूब सोये और प्रसन्न हुए। लेकिन दो-तीन दिन के बाद अंधेरे से सब जीव परेशान हो गये। उसके बाद तो लोग अत्यंत ठंड और अन्न की कमी से एक-एक करके मरने लगे। अब उन्हें सूर्य भगवान की महत्ता समझ में आयी। सभी जीवों ने फटाफट इकट्ठा होकर एक प्रतिनिधि मंडल बनाया और सूर्यदेव को प्रसन्न करने का प्रयास किया, लेकिन लाख बार आग्रह करने पर भी कठोर मन के सूर्यदेव प्रसन्न नहीं हुए।

पृथ्वी पर निराशा छा गयी। प्राणी, पक्षी, जलचर और मनुष्य सभी चिन्ता में डूब गये। सब विचार करने लगे कि अब क्या होगा? तभी मुर्गा आगे आया और उसने चिंतित प्रजा से निवेदन किया - मित्रो, यदि आप लोगों को आपत्ति न हो तो मैं सूर्यदेव को मनाने जाऊँ? सब लोग उसकी इस बात पर खूब हंसे। परंतु बाद में सभी ने विचार किया, "जाता है तो जाने दो, लग गया तो तीर, नहीं तो तुक्का।" इस बात पर सब सहमत हो गये।

मुर्गा सूर्यदेव के घर गया और नमन करके बोला, "हे तेजस्वी देव, आप तो सृष्टि के सर्जक द्वारा निर्मित अद्वितीय वरदान हो, शक्ति का स्रोत हो, इस दुनिया में आप का कोई विकल्प नहीं। हम सभी पृथ्वीवासी अज्ञानी हैं। आप जानते हैं कि हम अपना हित-अहित परखने में अक्षम हैं। ऐसा होने पर भी हम अज्ञानियों को अंधकार में रखकर कष्ट देना आप जैसे परमार्थी देव को शोभा नहीं देता। मै समग्र सृष्टिवासियों की ओर से क्षमा मांगता हूँ और पृथ्वी पर वापस आने की विनती करता हूँ।" मुर्गे ने आग्रह करते हुए फिर कहा, "हे देव, मेरे नासमझ मित्रों की अज्ञानता भरी वाणी की वजह से आपने जो हठ लिया है उसके कारण मेरे जैसे निम्न जीवों के अनेक समुदाय नष्ट हो जायेंगे।"

यह सुनकर सूर्यदेव थोड़ा नरम हुए। यह देखकर मुर्गे में थोड़ी हिम्मत आयी और वह बोला - अपने मूर्ख मित्रों की तरफ से क्षमा चाहता हूँ, सृष्टि पर अब आपकी कभी भी निन्दा नहीं होगी। इतना ही नहीं, मैं प्रतिदिन प्रातःकाल एवं संध्याकाल में आपके आगमन और विदाई की घोषणा करके आप का महत्व समग्र सृष्टि को समझाऊँगा। प्रतिदिन ओस की बूँदें जमीन पर बिछकर आपकी किरणों को नमन करेंगी और सुगंधित फूल खिलकर आपका स्वागत करेंगे।

सूर्यदेव के चहरे पर मुस्कान देखकर मुर्गा प्रसन्नचित्त पृथ्वी पर आया और जोर से बांग दी - कुकड़ू-कूं। तुरन्त ही तेज दौड़ते घोड़ों पर सूर्यदेव की सवारी आयी। एक लम्बे कालक्रम के बाद पृथ्वी ने प्रातः काल की पहली किरण देखी और सब खुशी से झूम उठे। तब से मुर्गा सुबह-शाम सूर्य के आगमन तथा विदाई की घोषणा करने का नियम पालन कर रहा है।

मानवमात्र का यह स्वभाव है कि बिना कष्ट उठाये मिली वस्तु का मूल्य हमारे मन में नहीं के बराबर होता है। इसलिए हम उसका दुरुपयोग करते हैं। जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, तब से आज तक पानी का स्तर नीचा ही हुआ है। लेकिन पिछले १८ साल में इसकी मात्रा हद से ज्यादा कम हो गयी है। इतना ही नहीं जमीन में संग्रहित अमूल्य पानी का दोहन करने के लिए आजकल सरकार सब्सिडी यानि आर्थिक छूट देती है।

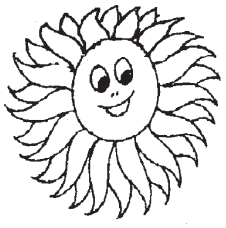

हमारी अमूल्य कुदरती सम्पत्ति की धरोहर का मूल्य बताने वाली यह कहानी नागालैंड की लोक कथाओं से ली गई है।

जमीन के बदले जीवन की बाजी - आरुणी

ऋषि का बेटा आरुणी, ऋषि परम्परा के अनुसार, धौम्य ऋषि के आश्रम में रहकर विद्याभ्यास के साथ-साथ खेती और पशुपालन की देखरेख की जिम्मेदारी संभालता था। आश्रम की जमीन ढाल वाली होने के कारण वर्षा के समय जमीन की ऊपरी सतह भी धुलकर बह जाती थी। इसको रोकने के लिए आश्रम के सभी शिष्यों ने मिलकर मेंड़ बनाई।

वर्षा के दिनों में एक दिन मूसलधार बारिश हुई। अचानक ही गुरू जी के मन में शिष्यों द्वारा बनायी गयी मेंड़ का खयाल आया। तुरन्त गुरू

जी ने कहा - आरुणी, खेत में मेंड़ को देखकर आओ कि कहीं कट या टूट तो नहीं गयी है। आरुणी ने खेत में जाकर देखा तो मेंड़ टूट गयी थी तथा पानी जोरों से बह रहा था। आरुणी बारिश की परवाह किये बिना गीली मिट्टी से मेंड़ बनाने लगा, परन्तु पानी के वेग के कारण मिट्टी बह जाती थी। अन्त में आरुणी ने सोचा कि मैं यहीं लेट जाता हूँ। लेटने पर पानी के साथ मिट्टी उसके शरीर से चिपक कर रुकने लगी। थोड़ी देर बाद बारिश भी बन्द हो गयी। मगर तीव्र ठंड के कारण जकड़ा हुआ आरुणी उठ नहीं सका। आरुणी जब शाम तक आश्रम नहीं लौटा तो चिन्तातुर धौम्य ऋषि और शिष्य उसे ढूंढते-ढूंढते हुए खेत में पहुंचे। धौम्य ऋषि ने खेत में जोर से आवाज़ लगायी : आरुणी, आरुणी, तुम कहां हो? मैं यहां हूं, गुरूदेव। बहुत धीमी तथा कराहती हुई आवाज़ में आरुणी ने कहा।

गुरूदेव आवाज़ की दिशा में आगे बढ़े। वहां जाकर देखा तो टूटी हुई मेंड़ की जगह पर आरुणी बेहोश हालत में पड़ा है। धौम्य ऋषि ने आरुणी को गले से लगाया और कहा : शाबाश, बेटे! आज तुमने अपनी जिन्दगी की परवाह किये बिना जमीन का क्षरण या कटाव रोका है।

आज सर्वत्र जमीन और जंगल का निरन्तर दोहन हो रहा है तब उसे रोकने के लिये हममें से कितने लोग चिंतित हैं? हमारी प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण के लिए जगह-जगह पर आरुणी जैसे लोगों की जरुरत है। तब ही तो प्रकृति के पास से सब कुछ लेने के स्वार्थ के साथ जीने वाले मानव का अस्तित्व सुरक्षित रह पायेगा। हमारा स्वार्थ ही हमें अंधकारमय भविष्य की तरफ ले जा रहा है।

वहनीय विकास : सूक्ष्म और समग्र दृष्टि का संयोजन

प्राचीन समय में गुरू द्रोणाचार्य शस्त्र विद्या में कुशल थे। सुदूर वन में उनकी आश्रमशाला थी। जिसमें वे राजकुमारों को शिक्षा के साथ-साथ जीवन में स्वावलंबी होने की शिक्षा देते थे। गुरू द्रोणाचार्य के पास ही पांडवों और कौरवों ने शस्त्रविद्या सीखी। उनमें से पाचों पांडव उनके प्रिय विद्यार्थी थे।

एक दिन गुरू जी को उनकी परीक्षा लेने की इच्छा हुई। उन्होंने मैदान में दूर एक पेड़ के ऊपर सफेद रंग का एक बनावटी पक्षी रखा और लाल रंग के पत्थर से उसकी आंख बनायी। आचार्य ने राजकुमारों से

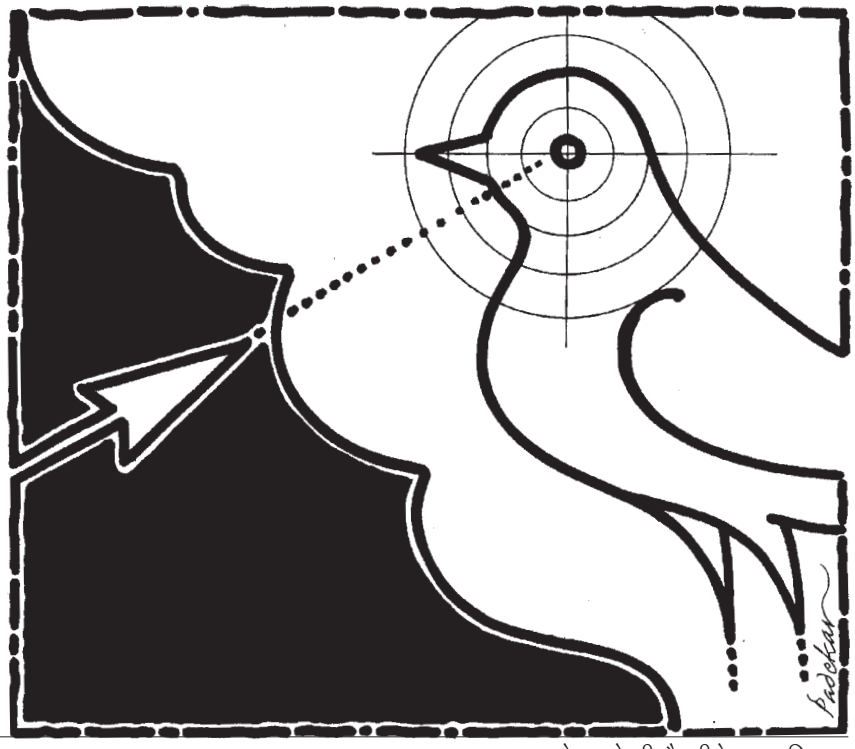

कहा कि दूर के उस वृक्ष पर मैंने जो पक्षी रखा है उसकी आंख तुम लोगों को बींधनी है। फिर उन्होंने एक-एक करके सभी शिष्यों को बुलाया और पूछा, तुम्हें क्या दिखता है। युधिष्ठिर ने कहा : मुझे समस्त आकाश दिखायी देता है और पेड़, पेड़ के पत्ते दिखायी देते हैं, पेड़ पर पक्षी भी दिखायी देता है। उसके बाद दुर्योधन की बारी आयी। दुर्योधन ने कहा : मुझे मेरे भाई दिखायी देते हैं, आप दिखायी देते हो, नीला आकाश और पेड़ दिखायी देते हैं, पक्षी का शरीर दिखायी देता है। बाकी राजकुमारों ने भी इसी तरह के उत्तर दिये। वह किसी के उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए। अन्त में उन्होंने अर्जुन से पूछा। अर्जुन ने कहा, गुरूदेव, मुझे केवल पक्षी की आँख दिखायी देती है। द्रोणाचार्य बोले - तो पुत्र, उसे ही लक्ष्य बनाओ। गुरूदेव के इतना कहते ही अर्जुन का बाण पूरे वेग से पक्षी की आंखों के आरपार हो गया।

प्रसन्नता से द्रोणाचार्य बोल उठे - शाबाश, तुम ही मेरे सच्चे शिष्य हो। भविष्य में अर्जुन को बाण विद्या में श्रेष्ठतम पद हासिल हुआ।

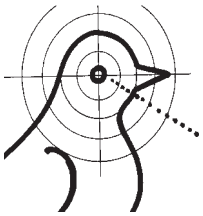

केवल पक्षी की आंख ही देखना, यह अति विशिष्ट और सूक्ष्म दृष्टि है। समस्त विश्व को देखना और पक्षी की आंख को देखना दोनों के हेतु अलग-अलग हैं। फिर भी दोनों का महत्व है। दोनों में से किसी एक को नजरअन्दाज करना प्रकृति व जीवजगत के अस्तित्व के लिए नुकसानदेह हो सकता है। किसी भी स्थिति को गहनता से समझना हो तो उसे छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित करके देखना जरुरी है, साथ ही दूसरी ओर उनमें आन्तरिक संबंधों को समझना भी उतना ही जरुरी है। समस्त सृष्टि को टिकाये रखने के लिये अर्जुन जैसी अति सूक्ष्म तथा युधिष्ठिर जैसी विश्वव्यापी दृष्टि हम सब में होने की आवश्यकता है।

कैसी है अकाल की वेदना : पशु, मानव और प्रकृति सबको है जीवित रखना

गुजरात के सुरपुरा गांव के जीवाभा नामक चारण जाति का एक किसान आकाश की ओर नजरें बिछाए बैठा था। एक महीना पहले अचानक आंधी व बरसात साथ में आई और धरती तृप्त हुई। किसानों के दिल को थोड़ा चैन मिला । दो सालों के अकाल व सूखे के बाद किसानों को आशा बंध गयी।

जीवाभा ने अपनी पगड़ी के छोर में बांधे दाने भी खेत में बिखेर दिये। कुछ दिन में ही खेत ने हरी चुनरी जैसी ओढ़ ली। एक दिन बारिश दिखी, किंतु उसके बाद दिखी ही नहीं। उगे हुए पौधों के पत्ते मुरझाने शुरू हो गये। पिछले साल जो अकाल हुआ था, तब किसानों ने अपने कलेजे पर पत्थर रखकर दिन गुजारे थे, ऊपर से इस साल भी बिना

बारिश के दिन देखकर अन्दर ही अन्दर किसान दुःखी होते थे, कहीं घास भी नहीं दिख रही थी। एक तो कम बारिश और मवेशियों का गांव होने की वजह से थोडी बहुत घास सब पशुओं ने खा ली थी। अपने पेट पर पट्टी बांध कर किसान बहुत दूर से घास उठा कर लेकर आ रहे थे। जीवाभा के दोनों बैल रंभा-रंभा कर उससे मिन्नत कर रहे कि अब रहा नहीं जाता, अब तो कुछ खाने के लिये दो। उनकी इस वेदना से जीवाभा की आत्मा तड़प उठी - हे प्रभु, ऐसे मूक जानवर के साथ भी इतनी यातना? बहुत दूर से सिर पर लायी घास की गठरी भी खत्म हो गयी थी। किसान ने सोचा - मुझे लगता था इतनी घास जब तक तुम खाओगे तो तब तक बारिश आ ही जायेगी लेकिन नहीं आयी। एक आम किसान के हाथ में कितने पैसे होते हैं? सब बचे-खुचे पैसे खत्म हो चुके हैं। मैं तो कुछ न कुछ कर लूंगा मगर तुम लोगों का क्या करें। किसान बैल के सामने अपनी उलझन बता रहा था। उसने दोनों बैलों की बबूल के पेड़ से बंधी रस्सी खोल दी। बैलों को उसने बाजरे के खेत में छोड़ दिया। इसके एक-एक पौधे को हमने जान से ज्यादा संभाल कर रखा था। खा लो मेरे बच्चो, हमारा तो जो होना होगा, सो होगा। भूख के मारे बैल बाजरे के खेत पर टूट पड़े। यह देखकर जीवाभा को तृप्ति हो रही थी, इस तरह सूखे पेड़ के नीचे जाकर वह बैठ गया। सामने से उसकी पत्नी सिर पर खाना लेकर आ रही थी। उसने आवाज लगायी देखो-देखो बैल छूट गये लगते हैं, उनको बांधो नहीं तो खेत में कुछ बाकी नहीं रहेगा। ऐसा बोलते ही वह बैल को बांधने के लिये दौड़ी। यह देखकर जीवाभा भी दौड़ा और बोला - कुछ मत करना, बैल दो दिन से भूखे हैं। मैंने बहुत सोच कर उन्हें खेत में खुला छोड़ा है, रस्सी बांधना मत। कुदरत के भीषण अकाल के वक्त यह विरल दृश्य देखकर सूर्य दादा हंस पड़े। जीवात्मा के मन में क्या मंथन हुआ होगा?

हमारे हिसाब से फसल उगाने में बैल का योगदान बहुत बड़ा है। बारिश नहीं हो तो फसल बिलकुल न हो, तो इसके बदले में बैल की भूख मिटे, इसमें बुरा क्या है? कुदरत रूठी है तो फसल भी नहीं होगी। इससे अच्छा यह ही है कि जानवर खा ले? अगले साल फिर से खेती होगी, मगर बैल होंगे तो फिर से कमा लेंगे। हमें जिन्दा रखने वाले जानवर ही अकाल में मर गये तो हम किसके सहारे जीवन निर्वाह करेंगे। जानवर हमारा इतना काम करते हैं तो क्या उन्हें जिन्दा रहने का अधिकार नहीं है? क्या उनको जिन्दा रखने का हमारा फर्ज नहीं बनता?

पुरुषार्थ का आयोजन : निरन्तर विकास का नया स्वरूप

एक आदिवासी जाति तालाब के किनारे रह कर शिकार करके जीवन चलाती थी। इस तालाब के किनारे रोज़ शाम को जंगली प्राणी पानी पीने आते थे। पशु पानी पीने आये तब उनका शिकार करना आदिवासी लोगों के लिये शिकार करने का आसान तरीका था। परन्तु हर रोज़ इस तरह शिकार करेंगे तो यह संभावना थी कि पशु समझ जाये कि यहाँ जान जोखिम में पड़ सकती है और वह यहाँ फिर पानी पीने ही न आये या कहीं दूसरी जगह चले जाये। यदि ऐसा हो गयो तो आदिवासी लोगों को शिकार करने के लिये बहुत-बहुत दूर जाना

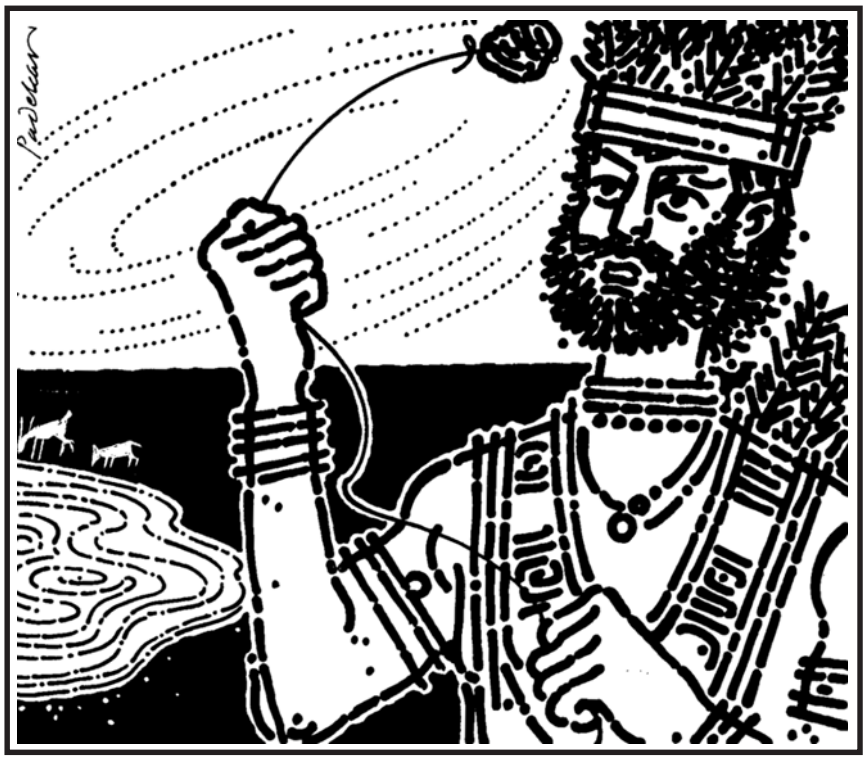

पड़ सकता है। इस कारण खुद का स्थान बदलना पड़े ऐसी सम्भावना भी थी। आदिवासी लोगों ने इस समस्या का समाधान कैसे ढूंढ़ा ? पशुओं को अपनी जान के खतरे का ख्याल नहीं आये और ज़्यादा शिकार के कारण उनका सर्वनाश भी न हो, इसके लिए एक विशेष युक्ति उन्होंने अपनायी। आदिवासियों के प्रमुख नेता ने निश्चित दिन, निश्चित दिशा में शिकार करने जाने का नियम बनाया। आदिवासी लोग पत्थर बंधी हुई एक डोरी को गोल-गोल घुमा कर छोड़े देते थे। जिस दिशा में पत्थर गिरता था उस दिशा में शिकार करने को वे जाते थे।

इस नियम का सार यह है कि जिस दिन पत्थर तालाब की दिशा में पड़े, उस दिन पूरा शिकार करने को मिलता। कभी उन्हें पूरा शिकार करने का मौका मिलता था तो कभी बिलकुल शिकार नहीं करने का। पशु हमेशा तालाब में पानी पीने को आते हैं, यह ज्ञान आदिवासियों लोगों को था। लेकिन उन्होंने नियम इसलिए बनाया कि कहीं जीवों को विनाश न हो जाए। खुराक की अनिश्चितता न पैदा हो जाये। मर्म यह है कि निश्चित ज्ञान (कब पशु पानी पीने आते है) को अनिश्चित अवस्था में बदल कर (कब, पत्थर किस दिशा में गिरता है) पशुओं को पानी पीने का स्थान बदलने की जरुरत नहीं पड़ती और ना ही आदिवासियों को दूरगामी अनिश्चितता का सामना करना पड़ता। जिस दिन उन्हें शिकार नहीं मिलता उस दिन वे भूख बांट लेते थे।

जोखिम की समस्या का अनिश्चय में परिवर्तन कैसे किया जाये यह इस कहानी में बताया है। सोने के अन्डे देने वाली मुर्गी को एक ही दिन में ज्यादे अन्डे लेने के लालच में मार डालने की बजाय स्रोत का योजनाबद्ध प्रयोग कैसे किया जाये, वह इस कहानी से सीखने को मिलता है। जियो तथा जीने दो सिद्धान्त को जीवन में चरितार्थ करने की बात से निरन्तर विकास के नये स्वरूप की झांकी इसमें है।

चींटी ने क्यों काटा : कौतुक कुदरत का

एक राजा के सात पुत्र तथा एक पुत्री थी। एक दिन सब नदी पर मछली पकड़ने गये। हरेक राजकुमार ने एक-एक मछली पकड़ी और राजकुमारी ने उन्हें धूप में सूखने के लिये रखा। उन्हें सुखाने के लिए छोड़ कर वे सब महल में लौट गये।

दूसरे दिन राजकुमारी ने जाकर देखा तो एक मछली के अलावा बाकी सभी मछलियां सूख गयी थी। राजकुमारी को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने भीगी मछली से पूछा - बाकी सभी मछलियां तो सूख

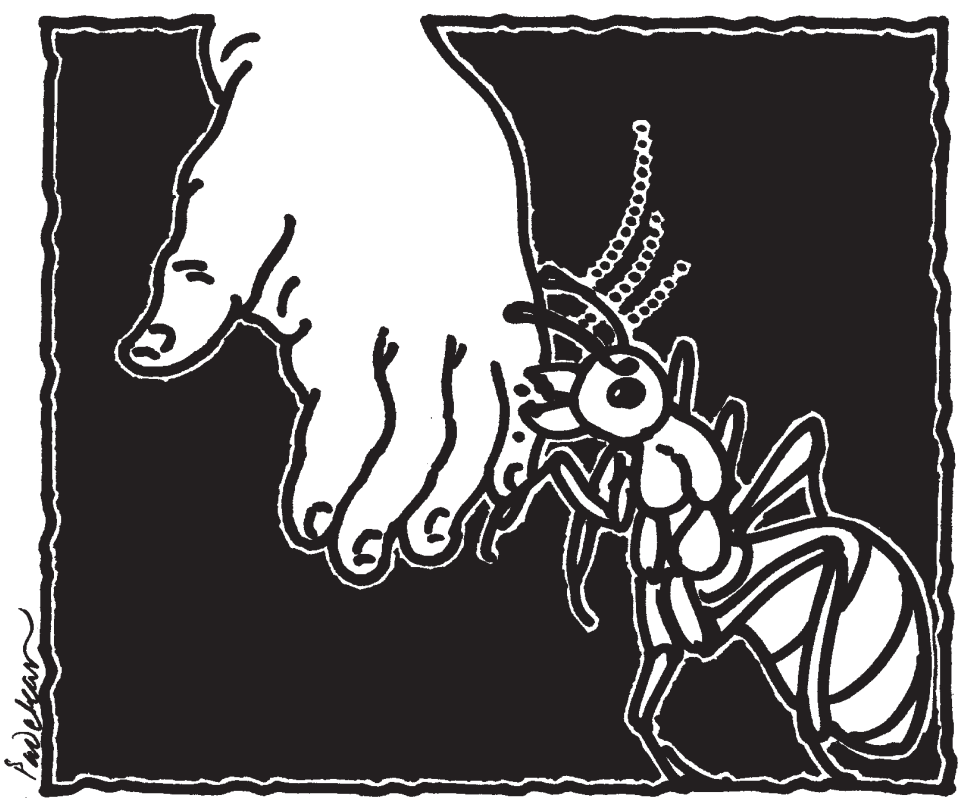

गयी, तुम क्यों भीगी रह गयी? मछली ने कहा कि इस गंजी ने मुझ पर सूर्य का प्रकाश नहीं पड़ने दिया इस लिये मैं भीगी रह गयी तो राजकुमारी ने गंजी से पूछा - तुमने सूर्य प्रकाश क्यों रोका? गंजी ने जवाब दिया - गाय ने घास नहीं खायी, इस लिए मैं ऐसे ही पड़ा रहा।

तब राजकुमारी गाय के पास पहुंची और पूछा - तुमने घास क्यों नहीं खायी। गाय ने जवाब दिया कि मेरे मालिक ने मेरे बछड़े को दूध पीने के लिये नहीं छोड़ा इस लिये मैंने घास नहीं खायी। राजकुमारी को सन्तोष नहीं हुआ उसने गोपालक से पूछा कि तुमने बछड़े को क्यों नहीं छोड़ा? उसने अपनी पत्नी की तरफ इशारा किया और कहा - उसने मुझे समय पर भोजन नहीं दिया तो इस क्रोध से मैं बछड़े को खोलना भूल गया। राजकुमारी ने गृहिणी से बात की और खोज जारी रखी।

गृहिणी भयभीत थी, राजकुमारी ने उससे पूछा, तुमने भोजन तैयार क्यों नहीं किया? उसने डरते-डरते जवाब दिया - मेरा बेटा न जाने क्यों सुबह से रो रहा था, उसे चुप कराने के लिये मैं रुक गयी थी, इस लिये रसोई बनानी रह गयी। राजकुमारी ने बालक से पूछा क्यों रोते थे ? उसने जवाब दिया, मेरी उंगली में चींटी ने काट लिया इस लिये मुझे रोना आया। तब राजकुमारी ने चींटी से पूछा कि तुमने बच्चे की उंगली में क्यों काटा तो उसने जवाब दिया, मैं क्यों न काटूँ, बच्चा अगर मेरे बिल में हाथ डालेगा तो मैं काटूँगी ही ना।

प्रस्तुत कहानी आंध्रप्रदेश की बालवार्ता है। यहां के बुजुर्ग अपने पोतों तथा पोतियों को ये कहानी कहते हैं और जवाब मांगते हैं। कुदरती तत्वों के पारस्परिक सम्बन्ध की तरफ बच्चों का ध्यान खींचने के लिये दादा दादी यह कहानी अपने बच्चों को कहते होंगे। सिर्फ एक जगह पर श्रृंखला टूटने से कुदरत का समग्र चक्र टूट जाता है। क्या यह समग्र दृष्टि हम पा सकेंगे। यह कहानी श्री गंगाधर के सौजन्य से प्राप्त हुई।

निष्फल होने का निर्णय : आखिर क्यों?

अति श्रीमंत, महत्वाकांक्षी, बेझिझक इन्सान की यह बात है। उसके पास सुख सुविधा के सभी साधन तथा ढेर सारी सम्पत्ति थी। ढेर सारी सम्पत्ति होने पर भी उसे सन्तोष नहीं था। उसको निरन्तर चिन्ता रहती थी कि हमेशा मेरा नसीब मुझे साथ देगा या नहीं इस लिये और ज्यादा धन वह पाना चाहता था। वह मानता था कि बुरे वक्त में उसके पैसे ही काम आयेंगे, कल का किस को पता। धार्मिक भाव वाले इस इन्सान ने सम्पत्ति अधिक पाने के लिये भगवान का तप किया, शहर की बस्ती से दूर नदी किनारे उसने तप करना शुरू किया।

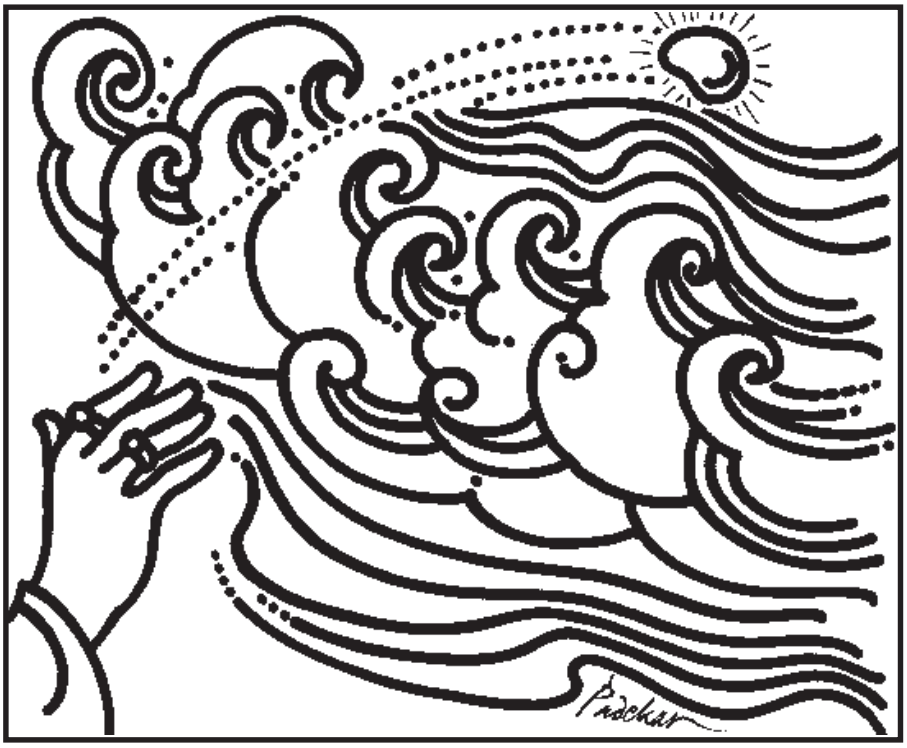

दिन पर दिन बीत गये, मगर तप जारी रखा। एक दिन एक साधु ने वहाँ से गुजरते हुए उसे देखा तो उसकी एकाग्रता देखकर प्रभावित हुए। एक वक्त का हृष्ट-पुष्ट इन्सान अति धनवान होने पर भूख के कारण गरीब दिख रहा था। साधु ने सोचा, यह पता किया जाये कि इसका तप करने का हेतु क्या है? जब साधु को पता लगा कि यह इन्सान अपनी सम्पत्ति को बढ़ाने के इरादे से तप कर रहा है, तब वह हँसने लगा। उन्होंने तप करने वाले को कहा कि मेरे पास ऐसी शक्ति है जिससे तुम अधिक धनवान बन सकते हो। वह इन्सान खुश हो गया।

मुझे ऐसा उपाय बतायें जिससे मैं किसी भी धातु को स्वर्ण बना सकूं। साधु धीरे से हँसकर बोले - तथास्तु, सामने पड़े हुए पत्थरो में से एक पत्थर ऐसा है, जो लोहे को स्वर्ण बना सकता है। धनवान आदमी को लगा कि मेरा अब नसीब खुलने ही वाला है।

साधु का उपकार मानकर वह जादुई पत्थर की खोज में लग गया। लोहे का एक टुकड़ा लेकर हर पत्थर से छुआता रहा। लोहे का स्वर्ण न होने पर वह पत्थर नदी में फेंक देता था। शुरू में बहुत धीमे-धीमे, फिर बहुत तीव्रता से यह कार्य करता था। शाम होने को थी, इस लिये तीव्रता से यह कार्य करने लगा क्योंकि ढेर में बहुत पत्थर बाकी थे जिनकी जाँच करना अभी शेष था। अचानक उसका ध्यान लोहे पर पड़ा जो लोहे से स्वर्ण बन चुका था, लेकिन बदनसीबी यह थी कि तब तक वह पत्थर नदी में फेंका भी जा चुका था।

कहानी के नायक की तरह हम भी कई बार निष्फल होते हैं। निष्फल होने का हम अभ्यास करते हैं, बारबार पारस की पहचान नहीं कर पाते! जिसके कारण हम जीवन में मिले स्वर्ण तक की पहचान नहीं कर पाते और वह हमारी सब से बड़ी बदनसीबी है। मौका हाथ से कब सरक जाये इसका एहसास भी नहीं होता। इसी संदर्भ की हम हमारे दर्शन के साथ तुलना करें तो कई किसान पशुपालक, कारीगर लोग, कुदरती सम्पत्ति के स्रोत को जीवंत करके उत्पादक बना सकते है। लेकिन विकासशील राष्ट्र के वैज्ञानिकों तथा नीतिनिर्धारकों ने जैसे निष्फल होने का तय कर लिया हो और उसी कारण हमारे परम्परागत ज्ञान व पत्रिका सूझबूझ की धरोहर की हमेशा उपेक्षा हो रही है।

छोटा आकार : बड़ा विचार

बहुत दिन पहले बुद्ध भगवान ने जंगल के चूहे, बैल, मुर्गी, खरगोश, सांप, ड्रेगन वगैरह महत्वपूर्ण १२ प्राणियों को बुलाकर कहा कि आकाशगंगा की राशि में से एक-एक वर्ष तुम्हारे नाम करता हूँ। भगवान बुद्ध की यह बात सुनकर सब प्राणी खुश हो गये, परन्तु सबसे जरूरी यह प्रश्न था कि किस का वर्ष सबसे पहले रखा जाये और यहीं से सब मुश्किलों की शुरूआत हुई। चूहे ने कहा कि मैं बहुत बुद्धिशाली हूँ इस लिये हमारा वर्ष सबसे पहले रखा जाये। यह सुनकर बैल ने कहा कि मेरा कद सबसे बड़ा है इस लिये मेरा वर्ष

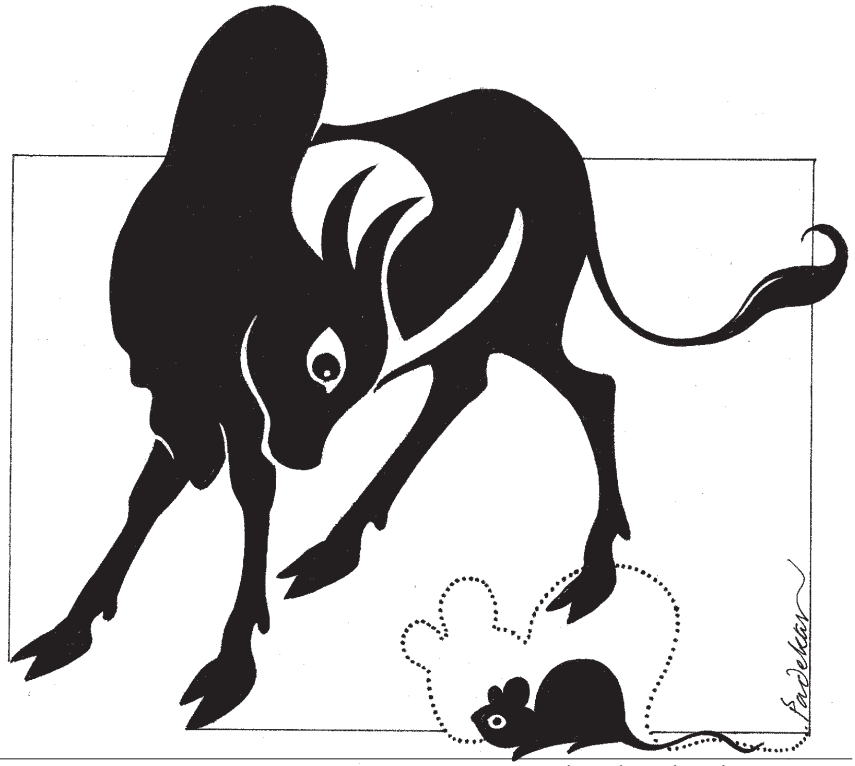

पहले रखा जाये। दोनों प्राणी थोड़ी देर के लिये आमने सामने विवाद करने लगे कि बुद्धि महत्व की है या कद महत्व का है। थोड़ी देर में चूहा शान्त होकर बोला कि मैं स्वीकार करता हूं कि कद महत्व का है इसी लिये बैल को कहा कि अच्छा तो यह निर्णय हो गया कि कद बहुत महत्व का है। तुरन्त चूहे ने जबाब दिया कि निर्णय इतना जल्दी नहीं होता मेरा कद तुम्हारे कद से ज्यादा प्रभावशाली है। यह सुनकर बैल बोला - क्या कहा? तुम एक छोटे जीव हो, तुम्हारा अस्तित्व क्या? तू कैसे लोगों को प्रभावित कर सकता है? चूहे ने कहा - अच्छा यह निर्णय लोगों पर छोड़ देते हैं। यह सुनकर बुद्ध भगवान ने कहा कि चूहे का कद बैल के कद से कम महत्व का है या नहीं, इसका निर्णय लोगों को करने दो। तुम दोनों में से जो अपने कद से लोगों को प्रभावित करे, उसकी जीत होगी।

इसके बाद चूहा तथा बैल दोनों सामने गांव में घूमने निकल पड़े। बैल तथा चूहा जहाँ-जहाँ जाते, वहाँ-वहाँ लोग चूहे को कौतुक से देखने के लिये इकट्ठे हो जाते और कहते कितना बड़ा चूहा। लोग बैल की तरफ जरा भी ध्यान नहीं देते थे। इस तरह लोगों को प्रभावित करके चूहे ने राशि चक्र में प्रथम स्थान हासिल कर लिया।

क्या स्थानीय नवप्रवर्तन बड़ा और प्रभावशाली होना चाहिये जिससे लोगों का ध्यान आकर्षित कर सके? छोटे-छोटे नवसृजनों को प्रोत्साहित करने के लिए ठोस कार्य करने की आवश्यकता महसूस नहीं की? कुदरत की विशाल श्रृंखला के साथ सामाजिक परिवर्तन एवं मानवीय दृष्टिकोण के साथ गठजोड़ का क्रम कब तक टालते रहेंगे।

अकाल में बीज की चिंता :
मूक निगाहें, अनिश्चित दिशायें

समाज की ज्यादातर सम्पत्ति जिनके पीछे खर्च होती है ऐसे साधन सम्पन्न लोग ढोंग को अपना अधिकार मानते हैं। आधुनिक विश्व की सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण की बिखरती परिस्थिति में उनके व्यक्तिगत प्रयासों से कुछ फर्क पड़ेगा ऐसा नहीं लगता। शायद इस प्रकार की उदासीनता समाज में सर्वव्यापी हो। अमीर, गरीब, स्त्री या पुरुष सब यही सोचते हैं कि हम क्या कर सकते हैं। सब लोगों ने अपने आप को निःसहाय मान लिया है। इसके विपरीत कुछ उत्साही लोग अकेले होते हुए भी शोध वृत्ति से

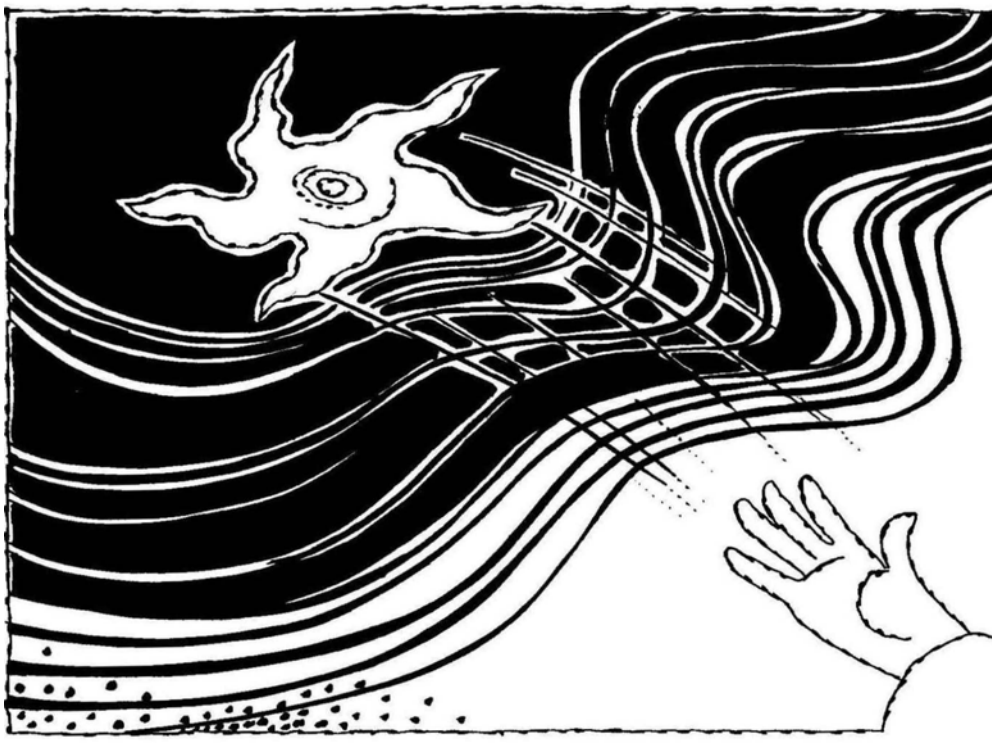

प्रेरित होकर कुछ नया-नया करते रहते हैं। ऐसा ही एक आदमी एक दिन समुद्र किनारे घूम रहा था। समुद्र किनारे घूमते-घूमते उसने कुछ मछलियों को समुद्र से बाहर तड़पते हुए देखा। समुद्र की लहर ने गुस्से में आकर मछलियों को बाहर फेंक दिया था। पानी के बिना तड़पती हुई मछलियों को देखकर उस मनुष्य को लगा कि यह मछलियां पानी के बिना इस सूखी जगह पर मर जायेंगी। उसे दया आयी। अभी वही मनुष्य एक के बाद एक मछलियों को पकड़ कर पानी में छोड़ने लगा। मछलियों को वापस समुद्र में डालते हुए देखकर उसके नजदीक खड़ी हुई एक स्त्री को आश्चर्य हुआ। वह स्त्री उस दयावान मनुष्य के पास गयी और पूछा, तुम मानते हो कि तुम इन हजारों मरती हुई मछलियों को बचा सकते हो? तुम्हारे इस कार्य से इतनी सारी मछलियों की स्थिति में फर्क नहीं होगा। उस मनुष्य ने स्त्री की बात सुनते-सुनते ही एक मछली हाथ में ली तथा समुद्र के पानी में डाल दिया । इसके बाद स्त्री की ओर घूमकर कहा कि मैं इस मछली को तो कम से कम बचा सकता हूं।

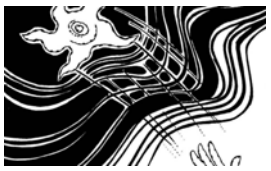

यह प्रबंधन में एक बहुत प्रचलित उदाहरण है, ऐसा पूछा जाता है कि हममें से कितने लोग निराशावादी मनोदशा रखते हैं। एक आम धारणा ऐसी है कि समाज सुधार में व्यक्तिगत प्रयास असरकारक नहीं। लेकिन ऐसा नहीं है। एक-एक व्यक्ति के प्रयास दूसरे व्यक्ति के लिये हमेशा फलदायी बन सकते हैं। अकेला एक व्यक्ति भी अपनी सामर्थ्य अनुसार कुछ न कुछ तो कर ही सकता है। अगर हम सबका भला नही कर सकते, तो क्या एक व्यक्ति एक जीव का भी हित नहीं कर सकता? सूझ बूझ आसपास की पत्रिका के जरिये हमने प्रयोगधर्मी लोगों को ढूंढने का प्रयास शुरु किया है। क्या आपके पास ऐसे लोग हैं?

आपत्ति की सूचना से हम कब सीखेंगे

गाँव से शहर की तरफ एक टोली इधर से उधर जा रही थी। हर व्यक्ति के कन्धों पर घर का थोड़ा सामान था। प्रत्येक के चेहरे पर अकाल की स्पष्ट छाप दिखायी देती थी। ये शहर के मार्गों पर कन्धों पर कांवड़ लिये हुये, भूख से पीड़ित और मृत्यु के समीप पहुँचे हुए लोग थे। इन मनुष्यों का आसपास की दुनिया या इन्सान के साथ जैसे कोई सम्बन्ध न हो, इस तरह मूक तथा नीची निगाह करके सब चले जा रहे थे। इन लोगों की लम्बी पंक्ति के अन्त में चल रहे वृद्ध के लिये कांवड़ का वजन उठाना काफी कष्टदायक लगता था। उनकी अस्थिर चाल और हृदय में से निकलती हुई हांफ थकान का अहसास करा रही थी। एक डग भी आगे न जा सके ऐसी स्थिति आ गयी। वृद्ध ने कन्धे पर से कांवड़ उतारकर सावधानीपूर्वक जमीन पर रख दी इसके बाद घुटने पर सिर टेक कर नीचे बैठा। पास में एक

फेरीवाला जोर से आवाज़ लगाकर कोई खाने की चीज बेच रहा था। वहाँ से गुजरते हुए एक राहगीर को वृद्ध पर दया आ गयी। उसने अपनी पोटली में से एक चांदी का सिक्का निकाला और कुछ विचार किया। उसने सोचा कि वह कम है, तो एक ताम्बे का सिक्का भी निकाला और पास में जो खाने की चीज बिक रही थी उसे वृद्ध खा सके, इस प्रयोजन से दोनों सिक्के वृद्ध को दे दिये। वृद्ध ने धीमे से ऊपर देखा उसकी आँखों में आश्चर्य की चमक फैल गयी। वृद्ध बोला, भाई मैं भिखारी नहीं हूँ। हमारे पास खूब उपजाऊ जमीन है। जिस पर हर वर्ष हम अच्छी फसल लेते आये हैं। इस भीषण अकाल में अगले वर्ष बोने के लिये रखे बीज भी पेट की भूख मिटाने के लिये खा लिये हैं। राहगीर वृद्ध की गोद में वे दो सिक्के रखकर आगे बढ़ गया।

वृद्ध ने ताम्बे के सिक्के से फेरीवाले से कुछ खाना खरीदा बहुत मुश्किल से खड़ा होकर कांपते हाथों से कावड़ी में से गुदरी खिसकाई। गुदरी के नीचे एक छोटा बच्चा आँख बन्द करके पड़ा था। दुर्बल तथा अशक्त बच्चे को अपने आप भी खड़े होने की ताकत न थी। वृद्ध ने उसे बैठाया बच्चा धीमे-धीमे कटोरी में से खाना खाने लगा । वृद्ध बच्चे के सिर को सहला रहा था। जिससे माहौल हलका हो रहा था। फेरीवाला यह दृश्य देख रहा था वृद्ध ने कहा यह मेरा इकलौता बेटे का बेटा है। मेरा बेटा तथा बहू पिछले साल नदी की बाढ़ में बह गये थे। बच्चे ने कटोरी में से खाना खा लिया तब वृद्ध ने बैठकर कटोरी को चाट लिया यह देखकर फेरी वाले को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने कहा दादा आपको नहीं खाना। वृद्ध ने कहा कि इस चांदी के सिक्के से उसे अगले साल बोने के लिये बीज खरीदना है । फेरी वाले ने आश्चर्य से सिर हिलाया और चल दिया वृद्ध की यह बात ऐसी थी जिसे समझने के लिये किसान की आत्मा होनी चाहिये।

प्रिय वाचक मित्रों यह कहानी नोबल पारितोषिक लेखिका पर्ल बक की है। इस कहानी की जड़ भले ही अन्य देश की हो लेकिन हमारी आज की परिस्थितियों के साथ पूरा उतरती है। एक साल अतिवृष्टि तो दूसरे साल सूखा जैसे वक्त से हम गुजर रहे हैं तब हमारे सबके मन में यही ख्याल गुजरता होगा कि जब पानी और कुदरती संसाधनों का ढेर हमारे पास था तब इसका थोड़ा संग्रह कर लिया होता तो कितना अच्छा होता। अभी भी वक्त है, अपने ऊपर जो अनुशासन रखता है, वह सुखी है।

जैव विविधता और स्थानीय ज्ञान : भूलती हुई परम्परायें

वर्षों पहले की यह बात है। रास्ते से गुजरते हुए एक राहगीर को मुर्गी के अन्डे जैसा एक गेहूँ का दाना मिला। वह दाना मुसाफिर ने राजा को भेंट किया बदले में बख्शीश लेकर मुसाफिर चला गया। इतना बड़ा दाना देखकर राजा को आश्चर्य हुआ। राजा ने पण्डितों को यह पता करने के लिये कहा कि यह गेहूँ का दाना कौन से मौसम में पकता है। ढूंढ निकालने की आज्ञा दी। पण्डितों ने सब

ग्रन्थ खोल दिये फिर भी इतने बड़े दाने का उल्लेख कहीं नहीं मिला। इसके बाद राजा ने किसी वृद्ध किसान को बुलाकर इस के बारे में पूछताछ करने को कहा। राजा के हुक्म से सिपाहियों ने वृद्ध किसान को ढूँढ निकाला। चेहरे पर बहुत सी झुर्रियों वाले तथा झुकी हुई कमर वाला किसान राज दरबार में आया। उस मुर्गी के अन्डे जैसा दाने के बारे में पूछे जाने पर उसने कहा - महाराज मैंने अपने जीवन में इतना बड़ा दाना कभी नहीं देखा शायद मेरे पिता को इस प्रकार के दाने के बारे में जानकारी होगी। इसके बाद किसान के पिता को भी राज दरबार में बुलाया गया। एक लकड़ी की सहायता से चलता हुआ वह राजदरबार में दाखिल हुआ। उससे भी मुर्गी के अन्डे जैसे दाने के बारे में पूछा गया। उसने कहा - महाराज हमारे जमाने में इससे छोटा दाना पकता था। परन्तु इतना बड़ा दाना मैंने भी नहीं देखा। मेरे पिता को शायद इस बात की जानकारी होगी। इस वृद्ध के पिताजी अभी तक जिन्दा है यह सुनकर सब को आश्चर्य हुआ।

राजा ने उनको बुलाने के लिये अपना एक आदमी भेजा। इतनी बड़ी उम्र में भी इस वृद्ध को सीधा चलता हुआ देखकर सब को आश्चर्य हुआ। वृद्ध का तेजस्वी माथा, चमकती हुई आँखें, युवा को भी शरमा दे ऐसी चाल थी। इस दाने को देखकर वृद्ध के चहेरे पर परमआनंद की लहर छा गयी और बोला अरे! यह तो हमारे जमाने में देखा हुआ दाना है।

प्रिय वाचक मित्रो, प्रस्तुत कहानी टॉलस्टॉय ने लिखी है। गेहूँ का दाना ज्ञान का ऐसा प्रतीक है जिसे हम भूल रहे हैं। पीढी दर पीढ़ी गेहूँ के दाने के कद की तरह ज्ञान का कद क्यों कम हो रहा है? बुजुर्ग के पास ऐसा कौन-सा ज्ञान है जो युवा पीढ़ी के पास नहीं है? भूलते हुए ज्ञान को बचाने के लिये क्या करना चाहिये? कहने के लिये विकास और वैभव की तुलना में यह भव्य विरासत आज क्यों कम हो रही है ? क्या परम्परागत बीज और ज्ञान को आज की विकास की प्रक्रिया के साथ जोड़ देना आवश्यक नहीं है?

ज्ञान बड़ा या बुद्धि

बाल कौवा जब युवा अवस्था में पहुंचता है तब प्रमुख कौवा उनकी परीक्षा लेकर तय करता है कि उनको टोली में शामिल करना चाहिये या नहीं।

एक दिन ऐसे ही तीन बाल कौंवो का जो युवा अवस्था में पहुंचने वाले थे, परीक्षा का समय आया। प्रमुख कौवे ने प्रथम कौवे से पूछा दुनिया में सबसे ज्यादा किससे बच कर रहना चाहिये। प्रथम कौवे ने तुरन्त जवाब दिया, बाण। प्रमुख कौवा जवाब सुनकर उड़ गया और उड़ कर

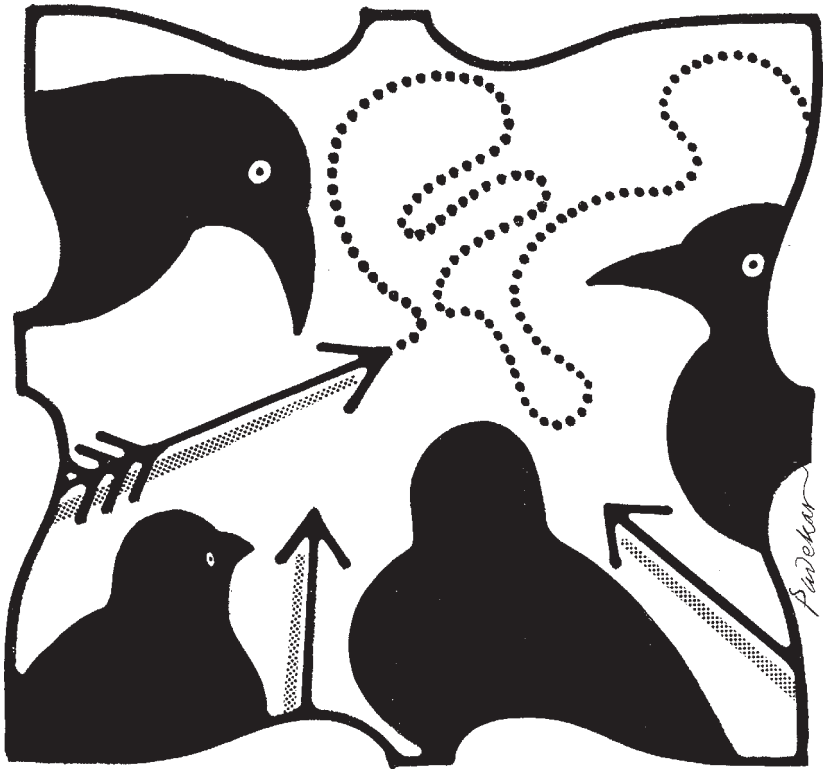

दूसरा कौवा जिस डाल पर बैठा था वहां गया। फिर से यह प्रश्न पूछा, दुनिया में सबसे ज्यादा किससे बचकर रहना चाहिये? कौवे ने थोड़ा विचार करके जवाब दिया - कुशल तीरंदाज से, क्योंकि धनुषधारी मुझे निशाना बनायेगा तो मैं घायल हो जाऊंगा या मर जाऊंगा। प्रमुख कौवा अकेले कौवे के पास गया और वही प्रश्न पूछा कि किससे बचकर रहना चाहिये ।

कौवे ने थोड़ी देर विचार किया फिर कुछ सोचता हुआ बोला - मेरा मानना है कि अकुशल धनुषधारी से बचकर रहना चाहिये।

प्रमुख कौवे ने आश्चर्य से पूछा - तुमने ऐसा जवाब क्यों दिया । तीसरे कौवे ने सिर हिलाते हुये जवाब दिया कि कुशल धनुषधारी तो निश्चित तीर चलायेगा ऐसे समय पर दायें से बायें खिसककर या उड़कर बच सकते हैं। परन्तु अकुशल का तीर कौन-सी जगह लगेगा, यह निश्चित नहीं है इसीलिये बच कर कहां उड़ना है यह भी तय नहीं कर सकते। जवाब सुनकर प्रमुख कौवा और समस्त कौवे की टोली खुश हो गयी प्रमुख कौवे को शायद उसका वारिस मिल गया था।

प्रिय वाचक मित्रो, कौवे के समाज में भी नयी दृष्टि की कद्र की जाती है। लेकिन कमनसीब से मानव समाज में यह सन्देश नहीं पहुंचा। निरन्तर नयी सोच और समस्याओं को अनेक अनोखी दृष्टि से समझकर इसका समाधान ढूंढने वाले लोगों की सूझबूझ के ज्ञान को हम कहां पहचानते है हम? नयी-नयी सूझबूझ से निरन्तर शोध करने वाले धुनी लोगों को पहचान कर, उन्हें सम्मान देने का यह हमारा छोटासा प्रयास है। ऐसे धुनी लोग हरेक गांव में होते है जरुरत है उन्हें सक्षम बनाने की, उनसे सीखने की!

रसहीन धरा हुई, दयाहीन राजा हुआ

जाड़ों की गुलाबी सर्दी में एक वृद्ध दम्पत्ति आग ताप रहे थे। पक्षियों की मधुर आवाज सब के दिल में गूँज रही थी। इतने में एक घुड़सवार वहां आया और घोड़े से नीचे उतर कर वृद्ध माता को नमन किया। मुझे बहुत प्यास लगी है, पानी देंगे। दयालु स्वभाव की माता ने गन्ने के खेत की तरफ उंगली करके कहा बेटा गन्ने का रस बहुत ही मीठा है यही देती हूँ। माता उस घुड़सवार को गन्ने के खेत की तरफ ले गयी। गन्ना काटकर उसके हाथ में रस का गिलास दिया। आश्चर्य से घुड़सवार गन्ने का ताजा रस एक ही सांस में पी

गया। उसने कहा अभी प्यास नहीं बुझी। एक गिलास और दो । माता फिर से गन्ने का रस निकालने लगी पर एक भी बूंद रस नहीं निकला। चिंतित होकर माता ने कई गन्ने काटे मगर रस नहीं निकला फिर आंखों में आंसू के साथ बोली "रसहीन हुई धरा, दयाहीन हुआ राजा। नहीं तो ऐसा कभी नहीं होता", ऐसा कहकर माता फिर से रोई । यह शब्द सुनते ही घुड़सवार माता के पैर में झुककर माफी मांगते हुये बोला। वह राजा मैं ही हूं, मुझे माफ करो। घुड़सवार राजा ने कहा मुझे गन्ने का मधुर रस पीते ही विचार आया कि इस उपजाऊ जमीन में से ढेर सारी फसल लेने वाले किसानों के पास से मैं कर क्यों न लूँ? मुझे क्षमा करो मां, मुझे तो सिर्फ आपका आशीर्वाद चाहिये। माता ने घुड़सवार राजा को खड़ा किया और फिर से गन्ना काट कर रस निकालने लगी तो रस की धारा से गिलास भर गया।

कवि - सूरसिंह गोहिल कलापी

क्या हाल में रसहीन हुई हमारी धरा, नदियां, झरने, अनाज, सब्जी, फल तथा अन्य कुदरती संसाधनों के लिये दयाहीन प्रशासकों और लोभी प्रजा के बीच के स्वार्थी सम्बन्ध तथा उनकी संकुचित दृष्टि जवाबदार नहीं हो सकती। अब तो प्रजा भी सबसिडी और राहत का फायदा लेकर कुदरती संसाधनों को निचोड़ने के लिये तत्पर बनी है। खेती, पर्यावरण और अन्य कुदरती संसाधनों की चर्चा करने वाले हमारे विद्वान लोग जुताई, खाद, पानी और प्रदूषण के अलावा अदृश्य मानवीय दृष्टिकोण जैसे कि संवेदना, दृष्टि, भावना, मनोबल के बारे में कुछ सोचेंगे या नहीं।

जैसे हो, वैसे ही भले - टूटे घड़े की कहानी

बहुत समय पहले एक भिश्ती रहता था जिसके पास दो घड़े थे। इन्हें वह एक बांस की लकड़ी के दोनों सिरों पर बांधकर कंधे पर लटकाकर पानी भरने जाता था। इनमें से एक घड़े में दरारें पड़ गई थीं और उसमें से पानी रिसता था। दूसरा घड़ा सही - सलामत था। नदी से पानी भरकर जब वह चलता, तो मंजिल पर पहुंचते-पहुंचते टूटे घड़े में केवल आधा पानी ही बचता, जबकि दूसरा घड़ा पूरा भरा रहता।

दो सालों तक भिश्ती अपने दोनों घड़ों से उसी रास्ते मालिक के घर पानी पहुंचाता रहा। उसके एक घड़े से पानी रिसने के कारण हर फेरी

में वह दो के बजाए डेढ़ घड़ा पानी ही पहुंचा पाता। आधा घड़ा पानी रास्ते में ही गिर जाता। भिश्ती की मेहनत को इस प्रकार व्यर्थ जाता देखकर टूटा घड़ा बहुत दुखी हुआ और उसे अपनी कमजोरी पर बहुत अफसोस हुआ। साबुत घड़ा इस घमंड में इतराता कि वह अपने मालिक की पूरी सेवा कर रहा है।

आखिर एक दिन टूटे घड़े से रहा नहीं गया। उसने अपने मालिक से अपनी कमजोरी के लिए माफी मांग ही ली। उसने कहा, 'मालिक मुझे क्षमा करें, मैं बहुत शर्मिंदा हूं।'

भिश्ती ने कहा, 'किस बात के लिए क्षमा करूं? और तुम शर्मिंदा क्यों हो?'

'पिछले दो साल से मैं आपकी आधी मेहनत व्यर्थ करता आ रहा हूं। मुझमें जो दरारें है उनसे आधा पानी रास्ते में ही गिर जाता है,' घड़े ने उदासी भरे स्वरों में कहा।

भिश्ती को टूटे घड़े पर दया आई। उसने प्यार से कहा, 'जब हम पानी पहुंचाने मालिक के घर जा रहे हों, तब तुम सड़क पर खिले सुंदर फूलों को देखना । सभी फूल सड़क में उसी किनारे लगे हैं जिस तरफ तुम लटकते हो ।

सचमुच सड़क के जिस किनारे टूटा घड़ा लटकता था, वहां सुंदर खुशबूदार फूलों वाले पौधे खिले थे, जिन्हें देखकर टूटे घड़े के उद्विग्न मन को थोड़ी शांति मिली। पर उसे साल रही ग्लानि इससे मिटी नहीं। तब भिश्ती ने उसे समझाते हुए कहा, 'क्या तुमने ध्यान दिया, कि ये सुंदर फूल सड़क के केवल उस ओर उगे हैं, जिस ओर तुम लटकते हो, दूसरी ओर नहीं जहां यह दूसरा घड़ा लटकता है? मैं तुम्हारी कमजोरी के बारे में जानता था और इसलिए मैंने उसे लाभ में बदलने की विधि भी ढूंढ़ ली। मैंने सड़क के किनारे ये सुंदर फूलवाले पौधे रोप दिए हैं। तुमसे जो पानी चूता है, उससे ये पौधे दो सालों तक सिंचते रहे और अब यह इन सुंदर फूलों से लद गए हैं। इन फूलों से मैं अपने मालिक के घर को सजाता हूं और वे मुझ पर कितना प्रसन्न होते हैं? यदि तुम बूंद-बूंद पानी न टपकाते, तो यह सारी सुंदरता कहां से आती?'

पाठक का उत्तर

क्या हम एक दूसरे की कमज़ोरियो को सहज बन आत्मसात करेगें, उनको अपनी व समय की ताकत बनायेगें? जीवन कितना मधुर हो जायें, यदि हमारी कमियां ही सामुदायिक ताकत का आधार बन जाये!

गेहूँ के दाने में छिपा विश्व!

हजारों साल पहले ईरान में एक संत हुए - संत जरथुष्ट्र। उस समय ईरान में राजा विस्तास्पा राज करते थे। एक बार राजा विस्तास्पा अपने राज्य के दौरे पर निकले, लौटते हुए वे संत जरथुष्ट्र से मिले और उनसे प्रकृति के नियम समझाने का अनुरोध किया। इसके जवाब में संत जरथुष्ट्र ने राजा को गेहूँ का एक दाना दिया। राजा ने संत के इस कार्य को अपना मजाक समझा और बेहद क्रोधित होते हुए गेहूँ का वह दाना फेंक दिया।

जरथुष्ट्र ने गेहूँ का वह दाना उठाया और अपने शिष्यों को दिखाते

हुए कहा कि एक दिन राजा को अपनी गलती का अहसास अवश्य होगा, तब गेहूँ का यही दाना राजा को सबक सिखाएगा। कई साल गुजर गए। अब तक विस्तास्पा बहुत महान राजा बन चुका था, परन्तु तब भी कई सारे विचार विस्तास्पा को परेशान करते थे। कई बार वह यह भी सोचता कि जीवन की शुरुआत कैसे होती है, संसार बनने से पहले यहां क्या था? राजमहल में किसी के भी पास इन प्रश्नों के जवाब नहीं थे। इसी बीच संत जरथुष्ट्र की लोकप्रियता भी निरन्तर बढ़ रही थी। राजा को भी इसका आभास था, एक दिन राजा ने संत जरथुष्ट्र से अपने बुरे व्यवहार के लिए माफ़ी मांगते हुए उन्हें अपने दरबार में आमंत्रित किया। साथ ही अपने सिपाहियों और नौकर-चाकरों के साथ बेशुमार हीरे जवाहरात भी संत को भेंटस्वरूप भिजवाये। संत जरथुष्ट्र ने राजा की भेंट को अस्वीकार करते हुए उसे लौटा दिया। साथ ही गेहूँ का वह दाना भी भेजा जो बहुत पहले एक बार राजा गुस्से में छोड़ गया था। राजा ने इस बार गेहूँ का वह दाना देखकर सोचा कि यह अवश्य कोई चमत्कारी दाना होगा। इस दाने को राजा ने सोने की एक डिब्बी में रखकर अपने खजाने में रख दिया। राजा को अब किसी चमत्कार की प्रतीक्षा थी।

महीनों गुजर गए, परन्तु कोई चमत्कार नहीं हुआ। आखिरकार राजा ने प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक चंद्रगच को अपने दरबार में आमंत्रित किया और आग्रह किया कि वे उनके राजगुरू बनना स्वीकार करें। चंद्रगच ने राजा विस्तास्पा का आग्रह स्वीकार कर लिया। वह ईरान के राजगुरू के रूप में वहां पहुंचे। राजा ने चंद्रगच को गेहूँ का वह दाना दिखाते हूए पूरी कहानी सुनायी।

चंद्रगच ने कहा.....

चंद्रगच ने संत जरथुष्ट्र और गेहूँ के दाने के बारे में राजा को क्या कहा? इस अंक में हम इस कहानी का आधा भाग ही प्रकाशित कर रहे हैं। यहां छपी इस कहानी के आधार पर आप सोचें कि चंद्रगच ने क्या कहा होगा?

पाठक का उत्तर

चतुर चद्रांग ने गेहूँ के दाने के विषय में क्या कहा? पिछले अंक की आवरण कथा में यही प्रश्न हमने आपसे पूछा था। जरथुष्ट्र ने विस्तास्पा के प्रश्नों के उत्तर के रुप में एक गेहूँ का दाना क्यों सौंपा? चन्द्रांग ने जो कुछ कहा, वह इस प्रकार है.....

"महाराज विस्तास्पा, जरथुष्ट्र सचमुच बहुत महान संत है। यह नन्हा-सा अन्न का दाना हमको प्रकृति का सम्पूर्ण सारांश और नियम समझा सकता है।

इसको इस कीमती सोने की डिबि३या में रखने के बजाय यदि आप इसे धरती मां की गोद में रखते, जहां से यह आया है, तो यह हवा, पानी और सूर्य के प्रभाव से अपनी एक नई दुनिया रचता इसी तरह यदि आप भी इन महलों से निकल कर प्रकृति के नजदीक रहेंगे तो अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करेंगे, समझ विकसित करेंगे।"

"एक दिन यह गेहूँ का दाना दाना नहीं रहेगा जिस दिन इसमें अंकुर फूटेगा उसी दिन यह मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेगा"

राजा विस्तास्पा ने यह सब सुनकर कहा, "आपने जो कुछ कहा वह सत्य है। पर वस्तुतः यह गेहूँ का पौधा भी मृत्यु को ही प्राप्त होगा और जिस धरती से यह फूटा था उसी में मिल जाएगा।"

"नहीं" चन्द्राग ने कहा। "इसकी मृत्यु में भी रचना है। मिट्टी में मिलने से पहले यह अपने जैसे सैकड़ों दानों को रचेगा। इसी तरह यदि आप भी अपने वर्तमान स्वरूप को छोड़कर आध्यात्मिक और ज्ञान की दुनिया में प्रविष्ट होंगे तो अपने व्यक्तित्व को निखार पाएंगे। वैसे ही जैसे जीवन जीवन को रचता है, सत्य सत्य को रचता है और एक गेहूँ के दाने ने रचे असंख्य दाने।"

गेहूँ का दाना यह भी सिखाता है कि प्रकृति की हर एक वस्तु उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर गतिमान है। ज़िन्दगी हर दिन एक नया सबक सिखाती है, क्योंकि जीवन एक संघर्ष है। कभी खुले आकाश के नीचे खड़े होंगे तो पाएंगे कि जल, जमीन, हवा, आकाश, तारे, बादल-बरसात सभी कुछ एक सीख दे रहे हैं - जीवन जीने की सीख। प्यार से रहने की सीख।
क्योंकि हम सभी को रचने वाला रचनाकार एक ही है।

एडमोन्ड बोरडेक्स ज़ेकली की पुस्तक "द एसेंस टीचिंग्स ऑफ जरथुष्ट्र" पर आधारित।

तोता आखिर क्यों उड़ा?

एक सुखी-सम्पन्न गाँव था जहां लोगों में, पशु पक्षियों व प्रकृति में गजब का संतुलन व सामंजस्य था। लेकिन एक बार सूखा पड़ा, फसलों का नुकसान हुआ और यह संतुलन बिगड़ गया। एक दिन एक महिला अपने खेत से जो कुछ अनाज़ बटोर सकती थी, बटोर कर घर ला रही थी। रास्ते में महिला को एक तोता मिला जो उसे घूर रहा था। महिला ने पूछा, क्या बात है? क्यों घूर रहे हो? तोता बोला कि मैं तुम्हारे गले के हार को देख रहा हूं और सोच रहा हूं कि वह हरे रंग का पत्थर जो हार में जड़ा है क्या अनाज़ का दाना तो नहीं। महिला तोते का इशारा समझ गई और पूछ बैठी, तुमने आज कुछ खाया नहीं

क्या ? कैसे खाता, सारा बिखरा हुआ दाना तो तुम खेत से बटोर लाई हो, तोते ने जवाब दिया।

महिला झेंप गई लेकिन जल्दी ही संभल कर तोते को घर आने का निमंत्रण दिया और कहा, घर में बच्चे भी भूखे हैं, तुम भी चलो और मिल बैठ कर खा लेंगे । महिला को अपनी झेंप मिटाने का इससे सरल कोई उपाय नहीं सूझा और उसने सोचा कि भूखा तोता उसके साथ चल देगा। इसके साथ उसे यह भी लगा कि तोते से किए गये अन्याय अर्थात उसके हिस्से का अनाज भी बटोर लाने की भरपाई भी हो पायेगी । महिला को लगा तोता उसके साथ चल देगा लेकिन महिला के आग्रह को अनदेखा कर तोता फुर्र से उड़ गया। महिला आश्चर्यचकित देखती रही।

तोता क्यों उड़ गया? क्या उसे लगा कि यदि उसने देर कर दी तो और लोग भी खेतों से अनाज इकट्ठा कर घर चले देंगे? क्या उसे याद आ गया कि उसके भी बच्चे भूखे हैं? या क्या उसे महिला पर तरस आया कि बेचारी अपने खेत के अलावा और कहीं से अनाज नहीं बटोर सकती है? या उसे लगा कि वह तो कहीं से भी अनाज ला सकता है? तोते के अचानक उड़ जाने के और कई कारण भी हो सकते हैं।

कर्नाटक के शिमोगा जिले की लम्बाडा जनजाति की महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले लोकगीत पर यह कहानी आधारित है। गीत में अकाल के दौरान भी अनाज पर पक्षियों के अधिकार की एक सांस्कृतिक सोच उभर कर सामने आती है। लेकिन इस सोच में निहित है समाज की वह समझ जिसका विश्लेषण समय व स्थान विशेष के आधार पर बदलता रहता है ।

हम चाहते हैं कि आप हमें बतायें कि आप के विचार से तोता क्यों उड़ गया? आखिर महिला के निमंत्रण को स्वीकार न करने के पीछे क्या सोच रही होगी तोते की? आज के परिप्रेक्ष्य में यह कहानी कैसे खरी उतरती है?

पाठक का उत्तर

आखिर यह कैसा समाज है जो हमें अकाल के समय पक्षियों के अधिकार का बोध कराता है। यह कैसी संस्कृति है जिसमें प्रकृति के प्रति ऐसी संवेदनशीलता को पहेली के रुप निहित किया गया है। कवि ने प्रश्न तो पूछा है, पर हर युग में, हर स्थान पर, हर पीढ़ी को अपनी स्थिति के अनुसार इसका उत्तर ढूँढ़ना पड़ेगा।

एक बेल को भी है जीने का अधिकार

आज से कइ सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में चोलवंश के राजा परिवाल्ला का राज्य था। राजा दयालु हृदय का था। अपनी प्रजा के दुःख-दर्द के प्रति संवेदनशील भी था और यही कारण था कि पूरे राज्य में उसकी उदारता की चर्चा रहती थी।

एक बार जंगल से गुजरते हुए राजा प्यास बुझाने के लिए एक झरने के पास रुका। प्रकृति के अनुपम सौंदर्य को देखकर राजा ने सोचा कि

कुछ देर आराम ही क्यों न कर लिया जाये । लेकिन जब राजा विश्राम के बाद रथ के पास वापस आया तो क्या देखता है कि एक नीलोत्पल नाम की बेल, जिसमें सफेद फूल खिले थे, रथ के पहिये से लिपटी हुई है ।

राजा चक्कर में पड़ गया क्योंकि यदि वह रथ पर सवार हो कर आगे बढ़ता है तो लिपटी हुई बेल व खिलते हुए फूल नष्ट हो जाते हैं । संवेदनशील व दयालु होने के कारण राजा परिवाल्ला ने जो निर्णय लिया वो अचंभित करने वाला था - राजा ने अपना रथ वहीं छोड़ दिया और पैदल महल की ओर चल दिया।

(क्या आप बता सकते है कि राजा ने ऐसा क्यों किया? राजाने अपने दरबार में इस घटना का क्या ब्यौरा दिया? और आज के परिप्रेक्ष्य में राजा द्वारा उठाये कदम का क्या महत्व है?)

पाठक का उत्तर

एक बेल को भी अपनी तरह जीने का अधिकार है। आज जब समाज में असहिष्णुता बढ़ रही है, इंसान एक दूसरे के ऊपर अपनी सोच को थोपने का प्रयास कर रहा है, ऐसे में प्रकृति के विभिन्न हिस्सों को अपनी तरह से जीने का अधिकार देना कोरी कल्पना लगती है? लेकिन कल्पनायें ही भविष्य का निर्माण करती हैं। कैसी कल्पना, कैसा भविष्य, सोचिये।

चावल ही क्यों, गेहूँ क्यों नहीं?

हालांकि गेहूँ बिना भोजन की कल्पना करना भी कठिन है, जिस पर भी विश्वभर में धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक क्रियाकलापों में चावल को प्राथमिकता दी जाती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक चावल लगभग हर गतिविधि में अहम भूमिका निभाता है।

पूजा-पाठ में तिलक के साथ चावल के एक-दो दाने चिपका ही दिए जाते हैं। अपने मायके से विदा होती हुई नव-विवाहिता आंगन में कुछ

चावल गिरा कर बिछड़ने का संकेत देती है। चीन में तो सुहागरात के दिन नव दम्पति एक ही बर्तन से कुछ चावल खाते हैं, कहते हैं ऐसा करने से विवाह की सफलता के अतिरिक्त अगले जन्म में पुनर्मिलन की संभावना बनी रहती है।

एशिया के लगभग सभी देशों के इतिहास में चावल की धार्मिक व सांस्कृतिक भूमिका का विशेष चित्रण है। पश्चिमी सभ्यताएँ भी चावल के इस असर से बची नहीं है। गिरजाघर से विदा होते हुए नव दम्पति पर चावल की बौछार करना शुभ शगुन माना गया है। सुदूर पूर्व की तो पूरी संस्कृति ही चावल पर आधारित है - चाहे जापान हो या चीन और चाहे फिलीपीन्स हो या थाईलैन्ड।

(आखिर ऐसा क्यों है कि एक प्रमुख खाद्यान्न होने के बावजूद भी गेहूँ को वह धार्मिक व सांस्कृतिक दर्जा न मिल पाया जो चावल को मिला है? क्या कारण है कि चावल को प्रत्येक समाज ने यथासंभव आदर ही दिया है? इस पहेली को सुलझाने में अपना योगदान दें।)

असली मूर्तिकार कौन?

रंगपुर नामक गांव में एक मूर्तिकार रहता था। अपना पूरा जीवन उसने मूर्तियां तराशने में बिता दिया। जीवन का शायद ही कोई रूप था जो उसकी कला से अछूता रहा हो।

असाधारण प्रतिभा के धनी इस मूर्तिकार की कला की विशेषता यह थी कि उसकी बनाई मूर्तियां जीवंत लगती थीं। देखने से ऐसा लगता था कि मूर्तियां कभी भी बोल पड़ेंगी। एक स्त्री को तो अपने पति की मूर्ति व पति में अंतर करना मुश्किल हो गया था।

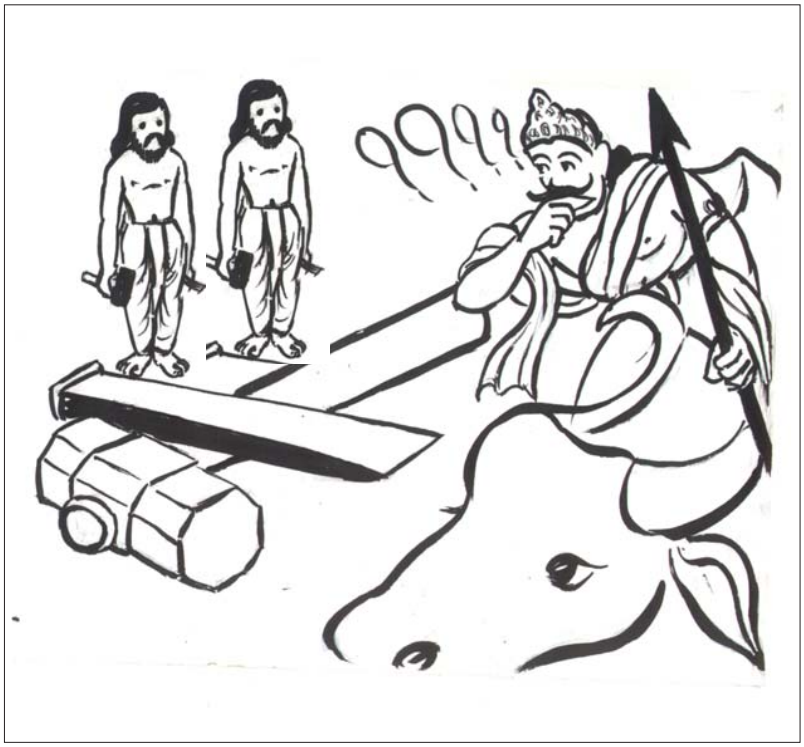

मूर्तिकार अपने काम में इतना व्यस्त रहता कि उसे पता ही ना चला कि कब दिन बीता और कब रात ने अपनी चादर फैला दी। उसका दिन तो छेनी व हथौड़ी से शुरु होता और उन्हीं के साथ खत्म हो जाता। मूर्तिकार के ये दोनों साथी अकसर उसके साथ ही सोते थे।

रंगपुर के वासियों का इस असाधारण प्रतिभा से कम ही सामना होता। मूर्तिकार बोलता बहुत कम था - उसे छेनी व हथौड़ी से फुर्सत ही न मिलती थी। लोग औजारों की आवाज़ से ही भांप जाते कि आज मूर्तिकार क्या बना रहा है। ऐसा था लोगों और मूर्तिकार में संवाद।

(अपनी मृत्यु से पूर्व मूर्तिकार ने अपनी एक दर्जन मूर्तियां बना डाली थीं। फर्श पर बिछी इन मूर्तियों में ही उसकी भी शय्या बिछा दी गई थी। जब मृत्यु के देवता यमराज के दूत मूर्तिकार की आत्मा लेने उसके घर पहुंचे तो दृश्य देखकर दंग रह गये। आखिरकार सभी एक से लग रहे थे। क्या यमदूत मूर्तिकार की आत्मा ले जा पाये? यदि हां, तो कैसे?)

क्या गाय को न्याय मिला?

तमिलनाडु के चोलवंश के राजा अपने निष्पक्ष न्याय के लिए लोकप्रिय थे। उन्होंने अपने महल के पास के मंदिर में एक घंटी लटकवायी। इस घंटी को कोई भी किसी भी समय बजाकर न्याय पा सकता था। परन्तु घंटी तब ही बजाई जाती थी जब फरियादी को कहीं भी न्याय नहीं मिलता था।

एक दिन अचानक घंटी बजी । आवाज़ सुनकर बहुत से लोग इकट्ठे हो गये और देखकर दंग रह गये कि फरियादी के रुप में वहां एक गाय खड़ी थी। इतने में राजा भी आ गये। राजा को भी हैरानी हुई मगर

तुरन्त ही वह गाय के पीछे-पीछे चल दिये। गाय एक जगह आकर रुकी जहां पर एक बैल मृत पड़ा था। राजा ने वह रथ पहचान लिया जिससे बैल की मृत्यु हुई थी, वह रथ तो

राजकुमार का था। यानी बैल की मृत्यु राजकुमार के रथ से हुई थी। राजा परेशान होकर फरियादी गाय की ओर देखने लगे क्योंकि अब समय था न्याय का और राजा के लिए परीक्षा का।

(क्या आप बता सकते हैं कि राजा ने क्या न्याय दिया? क्या राजा अपने निष्पक्ष न्याय की छवि को बरकरार रख पाया? क्या गाय संतुष्ट होकर अपने घर लौट पायी?)

पाठक का उत्तर

राजा ने अपने लड़के को बुलवाया और उसे आदेश दिया कि वह रास्ते पर लेट जाये! उसके बाद अपने सेवकों को कहा उसके रथ को बेटे के ऊपर चला दिया जाये। बेटे की मृत्यु हो गई, न्याय का एक अद्‌भुत उदाहरण कायम हो गया। निर्मम तो लग सकता है लेकिन यह एक जानवर के दर्द को अहसास करने और न्याय देने का अनूठा तरीका था।

सुन्दरता क्या है?

एक तालाब में बतख ने अंडे दिये थे, जिसमें से एक अंडे का आकार कुछ बड़ा था। समयानुसार उन अंडों से चूजे निकले, मगर एक चूजा बड़ा और बदसूरत था। यह देखकर चूजों की मां ने उसको दुत्कार दिया और कहा कि तुम मेरे बच्चे नहीं हो क्योंकि तुम सुन्दर नहीं हो और यह कहकर अन्य चूजों को लेकर चली गयी। बदसूरत चूजा दोस्ती के लिए खरगोशों के पास गया मगर वहां भी उसे तिरस्कार ही मिला। अन्त में दुःखी होकर उसने अकेले रहने का

फैसला कर लिया। समय बीतता गया। वह अकेला ही उसी तालाब में तैरता रहता था। एक दिन उसने देखा कि आकाश में हंसों का झुंड चला जा रहा है। उसने सोचा काश मैं भी इतना सुन्दर होता तो अपनी जाति के झुंड में रहकर जीवन व्यतीत करता । इतने में एक हंस उसकी ओर चला आया। हंस ने उसकी हंसी उड़ाने की बजाए उसे अपने झुंड में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया और कहा कि तुम हमारे साथ चलो। यह सुनकर बदसूरत चूजे ने अपनी शक्ल पानी में देखी तो उसने पाया कि वाकई वह भी बहुत सुन्दर है और खुशी-खुशी वह हंसों के झुण्ड में शामिल होकर बाकी का जीवन व्यतीत करने लगा ।

(सुन्दरता क्या है - वह जो बाहर से देखने में लगती या जो आन्तरिक होती है। क्या कारण था कि बतख ने अपने बच्चे का त्याग केवल सुन्दर न होने के कारण किया? क्या हंस का चूज़ा बदसूरत होता है? इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करें जो कि बदसूरत चूजे के मन में बनी रही।)

नर या मादा?

एक दिन एक मालवाहक जहाज तोरोजा बन्दरगाह पर आ कर रुका। जहाज के व्यापारी के पास कुछ बतखें और एक लकड़ी का काले रंग का टुकड़ा था। उसे अचानक कुछ सूझा और वह वहां के राजा के दरबार में गया। व्यापारी राजा के दरबार में दो काली बतखें और लकड़ी का टुकड़ा लिये हाजिर हुआ। वहां उसने भरे दरबार में राजा से दो प्रश्न पूछे। एक, दोनों बतखों में कौन नर और कौन मादा है और दूसरा काली लकड़ी का ऊपरी हिस्सा कौन-सा है और निचला कौन-सा? व्यापारी ने कहा यदि राजा इन प्रश्नों का उत्तर दे देंगे तो

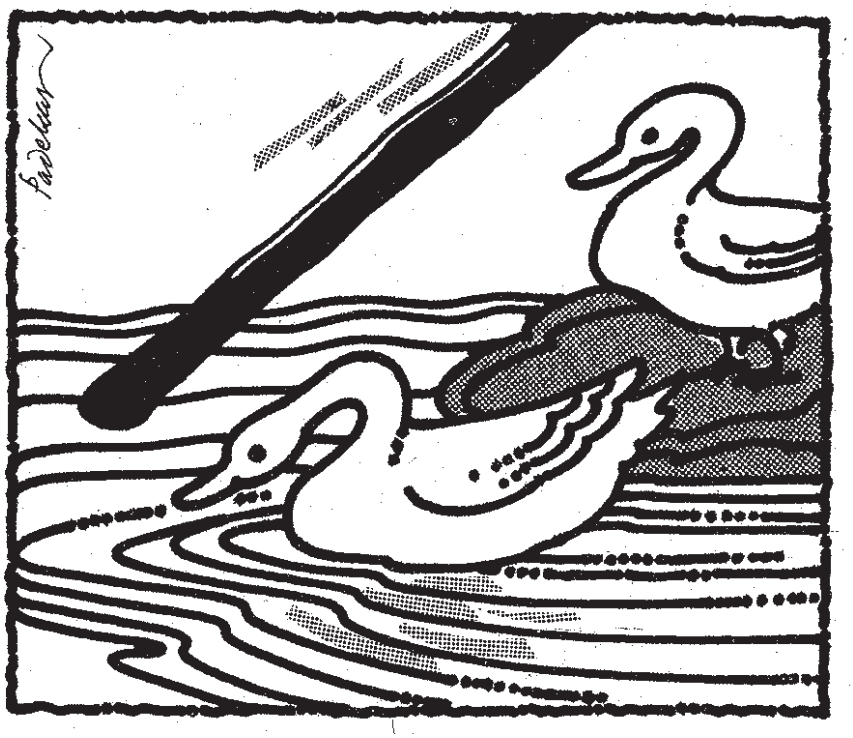

वह अपना जहाज इनाम के तौर पर उसी बन्दरगाह पर छोड़ देगा। यह सुनते ही राजा ने अपने दरबार में उपस्थित सभी विद्वानों से इन दोनों प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने को कहा। सभी दरबारी, विद्वान व स्वयं राजा इन प्रश्नों का उत्तर खोजने में लग गये। व्यापारी ने राजा को केवल तीन दिन का समय दिया।

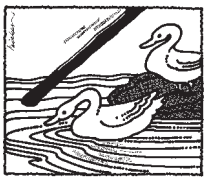

(विशेषज्ञों में एक आम प्रवृत्ति पाई जाती है कि अपनी दक्षता के दावे वाले क्षेत्रों में भी उनको विशेष ज्ञान नहीं होता, आम लोगों से सीखने की ना तो क्षमता होती है और ना ही प्रवृत्ति। बहुत से लोग लोगों के ज्ञान व सूझबूझ से सीखने के लिये तरह-तरह के आडम्बर रचते हैं। लेकिन जरुरत है सहज भाव की, नम्रता की और सामान्य जनों से सीखने की उत्सुकता की।)

स्रोत : इण्डोनेशिया की तोरोजा लोक कथायें
सम्पादक (अफवानी सोइबियात्तोरो और मनेल रत्नातुंगा)

पाठक का उत्तर

यदि विशेषज्ञ इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाया तो उसका गला काट दिया जायेगा। समय अवधि समाप्त होने को थी और विशेषज्ञ अभी तक उत्तर नहीं ढूंढ पाये थे। निराश होकर उसने आत्महत्या करने का निश्चय किया। वो डूबने के लिये नदी के पास गया और वहां उसने कुछ आम लोगों को आपस में बातचीत करते हुए सुना। वे कह रहे थे, राजा कितना बेवकूफ है, उसको यह भी नहीं मालूम कि उसे दोनो बत्तखों को पानी के पास छोड़ देना चाहिये। जो पहले पानी में कूदेगा वही नर है और यह कह कर, वे जोर से हँस पड़े। दूसरी समस्या भी कोई खास नहीं है। यदि काली लकड़ी के डण्डे को पानी में डालोगे, तो भारी हिस्सा पहले पानी में डूबेगा और जो हिस्सा हलका है, ऊपर रहेगा।

घंटी किसने बजाई?

एक बार एक लकड़हारा जंगल में लकड़ी काटने के लिये जा रहा था। उसने देखा कि झाड़ियों के आसपास दो तीतर घबराहट की अवस्था में अपने पंख तेजी से फड़फड़ा रहे हैं। लकड़हारे ने पास जाकर देखा कि एक सांप उनके अण्डों पर फन फैला कर बैठा है। लकड़हारे ने सांप को इतना मारा कि सांप ने वही दम तोड़ दिया।

काफी समय बाद लकड़हारा फिर उसी जंगल से गुजरा। उस रोज़ वह रास्ता भूल गया और अंधेरा होने पर एक झोपड़ी के सामने रुका।

उसने दरवाजा खटखटाया । बहुत सुन्दर लड़की ने उसका स्वागत किया और स्वादिष्ट भोजन भी कराया। लकड़हारे ने लड़की से पूछा क्या तुम यहां अकेली रहती हो या किसी का इन्तजार कर रही हो? लकड़हारे के पूछते-पूछते लड़की ने अपना रूप बदल लिया और कहने लगी -मैं वही सांप हूं जिसको तुमने दस वर्ष पहले छड़ी से मार डाला था। इस पर लकड़हारे ने कहा, मैं तो तीतर के अण्डों को बचाना चाहता था। तुम्हें जान से मारने का मेरा कोई उद्देश्य नहीं था। मुझे माफ कर दो।

लड़की ने कुछ सोचकर कहा, मैं तुम्हें एक शर्त पर छोड़ सकती हूं। सामने पहाड़ की चोटी पर एक सुनसान पुराना मंदिर है और वहां पर एक बड़ी घंटी टंगी है। यदि तुम यहीं पर बैठे-बैठे वह घंटी बजा दोगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगी। इस पर लकड़हारा रोकर कहने लगा कि यह तो असंभव है। इस पर लड़की ने कहा ठीक है अब मरने के लिये तैयार हो जाओ और उसने अपना भयानक सांप वाला रूप दिखा दिया। जैसे ही वह लकड़हारे को मारने के लिये बढ़ी तभी मंदिर की घंटी बज उठी और वायदे के अनुसार लड़की ने लकड़हारे को छोड़ दिया। मगर घंटी किसने बजाई?

(यह पहेली कोरिया की लोककथाओं में से चुनी गयी है। इस पहेली को सुलझाने में पाठक अपना योगदान दें।)

पाठक का उत्तर

अगले दिन जब लकडहारा पहाड़ पर चढ़ा तो उसे दो पक्षी मंदिर में मरे हुए मिले। यह दोनों पक्षी वही थे जिनके अण्डों को उसने सांप से बचाया था। उन्होंने अपने सिर को घंटी से मार-मार कर अपने रक्षक को बचाया था।

आंवला किसने खाया?

बहुत समय पहले तमिलनाडु के उत्तर भाग में अथियामान नाम का एक राजा राज्य करता था। उसकी राजधानी का नाम था थाकादुर। अथियामान के मंत्रिमंडल में अलियार नाम की पहली महिला मंत्री थी। अलियार को उसकी विलक्षण बुद्धि और सबसे प्रतिभाशाली होने के कारण राजा ने अपने मंत्रिमंडल में शामिल किया था।

एक दिन एक सिपाही राजा के दरबार में हाजिर हुआ। वह अपने साथ एक अनोखा उपहार राजा के लिये लाया। दरअसल सिपाही अपने

साथ बड़े आकार के आंवले का फल लाया था। यह आंवला विशेष पेड़ से तोड़ा गया था जो कि १२ वर्ष में केवल एक ही बार फल देता था। आंवले की एक और विशेषता थी कि जो व्यक्ति यह आंवला खायेगा, वह पूर्णतः स्वस्थ दीर्घायु हो जायेगा। राजा ने यह उपहार बहुत खुशी से ग्रहण कर लिया।

राजा ने उपहार तो ले लिया मगर असमंजस में पड़ गया कि यह फल वह स्वयं खाये या किसी ओर को खाने को दे। आखिर राजा ने क्या किया?

पाठक का उत्तर

पाठको, राजा ने सोचा कि अलियार, जो कि एक कवियत्री भी थी, चितंक व विलक्षण प्रतिभावान थी, इस फल की अधिकारी थी। यह भी एक सोचने का तरीका है, जीने का तरीका है। जिससे आज भी हम चाहें तो, कुछ सीख सकतें हैं।

ढाई किलो दाने क्यों?

राजस्थान के बहुत से गांवों में ऐसी जमीन का टुकड़ा होता है जो सभी गांव-वासियों की साझी सम्पत्ति होती है। इस प्रकार की जमीन को 'ओरन' कहते हैं। ओरन को ईश्वर या भगवान की जमीन मानते हैं। इस लिये धार्मिक पर्वों पर ओरन में घास, पेड़-पौधे लगाये जाते हैं। चूंकि ओरन ईश्वरीय प्रसाद है, इसलिये इस जमीन पर उगे पेड़-पौधों और घास को काटना भी एक दण्डनीय अपराध माना जाता है ।

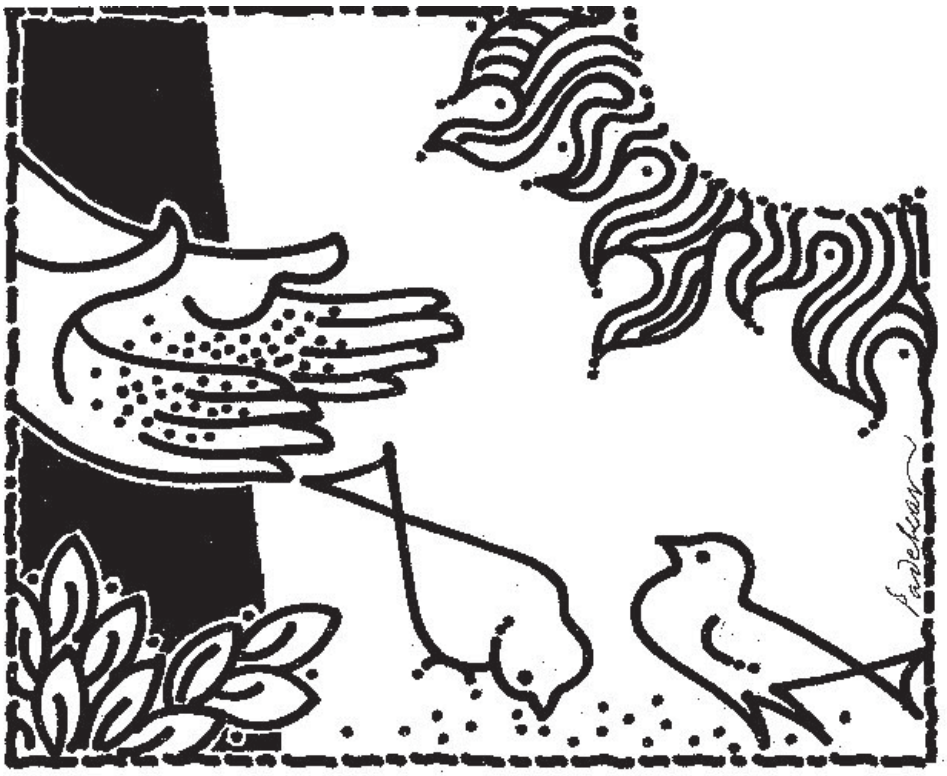

एक दिन गांव में पंचायत बुलाई गयी, जिसमें यह तय किया गया कि यदि कोई व्यक्ति ओरन (साझी) जमीन पर पेड़ काटते हुए पकड़ा जायेगा तो उसे क्या सजा होनी चाहिए? पंचों के बीच बहुत देर तक लम्बी बहस चली और अंत में यह तय हुआ कि ओरन पर पेड़ काटने वाले दोषी को सजा के रुप में नंगे पैर खड़े होकर भरी दोपहर में पक्षियों को ढाई किलोग्राम दाने खिलाने होंगे।

पेड़ काटने वाले को जलती रेत पर खड़ा रखने की सजा तो समझ आई, परन्तु ढाई किलो दाने ही पक्षियों को खिलाने का क्या अर्थ है?

(क्या हमारे पाठक इस गुत्थी को सुलझा पायेंगे? यदि हां, तो अपने उत्तर हमें लिख भेजें। चुने हुए पत्रों को हम साभार प्रकाशित करेंगे।)

जाल क्यों टूटा?

कनाडा के पश्चिमी भाग में चीयाकमस नदी बहती है जिसके किनारे स्कूयसिश जाति के आदिवासी लोग रहते थे। नदी से मछली पकड़ कर उनका काम चल जाता था। कुछ ऐसा था कि बाढ़ आ जाने की स्थिति में भी नदी में मछलियों की कोई कमी न रहती थी। चिन्ता सिर्फ सर्दियों की होती थी, क्योंकि तापमान कम होने के फलस्वरुप नदी जम जाती थी।

इस समस्या से निपटने के लिए लोग गर्मियों में ही पूरी सर्दियों की मछली की आवश्यकता को जमा कर लेते थे। जैसे सर्दियाँ खत्म होती

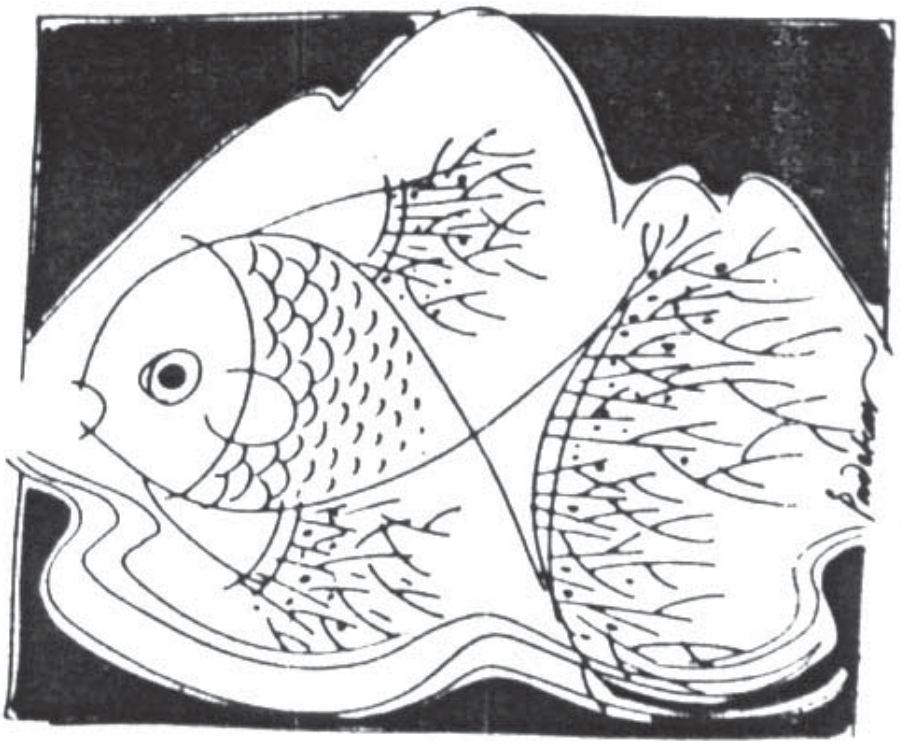

थीं, सामान्य जीवन लौट आता था और नदी में फिर से मछलियाँ भर जाती थीं।

लेकिन एक बार गर्मियों के मौसम में एक अजीब बात हुई। एक व्यक्ति द्वारा सीडार की लकड़ी से बने मजबूत जाल को पानी में डालने पर ढेर सारी मछलियाँ उसकी पकड़ में आ गयीं। मछलियों को टोकरी में भर वह व्यक्ति घर की ओर चलने के लिए मुड़ा। लेकिन चलने से पहले उसने देखा कि पानी में अभी भी किनारे पर मछलियों में कोई कमी न आई थी। फिर क्या था, उसने एक बार फिर नदी में जाल बिछा दिया।

काफी देर बाद जब उसने जाल नदी से निकाला तो वह दंग रह गया। एक तो जाल नष्ट हो चुका था, दूसरे उसमें कूड़ा व पेड़-पौधे भरे पड़े थे। जब उसने मुड़कर टोकरी की ओर देखा तो हैरत में पड़ गया। टोकरी में मछलियों की जगह कूड़ा व पेड़-पौधे भरे थे। वह व्यक्ति असमंजस में पड़ गया कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि जाल भी टूट गया और मछलियाँ भी चली गई।

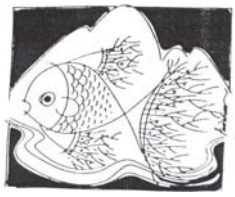

(पाठकों से अनुरोध है कि उस व्यक्ति की गुत्थी सुलझायें? इस घटना से हमारे समाज व उस व्यक्ति को क्या संदेश मिलता है?)

ऐसी क्या कसौटी थी?

एक रानी जिसका नाम सरस्वती देवी था। वह अपने नाम के अनुरूप सुन्दरता व बुद्धिमता के लिये तो प्रसिद्ध थी ही, साथ ही प्रकृति के प्रति उसके आदर और प्रेम के किस्से भी मशहूर थे। राज्य की सीमा पर रानी की अपनी जमीन थी, जो कि बंजर थी। वह उसका कोई अच्छा उपयोग करना चाहती थी।

एक दिन रानी ने अपने राज्य में घोषणा करायी कि जो भी व्यक्ति या माली उस जमीन को हरा-भरा बनाने में सबसे अच्छी सूझबूझ

लगायेगा उस माली को इनाम दिया जायेगा। घोषणापत्र बाँट दिये और उन्हें एक वर्ष का समय दिया बंजर भूमि को खुशहाल बनाने के लिए।

रानी ठीक एक वर्ष के बाद राज्य की सीमा पर स्थित उस बंजर जमीन के पास पहुंची तो हैरान हो गयी। दूर-दूर तक बंजर जमीन का अता-पता नहीं था और उस जगह पर सुन्दर फूल, पेड़ व पक्षी यानी प्रकृति के सभी रंग मौजूद थे।

जहां एक प्रतियोगी ने गुलाबों के पौधों से अपना हिस्सा सजाया, तो वहां दूसरे किसी ने चमेली की खुशबू बिखेर दी और तीसरे ने तो गेंदे के फूलों को लगाकर वसंत को ही बुला लिया। लेकिन रानी ने उस प्रतियोगी को इनाम के लिये चुना जिसने अपनी जमीन के टुकड़े पर जंगली पेड़-पौधे लगाये थे। रानी का फैसला जानकर सभी दंग रह गये और सोचने लगे आखिर रानी ने पुरस्कार देने के लिये ऐसी किस कसौटी पर उस व्यक्ति को खरा पाया?

(क्या आप बता सकते हैं कि रानी ने ऐसे जमीन के टुकड़े के माली को ही पुरस्कृत क्यों किया? अपने उत्तर- विचार शीघ्र भिजवायें)

यह कैसा सौदा?

प्रीतम एक छोटा किसान था और उसके पास मात्र एक बैल था। बड़ी मुश्किल से कहीं दो वक्त का गुजारा कर पाता था। जिस वर्ष उसके गांव में सूखा पड़ा, उसकी कमजोर आर्थिक स्थिति चरमरा गई। साहूकार अपना ब्याज लेने की गुहार करने लगे। प्रीतम ने जैसे - तैसे स्थिति को संभाले रखा परन्तु सूखा लगातार तीन वर्ष चला और प्रीतम की सभी तरकीबें दम तोड़ने लगीं । बैल ही उसके जीवन का एकमात्र सहारा बचा था। गांव के हाट पर बैल का सौदा करने निकल पड़ा। प्रीतम बैल को एक पेड़ से बांध कर खरीददार के इन्तजार में बैठ

गया। एक खरीददार ने बैल को देखकर १०,००० रुपये की पेशकश की । क्या तुम धूम्रपान करते हो? प्रीतम ने खरीददार से पूछा। खरीददार के नकारने पर प्रीतम ने उसे बैल न बेचने का फैसला किया। आसपास खड़े लोगों ने सोचा प्रीतम ने ज्यादा कीमत पर बैल बेचने का अच्छा बहाना ढूंढा है।

लेकिन सभी तब बड़े हैरान हुए जब प्रीतम ने बैल का सौदा अगले खरीददार से किया। हालांकि उक्त खरीददार ने केवल ५,००० रुपये की ही पेशकश की थी परन्तु उसके धूम्रपान करने के कारण प्रीतम ने बैल उसे बेच दिया।

क्या आप बताना चाहेंगे कि धूम्रपान करने वाले व कम कीमत देने वाले को ही प्रीतम ने अपना बैल क्यों बेचा? हम धूम्रपान का कतई समर्थन नहीं करते, पर प्रीतम का संकेत काफी सारगर्भित है। सोचिये जरा!

पाठक का उत्तर

किसान ने सभंवतः सोचा होगा कि जो धूम्रपान नहीं करेगा, वो बैल को आराम का मौका ही नहीं देगा। यह सही है कि धूम्रपान अच्छी आदत नहीं है, लेकिन बैल के आराम की भी तो चिंता करनी जरूरी है। कोई और तरीका आपके मन में बैल को आराम देने के बारे में हो तो लिखियेगा।

ज़िन्दगी का मकड़जाल

एक किसान था। वह मक्के की खेती करता था। वह कई सालों से राज्य के सालाना कृषि मेले में मक्के की श्रेष्ठ प्रजाति का पुरस्कार जीत रहा था। एक दिन स्थानीय समाचार पत्र ने उस किसान से साक्षात्कार करने का निश्चय किया। पत्रकार को कहीं से पता चला कि वह किसान मक्के की श्रेष्ठ प्रजाति के बीज अपने साथी किसानों को उगाने के लिए देता हैं। पत्रकार को बेहद आश्चर्य हुआ। उसने किसान से पूछा कि मक्के की इसी प्रजाति के लिए तो वह प्रतिवर्ष पुरस्कृत होता है, तब वह यह बीज अपने साथी किसानों को क्यों देता है? इस तरह तो अन्य किसान भी उसके साथ प्रतियोगिता कर सकते है। पत्रकार ने पूछा कि आखिर वह उनकी सहायता क्यों करना चाहता है।

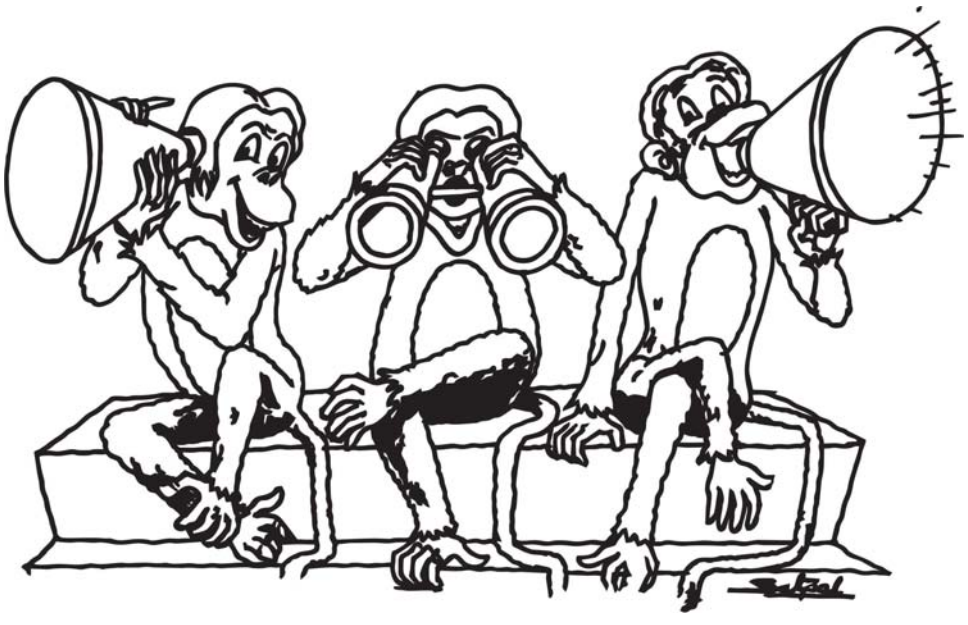

किसान को इस प्रश्न पर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने पलट कर पत्रकार से पूछा कि क्या उसने क्रॉस पॉलीनेशन (संकर परागण) के बारे में नहीं सुना? हवा के द्वारा मक्के के परागकण इधर उधर सभी खेतों तक पहुंच जाते हैं। यदि मेरे पड़ोसी खेत में अच्छी किस्म का मक्का नहीं उगा हैं, संकर परागण द्वारा इसका असर मेरे खेत पर भी पड़ेगा। यदि मैं श्रेष्ठ किस्म का मक्का उगाना चाहता हूं तो मेरे पड़ोसी खेतों में उच्चतम स्तर के मक्के की बुआई होनी चाहिए।

यह है साझा जीवन। जिस तरह वह किसान अपने साथी किसानों के खेतों में उगाये जा रहे मक्के की गुणवत्ता सुधार कर ही अपने खेत में एक स्तरीय बुआई कर सकता है। उसी तरह हम भी अपना जीवन स्तर तब तक नहीं सुधार सकते जब तक आसपास के लोगों के जीवन स्तर को सुधारने की कोशिश नहीं करेंगे।

तभी तो एक कवि ने कहा है—

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से,

राष्ट्र स्वयं सुधरेगा.....

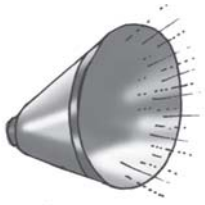

(स्रोत : यह कट्हानी जैरस बैण्डर की पुस्तक हाऊ टू टॉक बैल से ली गई है। (प्रकाशकः मैक ग्रो हिल बुक कम्पनी, न्यूयॉर्क) हमें यह कहानी भेजने के लिए हम अपने पुराने सहयोगी शैलेष शुक्ला के आभारी हैं।)

दादी मां की कहानी : काम के बदले धान

बुद्धिमान लोग जिन्दगी से जुड़े पाठ बहुत अनूठे तरीकों से पढ़ाते है। एक गांव में एक बूढ़ी औरत रहती थी। वह अपने स्वर्गीय पति की याद में प्रतिवर्ष लोगों को भोजन करवाती थी। इस बार उसने निश्चय किया कि वह भोजन से पूर्व हाथ धुलवाने का कार्य स्वयं करेगी। हाथ धुलवाते हुए वह सभी लोगों के हाथ बहुत ध्यान से देख रही थी और कुछ लोगों को बरामदे में बिठा रही थी और कुछ

लोगों को घर के अन्दर भेज रही थी। गांव के एक धनीमानी किसान को यह बात समझ नहीं आयी। आखिरकार उसने पूछ ही लिया - मां, आप कुछ लोगों को बरामदे में भेज रही हो जब कि कुछ लोगों को घर के अन्दर बुला रही हो। यह सुनकर महिला हंसी और बोली - साधारण सी बात है, लोगों के हाथ धुलवाते हुए मैं उनके हाथ गौर से देख रही थी। जिन लोगों की हथेलियां अंगुलियों के नीचे फूली हुई हैं, वे लोग निश्चित रुप से मेहनती हैं, उन्हें घर में बिठाया गया। जो लोग बरामदे में बैठे हैं, वे अपने काम स्वयं करने की बजाय नौकरों पर हुक्म चलाते हैं।

अगली बार, जब आप मेहमानों को खाने पर बुलायें तो इसे भी आजमायें!

स्रोत : बचपन में सुनी एक लोक कथा पर आधारित

(क्या आप नहीं चाहेंगे यहाँ पर आपके जीवन में सुनी कोई लघु कथा छपे, भेजिये तुरंत)

हम जहां हैं, पर क्यों हैं वहां?

ऊँट के बच्चे ने अपनी माँ से सवाल किया कि हमारे पेट का आकार इतना बड़ा क्यों होता है? माँ ने सहजता से जवाब देते हुए कहा कि, "बेटे, रेगिस्तान में पानी की कमी होती है, इतने बड़े आकार का पेट इसलिए होता है कि हम ज्यादा से ज्यादा पानी एक ही बार में पी सकें। बच्चा पुनः एक और सवाल पूछ बैठा, "माँ, हमारे पैर के तलवे इतने चपटे क्यों हैं?" माँ बोली "बेटा, हमें रेगिस्तान में तेज भागने में यही चपटे तलवे मदद करते हैं, तभी तो हमें रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है।" बच्चे ने एक और सवाल दाग दिया, "माँ,

हमारी गर्दन इतनी लम्बी क्यों और पीठ पर कूबड़ भी क्यों?" माँ बोली "बेटा गर्दन इसलिए लम्बी होती है कि हम ऊँचे पेड़ों से पत्तियाँ आसानी से प्राप्त कर सकें तथा पीठ पर कूबड़ इसलिए होता है कि इसी कूबड़ में वसा व कार्बोहाइड्रेट संचित होती है, रेगिस्तान में लम्बे समय तक भोजन न मिलने से हमें इन्हीं से ऊर्जा प्राप्त होती है" बच्चा काफी संतुष्ट हुआ किन्तु चुपचाप सोचता रहा। माँ ने बच्चे की मनःस्थिति जानने का प्रयास किया। माँ पूछ बैठी कि "बेटा, क्या सोच रहे हो?" ऊँट का बच्चा बड़ी आसानी से कह गया कि "माँ, जब हममें इतने सारे गुण हैं तो हम इस चिड़ियाघर में क्या कर रहे हैं?" हम अपनी प्रतिभाओं को पहचान नहीं पाते तथा लक्ष्यविहीन रह जाते हैं। लक्ष्य प्राप्ति के लिए अपनी प्रतिभा व चातुर्य की पहचान करना नितांत आवश्यक है, ऊँट के बच्चे की सोच सही थी।

दुनिया में कोई व्यक्ति हमें जितना जानता है, उससे ज्यादा हमें स्वयं को जानना समझना है...संपादक।

स्रोत : राजस्थान की पारंपरिक लोक कथा

(क्या आप नहीं चाहेंगे यहाँ पर आपके जीवन में सुनी कोई लघु कथा छपे? भेजिये तुरंत)

क्या अधिक ज्ञान, कम ज्ञान से हमेशा अच्छा होता है!!

सभी संस्कृतियों में, ज्यादा से ज्यादा सीखना, अनजानी बातों के लिये प्रश्न पूछना अच्छा माना जाता है। इस परम्परा के परिणामस्वरूप एक पीढी से दूसरी पीढ़ी में ज्ञान का हस्तांतरण होता रहता है। इस हस्तांतरण के दौरान ज्ञान का संवर्धन भी होता रहता है और हर एक पीढ़ी समृद्ध जीवनशैली को अपनाती रहती है। इसी परम्परा के प्रति गंभीर सवाल करने वाली कहानी हमारे ध्यान में आयी है जो हमें सोचने को मजबूर करती है।

कुलान राज्य का राजा थोड़ा सनकी था। उसने सोचा कि जब हम ज्यादा जानने की कोशिश करते हैं, तो हम चिंतन-मनन में सीमित रह जाते हैं लेकिन उसमें से कोई फलदायी परिणाम नहीं मिलता है। राजा ने पाया कि अपनी विवेक बुद्धि व सूझबूझ से काम करने वाले कारीगर जैसे कि बढ़ई, सुनार, लुहार, माली इत्यादि लोगों में जीवन की समस्याओं से निपटने का एक अलग ही अंदाज़ होता है। वे इन समस्याओं में कभी नहीं फँसते हैं और न ही कभी रुकते हैं। जब कि चिंतन करने वाले व्यक्तियों की यह प्रवृत्ति रहती है और वे ज्यादा से ज्यादा जानने के कारण उस प्रवृत्ति में इतने डूब जाते हैं कि वे एक दूसरे के साथ-साथ समाज से भी कट जाते हैं। एक दिन उसने यह आदेश दिया कि वे सभी लोग जो ज्यादा ज्ञान सीखने में व्यस्त हैं, केवल उन्हें ही कर (टैक्स) देना होगा। पूरे साम्राज्य में

उत्तेजना की आग फैल गई। सभी ने राजा को कोसा और कहा कि राजा की बुद्धि भ्रष्ट हो गई। बुद्धिजीवियों ने शिकायत की, "ऐसा करने से हमारा राज्य ऐसे लोगों के हाथों से पराजित होगा, जो हमेशा नये शोध को प्रोत्साहित करते हैं व शोध करते रहते हैं।"

कुलान का राजा बुद्धिजीवियों और सर्जनशील कारीगर वर्ग का समुदायों के आधार पर पृथक्करण नहीं होने देना चाहता था। राजा ने कहा, "मैं परिवर्तन चाहता हूँ इसलिए मैंने यह निर्णय लिया है।" इस समग्र घटना से एक किसान को बहुत मजेदार बात सूझी और उसने बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से इस पर अपनी बात रखने का निर्णय लिया। उसने कहा, "आदरणीय महाराज, आप गलत हैं! ज्यादा जानने से समुदायों में पृथक्करण नहीं हो सकता। यह तो ज्यादा जानने, कम अनुभव करने एवं कम से कम कार्य करने की क्रिया है जिससे कि समस्यायें ही पैदा हो सकती हैं। जब कि आप सही अर्थ में समाज में परिवर्तन चाहते हैं तो आपको उन लोगों को वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिये जो जानते हैं, एहसास करते हैं तथा अनुभव किये गये तथ्यों के लिये कुछ करते भी हैं।"

किसान के ऐसे जवाब के साथ ही कुलान साम्राज्य में एक बेचैनी शुरु हो गयी। कदाचित ऐसी ही बेचैनी थी जिसके फलस्वरूप हनी बी नेटवर्क की उत्पत्ति हुई।

जब बोझ बने बाधा : दाना छोड़िये, बुद्धि का सहारा लीजिये

एक बार एक किसान ने एक चींटी को भोजन की तलाश करते हुए देखा। भोजन की खोज में बहुत सारा समय लगाने एवं मेहनत करने के बाद, अंत में उसे एक दाना मिल गया। इसे अपनी पीठ पर रखकर चलते-चलते उसे अचानक अपने रास्ते में एक गहरी दरार मिली। दरार के बड़े आकार के कारण अनेक प्रयास के बाद भी

वह इसे पार न कर सकी। तभी चींटी के दिमाग में एक विचार आया, चींटी ने अपनी पीठ पर लदा दाना उस दरार पर पुल की भाँति आर-पार रख दिया तथा उसने बड़ी आसानी से दरार को पार कर लिया।

चींटी अब क्या करेगी? क्या वह उस दाने को वापस उठायेगी जिसे वह इतनी दूर से अब तक उठाकर लायी है? क्या वह उस दाने को यूँ ही छोड़ देगी, ताकि अन्य चींटियाँ इस समस्या के समाधान खोजने की चिंता किए बिना आराम से इसे पार कर सकें? जब हमारा जीवन दूसरों के चलने हेतु रास्ता बनाता है, तो यह मनोवृत्ति की परम स्थिति है। हम नहीं जानते किन्तु तब यदि चींटी वह दाना उठा भी लेती है, तब भी क्या वह इसके पीछे बुद्धिमत्ता नहीं छोड़ जाती?

लेखक : श्री शाहीन हिलाल, शाहीन कॉलोनी, क्रीरी, कश्मीर।

यदि आप हमारी विवेचना से सहमत नहीं हैं, तो कृपया अपने विचार हमे भेजिये।

दृश्य के पार

दो गंभीर रुप से बीमार आदमी अस्पताल के एक ही कमरे में भर्ती थे। एक आदमी को हर रोज़ दोपहर के बाद बिस्तर पर एक घंटा बैठने की अनुमति थी ताकि उसके फेफड़ों से पानी निकल सके। उसका बिस्तर कमरे की एकमात्र खिड़की के बगल में ही था। दूसरे आदमी को पूरे समय सीधे ही लेटे रहना होता था। दोनों आदमी घंटों

तक बतियाते रहते थे। उनकी बातों के विषय उनके घर, उनके काम, फौजी सेवा के दिन और मस्ती के बारे में होते। प्रत्येक अपराह्न खिड़की के पास वाला आदमी जब बिस्तर पर बैठ पाता तो वह पूरे समय खिड़की से बाहर दिखने वाले नजारों का वर्णन अपने साथी मरीज को सुनाता। उस एक घंटे में खिड़की से दूर बिस्तर पर लेटे आदमी की अपनी दुनिया बाहर की दुनिया के रंगों व क्रियाकलापों से एक नया विस्तार और प्राणवायु प्राप्त करती। खिड़की के बाहर एक सुंदर झील वाला पार्क था। पानी में बत्तखें और हंस अठखेलियां करते और बच्चे अपनी नाव चलाते थे। युवा प्रेमी इंद्रधनुष के रंगों वाले फूलों के बीच बाँहें डाले टहलते थे।

खिड़की के पास वाला आदमी जब बाहरी दुनिया का अति सुंदर वर्णन करता था तो दूसरे बिस्तर पर लेटे आदमी की आँखें बंद होतीं और वह इस दृश्य की कल्पना करता रहता था। ऐसे ही दिन बीतते रहे। एक सुबह जब नर्स उनके नहाने के लिए पानी लेकर आयी तो उसने पाया कि खिड़की के पास वाला आदमी नींद में ही चल बसा था। दुखी मन से नर्स ने अस्पताल के सहायकों से उस मृत शरीर को वहाँ से ले जाने को कहा।

इस घटना से उबरने के बाद ही दूसरे आदमी ने खिड़की के पास अपना बिस्तर लगाने की इच्छा व्यक्त की। नर्स ने सहर्ष ऐसा कर दिया और यह जानकर कि इस जगह पर वह आराम से है नर्स ने उसे अकेला छोड़ दिया। आदमी ने कष्ट के साथ धीरे-धीरे अपनी एक कोहनी बिस्तर पर टिकायी ताकि बाहर की दुनिया की एक झलक देख सके। आखिरकार उसे दुनिया को खुद अपनी आँखों से देखने की खुशी जो मिलने वाली थी।

वह पूरी शक्ति लगाकर खिड़की से बाहर देखने के लिए धीरे से मुड़ा। खिड़की के बाहर एक खाली दीवार थी। उस आदमी ने नर्स से पूछा कि ऐसी क्या बात थी कि जिसने उसके दिवंगत साथी को खिड़की के बाहर का इतना अदभुत वर्णन करने को बाध्य किया।

प्रिय पाठको, आप क्या सोचते हैं कि नर्स ने क्या उत्तर दिया होगा? आत्ममंथन करें क्या हम लोगों में वह जिज्ञासा है कि जो दिखाई पड़ रहा है, उसे बेधते हुए उसके पार देख सकें? यथास्थिति से ही संतोष करें या फिर नवप्रवर्तनों की संभावनाएँ तलाशें? खिड़की के बाहर का दृश्य हमें कैसा दिखाई देता है? उम्मीद के बीज हम कहाँ बोते है?

अनथक अन्वेषण....

एक किसान ने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा कि क्या इस वर्ष जैतून फलेंगे?

"हाँ, वे फलेंगे," मुल्ला ने उत्तर दिया।

"तुम कैसे जानते हो?"

"मैं बस जानता हूँ।"

कुछ समय बाद उसी आदमी ने देखा कि नसरुद्दीन दुलकी चाल वाले अपने गधे के साथ समुद्र तट पर है। वह बहकर आयी जलावन लकड़ियों की तलाश में था।
"यहाँ लकड़ियाँ नहीं हैं, मुल्ला, मैं देख चुका हूँ" उसने कहा। कुछ घण्टों बाद उस आदमी को मुल्ला नसरुद्दीन अपने घर के रास्ते पर जाता दिखा। तमाम कोशिशों के बाद भी बिना ईंधन के मुल्ला खाली हाथ जा रहा था।

"तुम तो व्यावहारिक ज्ञान के धनी हो। जो यह बता सकता है कि जैतून का पेड़ फलेगा या नहीं, फिर वह यह क्यों नहीं बता पाता कि समुद्रतट पर लकड़ियाँ नहीं हैं?" "क्या अवश्यंभावी है मैं जानता हूँ," नसरुद्दीन ने कहा, "लेकिन क्या कुछ संभव है, मैं नहीं जानता।" *(Source: http://www.spiritoftrees.org/folktales/howenasrudin_trees.html)*

मुल्ला नसरुद्दीन द्वारा समुद्र किनारे जलावन लकड़ी की खोजबीन के गहरे निहितार्थ हैं क्योंकि हमें नहीं पता होता कि हमारी यात्रा क्या परिणाम सामने लेकर आयेगी और इसीलिए ऐसी यात्रा अधिक अर्थपूर्ण हो जाती है। वर्तमान अंक का मुख्यपृष्ठ इसी ओर इंगित करता है कि हमारे सामने नानाविध विकल्पों का पिटारा है। जिनके बारे में हम स्वयं बहुत कुछ नहीं जानते या जानते भी हैं तो आगे चलकर परिस्थितियाँ क्या मोड़ लेंगी, इसके बारे में कोई भी पूर्वानुमान लगाना मुश्किल होता है। फिर भी प्रयास तो बिना रुके चलते ही रहना चाहिए। क्या आपको नहीं लगता कि प्रायः अनिश्चित समाधानों की खोज उपलब्ध या ज्ञात निश्चित समाधानों से अधिक रोमांचकारी होती है। आखिर क्यों नहीं तमाम बातों की परवाह किये बिना नवप्रवर्तक अपनी राह पर आगे बढ़ते रहें?

वेदना क्यूं हुई विविधता में?

सारे बच्चे पौधों के नमूने ले आए थे। लेकिन एक छोटी सी लड़की द्वारा लाए गए पौधों के नमूने कुछ अलग ही कहानी कह रहे थे। यह २१वीं शोधयात्रा के दौरान की बात है। यात्रा विशाखापट्टनम की अरकुवैली में पहुँची थी। विभिन्न गाँवों के बच्चों के बीच जैवविविधता प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिस गाँव की यह घटना है वह दूसरे गाँवों जैसा न था। भूस्खलन से पूरे गाँव को जबरदस्त नुकसान हुआ था, कई लोग मारे गए थे। पूरा गाँव मूल स्थान से करीब

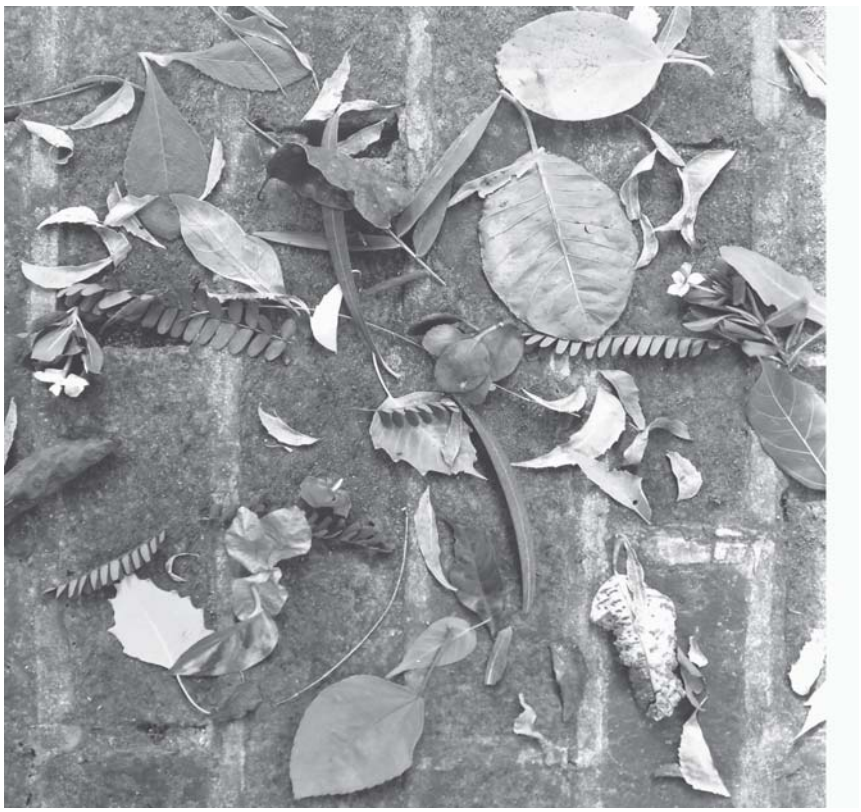

एक किलोमीटर की दूरी पर जाकर बस गया था। सभी लोगों के आपस में मिलने-जुलने की एक जगह पर हम सीढ़ियों पर बैठे थे और बच्चों का इंतजार कर रहे थे। कुछ समय बाद एक-एक करके बच्चे आने लगे और उन्होंने अपने-अपने पौधों के नमूने दिखाए। बच्चों मे कुछ के साथ उनकी मां और कुछ के साथ पिता भी आये थे। अधिकांश बच्चे एक जैसे ही नमूने लाए थे।

जब रोशनी की बारी आई तो हम सभी नमूनों की विविधता से आश्चर्यचकित थे। यह आठ वर्षीय छात्रा अलग-अलग प्रकार की २५ पत्तियाँ लाई थी। रोशनी द्वारा लाए गए ये नमूने दर्जनों बच्चों से एकदम भिन्न थे। हमने रोशनी के माता-पिता से मिलने की उत्सुकता दिखाई। जब हमने रोशनी से उन्हें बुलाने को कहा तो वह चुपचाप खड़ी रही। उसकी आँखों में आँसू थे। हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। तभी वहाँ खड़ी एक महिला ने हमें बताया कि रोशनी की माँ भूस्खलन में मारी गई थी और उसका बाप उसे अकेला छोड़ दसरा ब्याह रचाने चला गया। रोशनी की परवरिश उसके दादा-दादी कर रहे है।

क्या उसकी जैवविविधता की इतनी अधिक जानकारी के पीछे यही कारण है?

अज्ञात का भय

एक जेन शिक्षक के पास एक विद्यार्थी गया। विद्यार्थी ने पूछा कि क्या वह उसे अपना शिष्य स्वीकार करेंगे। जेन शिक्षक ने कहा कि स्वीकारने से पहले उसे एक परीक्षा से गुजरना होगा। शिक्षक उसे एक दरवाजे के पास ले गया और कहा, इस दरवाजे के पीछे एक अंधेरा कक्ष है जिसमें फलो के अर्क की अनेक बोतलें रखी हुई हैं। यदि तुम उनमें से एक भी बोतल को बिना गिराए दूसरे दरवाजे तक पहुँचने में सफल रहे तो मैं तुम्हें अपना शिष्य बना लूगा। विद्यार्थी ने अंधेरे कक्ष

में प्रवेश किया और कई घंटों बाद विजयपूर्वक दूसरे द्वार से बाहर निकला। शिक्षक ने बिना देर किए उसे अपने शिष्य के तौर पर अपना लिया। फिर शिक्षक ने कक्ष का द्वार खोला और कक्ष में रोशनी की। कक्ष पूरी तरह से खाली था। शिक्षक ने कहा, 'तुम्हारा अब तक का जीवन इसी प्रकार का रहा है'।

क्या हम हर समय अज्ञात से भयभीत नहीं रहते? अनजानी अनदेखी काल्पनिक बाधाओं से प्रभावित होते रहते हैं। दरअसल, इस तरह हम अपनी जड़ता का औचित्य सिद्ध कर रहे होते हैं जबकि हमारे सामने एक स्पष्ट और खुली राह होती है। नवप्रवर्तनात्मक समाधानों की खोज में लगे लोग शायद ऐसे अज्ञात भय, काल्पनिक अवरोधों या कहें प्रेतबाधाओं से पीड़ित नहीं होते होंगे।

केवल अपने लिए?

एक बार शिबी के राजा उशीनारा दुविधा में पड़ गये। एक कबूतर उनके पास आकर रक्षा की गुहार लगाने लगा। जैसे ही राजा ने उसकी रक्षा का वचन दिया तो एक बाज जो कबूतर का पीछा करते हुए वहाँ आ पहुँचा। उसने कहा, "अब मैं क्या खाऊँगा?" राजा ने बाज से कहा कि तुम इसे छोड़कर किसी दूसरे कबूतर को खा लो। बाज ने कहा यह तो सही नहीं है। बाज का तर्क था कि राजा इस कबूतर को दिया गया अपना वचन निभा सके, इसके लिए दूसरे कबूतरों की बलि

क्यों ली जाए। इस पर राजा ने बाज से आग्रह किया कि वह किसी अन्य पक्षी या जानवर को खा ले। बाज ने दलील दी कि यह तो सही नहीं है - राजा ने कबूतर को दिया गया वचन निभा सके इसके लिए क्यों किसी दूसरे पक्षी या जानवर की बलि ली जाए। *राजा ने क्या किया? वह क्या कर सकता था?*

हम इंसान अपने हितों और दूसरो के हितों की अदला-बदली चाहते हैं। यदि एक के बाद एक दुनिया से हम इंसानों के अलावा अन्य प्राणी लुप्त होने लगे तो, क्या यह दुनिया हमारे जीने लायक रह जाएगी? हो असकता है हम अनुमान लगा पाएं कि राजा ने क्या कहा होगा लेकिन क्या राजा का उत्तर हमारी सोच पर कोई प्रभाव डालेगा?

विभिन्न पक्षियों, कीटों, वृक्षों और यहाँ तक कि झीलों में पाए जाने वाले अनेकानेक अनूठे सूक्ष्मजीवों के अधिकारों के प्रति हमारी सोच इस बढ़ते शहरीकरण के दौर में महत्वपूर्ण है।

उत्तम होगी पहचान, अगर खुले रहें आँख-कान

जनवरी माह के जाड़े की एक सुबह वाशिंगटन डीसी में एक वायलिन वादक एक मेट्रो स्टेशन पर बैठा हुआ वायलिन बजा रहा था। वायलिन वादक ने वहाँ ४५ मिनट तक बैठकर अलग-अलग ६ धुनें बजाईं। उसे वहाँ बैठे तीन मिनट बीते थे कि एक अधेड़ आदमी उधर से गुजरा और उसका ध्यान इस संगीतज्ञ पर गया। उसकी चाल धीमी हुई, कुछ क्षणों के लिए वह रुका और फिर अचानक अपने कार्यलय पर पहुँचने की हड़बड़ी में आगे बढ़ गया। इसके एक मिनट बाद ही वायलिन वादक को इस दिन की पहली बख्शीश, पहला डॉलर मिला। एक महिला बख्शीश को उसके वायलिन केस

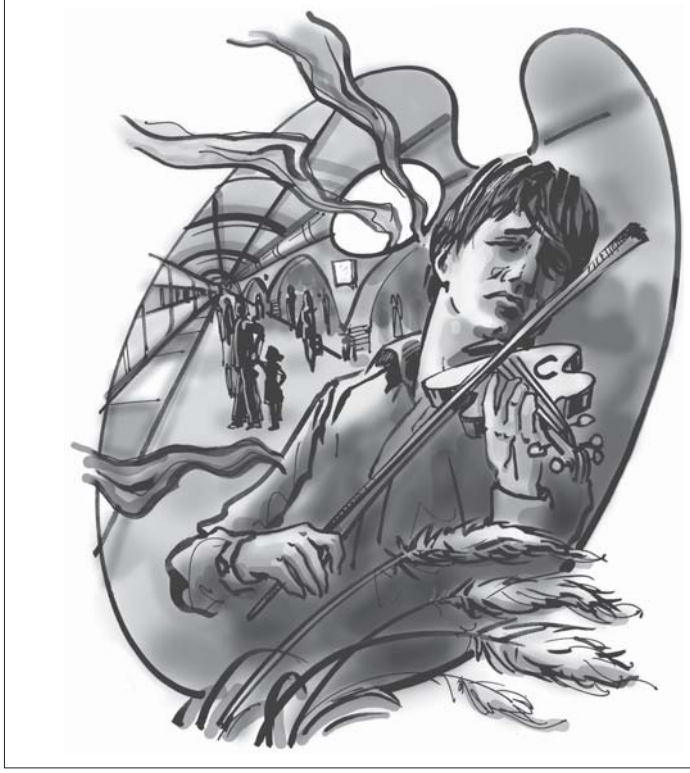

में लगभग फेंकते हुए आगे निकल गई। कुछ क्षणों बाद एक आदमी दीवार से टेक लगाए हुए उसे सुन रहा था। उसका ध्यान अपनी घड़ी पर गया और वह वहाँ से तेजी से निकल गया। जाहिर है उसे अपने काम पर पहुँचने में देर हो रही थी। इन सभी लोगों में सबसे ज्यादा जिसका ध्यान उस संगीतज्ञ पर गया, वह था एक ३ वर्ष का लड़का। उसकी माँ उसे हाथ पकड़कर खींचे ले जा रही थी लेकिन बच्चा बार-बार सिर घुमाकर वायलिन वादक को ही देख रहा था। आखिरकार माँ उसे वहाँ से खींच कर ले जाने में सफल रही और बच्चा उस संगीतज्ञ को नजरों से ओझल हो जाने तक देखता रहा। कई अन्य बच्चों के साथ भी यही हुआ। लेकिन बिना किसी अपवाद के उन सभी के माँ-बाप उन्हें वहाँ से खींच ले जाने में कामयाब रहे। इस संगीतज्ञ के ४५ मिनट वायलिन बजाने के दौरान केवल ६ लोग कुछ क्षण के लिए वहाँ रुके। लगभग २० लोगों ने अपनी सामान्य रफ्तार से चलते-चलते उसे बख्शीश दी। संगीतज्ञ के पास ३२ डॉलर इकट्ठा हो गए। जब उसने वायलिन वादन समाप्त किया और चारों ओर शांति छा गई, किसी ने उस पर गौर नहीं किया। न कोई वाह-वाह या सराहना के स्वर और न ही कोई पहचान की नज़र। कौन था यह वायलिन वादक? क्यों वह वहाँ पर था?

किसी ने इस बात को नहीं जाना लेकिन उस वायलिन वादक का नाम था - जोशुआ बेल, विश्व का एक सर्वोत्तम संगीतज्ञ। जोशुआ बेल ने अपने लगभग ३५ लाख डॉलर कीमत वाले वायलिन पर जो धुनें बजाईं वे अब तक की सबसे जटिल धुनों में से थीं। उपरोक्त भूमि रेलवे मार्ग में हुए इस कार्यक्रम से ठीक दो दिन पहले उनके एक संगीत कार्यक्रम के लिए लगभग सौ डॉलर प्रति टिकट के हिसाब से टिकट बिक चुके थे जो कि बोस्टन के एक थियेटर में होना था। यह एक सच्ची कहानी है। दरअसल यह पहले से तय था कि जोशुआ बेल गुमनाम ढंग से मेट्रो स्टेशन में वायलिन वादन करेंगे। 'द वाशिंगटन पोस्ट' ने लोगों की अनुभूति, आस्वाद और प्राथमिकताएं जानने के लिए एक सामाजिक प्रयोग के तहत इसे आयोजित किया था। आशय यह कि : क्या हम एक साधारण परिवेश में अनुपयुक्त समय में सौंदर्य का बोध कर पाते हैं? वह कौन सी चीज है जो हमें रुकने और सराहना करने के लिए प्रेरित करती है? ***क्या हम अप्रत्याशित संदर्भ में प्रतिभा की पहचान कर पाते हैं?*** *कैसे हम चीजों को देखने की एक सूक्ष्म नजर विकसित कर सकते हैं और उत्तम गुणों के पारखी बन सकते हैं? - संपा.*

स्रोत : urbanlegends.about.com/od/music/a/violinist_metro.htm

सृजनात्मकता के पथ की मुश्किलें

एक गाँव में एक मूर्तिकार रहता था। अपनी कला और हस्तकौशल के लिए वह पूरे इलाके में प्रसिद्ध था। उसका बेटा भी मूर्तिकार बनना चाहता था। लेकिन अपनी ही परेशानियों से घिरा मूर्तिकार न तो अपने बेटे के कला-कौशल पर ध्यान देता और न ही उसके मुँह से बेटे के लिए सराहना या प्रोत्साहन के कभी दो शब्द निकलते। इसके बावजूद बेटा हमेशा पिता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने का प्रयास करता रहता और पिता से प्रशंसा पाने के लिए लालायित रहता।

एक दिन दोपहर के समय बेटा घर के आँगन में जमीन खोदने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे वह जमीन में गड़ी कोई चीज निकालना चाहता हो। पिता का बरबस ही बेटे की इस अजीबोगरीब हरकत पर ध्यान चला गया। उसने बेटे को झिड़कते हुए कहा, 'तुम अब क्या करने लगे? थोड़ी देर चैन से नहीं बैठ सकते?' बेटे ने जवाब दिया, 'मुझे अभी-अभी एक बहुत सुंदर वस्तु दिखाई पड़ी है और मैं इसे बाहर निकालने के लिए खुदाई कर रहा हूँ।' यह बात सुन पिता के अंदर का मूर्तिकार जाग उठा और उसे उत्सुकता हुई। पिता खुदाई के काम में अपने बेटे का हाथ बँटाने लगा। दोनों ने मिलकर जमीन को खोदा और एक नर्तकी की सुंदर मूर्ति उनके हाथ लग गई। पिता इस मूर्ति को देखकर आश्चर्यचकित रह गया और बोला, 'बेटे, यह है कला। अद्‌भुत सुंदर और संपूर्ण। मैं चकित हूँ कि आखिर किस शिल्पी ने इसे बनाया होगा?' बेटा मुस्कराया। मुस्कान के पीछे एक गहरी टीस छिपी थी। बेटा अपने पिता का आभार व्यक्त करते हुए बोला, 'पिताजी, आज आपने मेरे जीवन को नया अर्थ प्रदान कर दिया।'

मूर्तिकार का बेटा, जिसने पत्थर पर नर्तकी की मूर्ति बनायी थी और फिर इसे जमीन में दबा दिया था। उन्हीं अहसासों से गुजरा जिन्हें आज भी अनेक बच्चे हर दिन महसूस करते हैं। लीक से हटकर सृजनशीलता के प्रति बच्चों के लगाव को कितने लोग प्रोत्साहित कर पाते हैं? जो बच्चे पढ़ाई या अपने 'जीवन वृत्ति' से अलग किसी सृजनात्मक गतिविधि में लगन से लगते हैं उन्हें न तो माता-पिता और न ही बहुत सारे शिक्षकों की ओर से बढ़ावा मिल पाता है। कुछ लोग तो अनावश्यक ही मीन-मेख निकालने लग जाते हैं। हमारी बहुत सारे बच्चों से बातें हुई। उनके मिश्रित अनुभव थे। जहाँ कुछ बच्चे अपने माता-पिता/शिक्षकों द्वारा दिए जाने वाले ध्यान और देखभाल से संतुष्ट थे तो कई बच्चे ऐसे मिले जो ऐसा नहीं समझते। बहरहाल, यदि बच्चों को उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के अवसर नहीं उपलब्ध कराए जाएँगे तो हम कैसे सांस्कृतिक तौर पर एक वैविध्यपूर्ण समाज की कल्पना कर सकते हैं? बच्चों की सफलता का केवल एक ही पैमाना है यह मानकर हम क्यों चलते हैं? हम ऐसे प्रेरणास्पद अनुभव जानने को उत्सुक हैं जो बच्चों की सृजनात्मक राह की मुश्किलों को समझने और सुलझाने के बारे में हों।

(स्रोत : एक गुजराती लोककथा पर आधारित)

हवा का शिष्टाचार

एक तितली थी जो हमेशा यह सोचती रहती थी कि क्यों कुछ फूल दूसरों से अधिक सुंदर होते हैं? क्यों कुछ फूल मधुमक्खियों और तितलियों को अपनी ओर बुलाते हैं? जबकि दूसरे तो किसी की परवाह ही नहीं करते। वह इन दूसरों के बारे में दुविधा में रहती कि क्या ये अहंकारी, उदासीन व ठंडे मिजाज के हैं। यह व्यवहार देखते और इसको समझने की कोशिश करते हुए एक दिन जब उससे रहा नहीं गया तो वह कैक्टस पर उगे एक फूल के पास जा पहुँची। उसने पूछा, 'क्यों नहीं तुम मधुमक्खियों और तितलियों को अपनी ओर आकृष्ट करते हो?'

फूल बोला, 'देखो, आकर्षण ही एकमात्र वजह नहीं है जिससे प्रकृति फलती-फूलती है। हवा, बारिश, तूफान सभी पराग फैलाने का काम करते हैं। इसलिए मैं क्यों केवल मधुमक्खियों के लिए परेशान होऊँ, जो अपनी उपयोगिता की कीमत खुद ही तय करती हैं?' तितली इस उत्तर से खुश नहीं थी हालाँकि वह इस आत्मसंतोष की वजह को समझ सकती थी। वह हवा के पास पहुँची और पूछा, 'क्या यह सही है कि आप ऐसे आत्मतुष्ट फूलों के पुनरोत्पादन में मदद करती हैं जो मधुमक्खियों के प्रति शिष्टाचार निभाना भी जरूरी नहीं समझते?' हवा जोर से हँसी। तितली के पंख फड़फड़ा उठे। उसके लिए हवा में अपने स्थान पर बने रहना भी मुश्किल हो रहा था। हवा बोली, 'इस दुनिया में सृजन के लिए केवल आकर्षणों को ही श्रेय देना ठीक नहीं है, इसके लिए विकर्षण भी जिम्मेदार होते हैं। जंगली फूल अपने बीजों को दूर-दूर तक फैला देते हैं जबकि घर की बगिया में उगे फूल बीजों को अपने तक ही रखते हैं। अब किसे अहंकारी कहा जाए - उन्हें जो अपने बीजों को बाँटते हैं या फिर उन्हें जो अपने बीजों को अपने पास ही रखते हैं?'

तितली अवाक थी। अभी भी वह कुछ तय नहीं कर पा रही थी।

क्या आपकी शंका दूर हुई?

क्या आपके पास कोई उत्तर है?

स्रोत : स्वयं का संग्रह

क्या छोटी-छोटी पहल होती है स्थिर और सबल!

जंगल के किनारे एक विशालकाय पेड़ था। इसकी शाखाएँ खूब फैली हुई थीं और इसकी जड़ें भी। इसकी घनी छाँव लोगों को धूप से बचाती। अनगिनत चिड़िया और छोटे-छोटे प्राणी इसकी शाखाओं में बसेरा करते। पूरे समय गहमागहमी बनी रहती थी। इसी पेड़ के नीचे एक छोटा पौधा था। पौधा नाजुक और दुबला-पतला था और हवा के हलके झोंके भी उसे झुका देते थे।

एक दिन इन दोनों पड़ोसियों में बातचीत हो रही थी। 'नन्हे बच्चे', पौधे की ओर मुखातिब होकर पेड़ बोला, 'तुम क्यों नहीं अपनी जड़ें ज़मीन

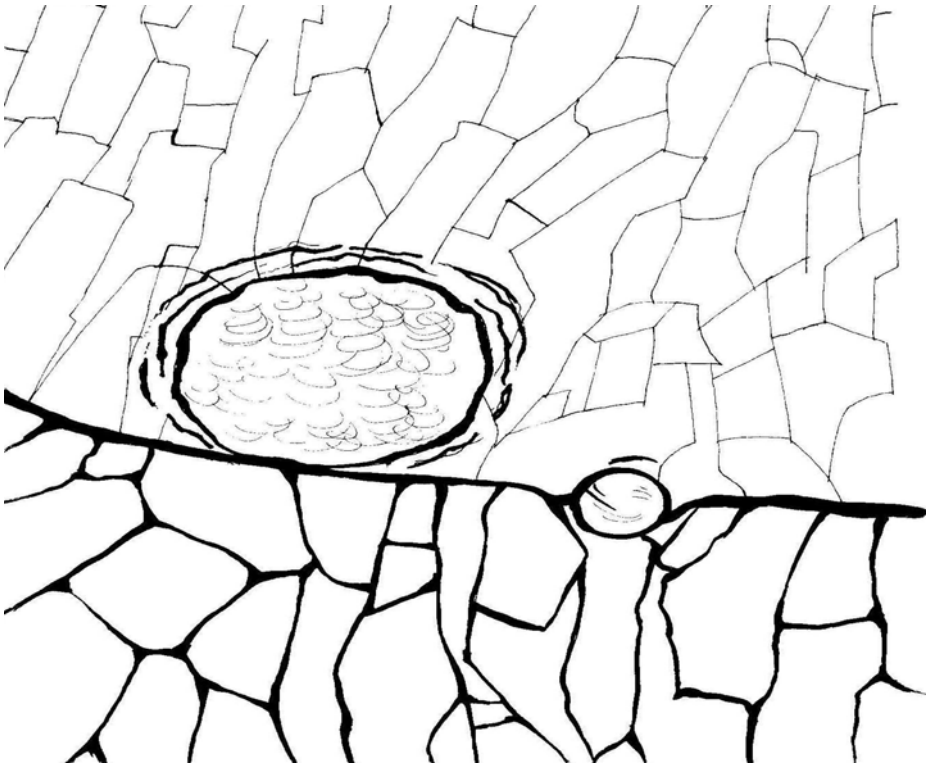

में गहरे उतारते हो और अपना सिर मेरी तरह दृढ़ता से ऊपर की ओर उठाते हो?' 'मुझे ऐसा करने की ज़रूरत महसूस नहीं होती।' पौधा मुस्कराते हुए बुदबुदाया, 'सच तो यह है कि मुझे अपनी स्थिति अधिक सुरक्षित लगती है।'

'सुरक्षित!' उपहास के स्वर में पेड़ ने कहा, 'क्या तुम कहना चाहते हो कि तुम मुझसे अधिक सुरक्षित हो? क्या तुम जानते हो कि मेरी जड़ें ज़मीन में कितनी गहरी हैं? मेरा तना कितना मज़बूत और मोटा है? अकेले आदमी की तो छोड़ो, दो लोग भी मिलकर चाहें तो मेरे तने को घेरे में नहीं ले सकते हैं। कौन है जो मेरी जड़ों से मुझे उखाड़ पाए या मेरा सिर ज़मीन से लगा सके?'

पेड़ इतना कहते-कहते तैश में आ गया था। ज़ल्दी ही पेड़ को अपने इन शब्दों के लिए पछताना पड़ा। उसी शाम इलाके में भयंकर तूफान आ गया। पेड़ जड़ सहित उखड़ गए थे। पूरा जंगल तहस-नहस हो गया। तूफान ने उस विशालकाय पेड़ को उखाड़कर दूर फेंक दिया था। जब तूफान थम गया तो आसपास के गाँव वाले नुकसान का जायजा लेने पहुँचे। विशाल और ताकतवर वृक्ष जो कभी आसमान को छूते थे आज धूल चाट रहे थे। पूरे जंगल में यही स्थिति थी।

लेकिन वहाँ एक अपवाद भी था। नन्हा पौधा। जब तूफान प्रचंड क्रोध से भरा चला आ रहा था तो पौधे ने अपने को पूरी तरह से झुका लिया। जब तूफान गुजर गया, पौधे ने एक लंबी सांस ली और फिर से सीधा खड़ा हो गया।

किसी शक्तिशाली दुश्मन से पार पाने के लिए झुकने की क्षमता होना क्या यूँ ही छोटी-सी बात है या फिर यह एक बुद्धिमानी भरी बात है?

अनेक आदिवासी क्षेत्रों में हिंसा के मौजूदा माहौल में छोटे-छोटे समुदायों के सामने विकट स्थिति है। उनके परिवेश में बड़ी कॉरपोरेट कंपनियाँ घुसपैठ कर रही हैं। खनन एवं अन्य उद्देश्यों से आ रही इन कंपनियों को राज्य का समर्थन प्राप्त है। विशालकाय निवेश हो रहे हैं। लेकिन छोटे ज्ञानधारकों, पारंपरिक ज्ञान के रक्षकों और संसाधनों के संरक्षकों की इन निवेश में कहीं कोई हिस्सेदारी नहीं है। कंपनियों की इस घुसपैठ से

होने वाले तात्कालिक पर्यावरणीय नुकसानों पर भी इन लोगों का कोई नियंत्रण नहीं है। बावजूद इस सबके, पत्रिका के मुखपृष्ठ पर निपिन कालरा के चित्र में दर्शाया गया है कि अंततोगत्वा जीत छोटे, बिखरे, अलग-थलग पड़े किंतु आपस में बहुत अच्छी तरह जुड़े समुदायों की ही होनी है। चित्र के बाएँ हिस्से में विवरण अधिक सुस्पष्ट हैं। दूसरे हिस्से में एक बड़ी गेंद रौंदते हुए आगे बढ़ रही है और यहाँ छोटे-छोटे अस्पष्ट व धुँधले विवरण हैं। वक्त के साथ जिन्हें भुला दिया जाएगा। क्या यह चित्र हमारे यूटोपिया (काल्पनिक आदर्श) को व्यक्त करता है। हो सकता है ऐसा ही हो। यदि आने वाला भविष्य हम सबका है तो इस भविष्य के लिए क्या किसी काल्पनिक आदर्श के साथ जीने का हमें कोई हक नहीं। वह भी एक ऐसे समय में, जब अनेक शक्तियाँ व्यापक सामाजिक व पर्यावरणीय सरोकारों से लगभग मुँह मोड़ चुकी हों। (संपा.)

स्रोत : ईसप की कथाओं में से एक का बृष्टि बंद्योपाध्याय द्वारा किया पुनर्पाठ, पिटारा किड्स नेटवर्क www.pitara.com *में पहले प्रकाशित।*

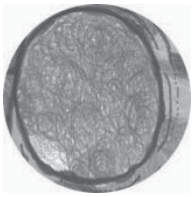

बच्चों से भी सीख सकते है हम

... कक्षा में मैंने एक खूबसूरत चित्रों वाली पुस्तक चुनी, जिसमें एक बहादुर बूढ़े नर भेड़ की कहानी थी, जो गहरी बर्फीली घाटी में खो गए नन्हे मेमने को खोजने जाता है ...

छः वर्षीय ग्राहम ने बड़े चाव के साथ कहानी पढ़नी शुरू की।

'रोनाल्ड एक बूढ़ा, भूरे बालों वाला भेड़ था, जो एक बहुत बड़े फार्म के निकट चौड़ी हरी घाटी में रहता था।'

ग्राहम ने अचानक पढ़ना रोक दिया और गौर से भेड़ के चित्र को देखने लगा। हँसता हुआ चेहरा, छोटे सींग, भारी शरीर और आँखें काले कंचे जैसी चमकदार थी। 'यह कौन-सी नस्ल है?' ग्राहम ने पूछा। 'नस्ल?' मैंने दुहराया।

'हाँ,' बच्चा बोला, 'कौन-सी नस्ल का है यह?'

'मुझे नहीं पता, ' मैंने अफ़सोस के साथ उत्तर दिया।

'इसका मतलब अपनी भेड़ के बारे मे नहीं जानते?'

'नहीं, मैं नहीं जानता, मैंने कहा। 'मिस,' बच्चे ने जोर से आवाज़ लगाई, 'क्या टोनी एक मिनट के लिए यहाँ आ सकता है? इस भेड़ की नस्ल के बारे में मुझे पूछना था।'

गोलमटोल लाल गालों और बहती नाक वाला छः वर्षीय नन्हा टोनी आ पहुँचा। 'चलो इस चित्र को ध्यान से देखें, ' उसने कहा।

मैं भी किताब पर झुक गया। बड़ी सफेद भेड़, शरीर पर काले धब्बे, चमकदार दाँतों वाले मुँह के साथ, किताब में से मुस्कराते हुए झाँक रही थी। 'यह मशम है या स्वेलडेल?' उसने मुझसे पूछा।

'मुझे नहीं पता,' मैंने पहले की ही तरह अफ़सोस के साथ उत्तर दिया।

एक और बच्चा इस चर्चा में शामिल हो गया, 'यह मुझे कुछ नीले चेहरे वाली लीसेस्टर जैसी लग रही है। तुम्हारा क्या मानना है?'

'मुझे तो इस बारे में कुछ नहीं पता,' मैंने उत्तर दिया।

'इसका मतलब अपनी भेड़ के बारे में नहीं जानते?' फिर पहले जैसा सवाल आया और फिर वैसा ही उत्तर था, 'नहीं, मैं नहीं जानता'। इस समय तक देखने वालों की भीड़ जमा हो चुकी थी।

'ये लीसेस्टर नहीं हैं,' यह टोनी का विश्वास भरा स्वर था, 'क्योंकि चित्र में एक छोटा गेट भी है' दूसरे बच्चों ने हूँ हाँ करते हुए सहमति व्यक्त की।

इससे पहले मैं पूछता कि छोटे गेट का यहाँ क्या संबंध, ग्राहम स्पष्ट कर चुका था, 'लीसेस्टर की लंबी टाँगें होती हैं। वे आसानी से छोटे गेटों को लाँघ सकती हैं।'

'क्या यह टेक्सेल है?' चित्र को निहार रही एक बच्ची बोल उठी। फिर उसने किताब हाथ में पकड़े मुझ अज्ञानी की तरफ ताका और बोली, 'यह डच नस्ल होती है'।

बच्ची की बात पर ग्राहम ने अपनी राय रखी, 'टेक्सेल का चेहरा सफेद होता है, काला नहीं'। जल्द ही पूरी कक्षा किताब में बनी भेड़ की नस्ल का पता लगाने में जुट गई।

... दूसरी कक्षा से एक लड़की को बुलाया गया।

'मेरा मानना है कि ये ब्लेयू द मेन या रूज द ओएस्ट हैं,' उसने अपना मत रखा। फिर उसने किताब हाथ में पकड़े मुझ मूर्ख की ओर देखा और सीधे मेरी आँखों में आँखें डालकर बोली - 'ये फ्रांसिसी नस्ल हैं!'

(स्रोत : *Phinn Gervase, 1999, Other side of the Dale, London: Penguin, p288*)

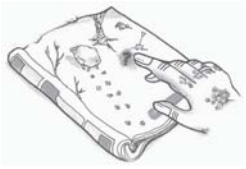

(कब-कब ऐसा होता है कि शिक्षक विद्यार्थियों से सीखें और इसे उनके संज्ञान में भी लाएँ। यदि यह कहानी शिक्षा व्यवस्था पर सोचने के लिए प्रेरित न करे तो फिर और क्या करेगी? गड़रियों के बच्चे ज्ञान के सभी रूपों में कमजोर नहीं होते। बच्चे जिनमें अच्छे होते हैं क्या उन बातों या विशेषताओं के दृष्टिगत स्कूल बनेंगे? विशेष रूप से क्या प्राकृतिक तौर पर समृद्ध लेकिन भौतिक तौर पर गरीब क्षेत्रों के बच्चों के साथ ऐसा होगा? संपा.)

कहाँ गई वो बूंद

एक दिन एक नन्ही चंचल बच्ची एक पेड़ के नीचे सूखे पत्तों से खेल रही थी। नज़दीक ही कुछ चिड़ियाँ एक पोखर में नहा रही थीं। नन्ही लड़की ने चिड़ियों को देखा और पूछा, इतनी गर्मी तो नहीं है कि नहाना पड़े? एक छोटी चिड़िया बोली, क्या हम तभी नहाते हैं जब मौसम गर्म हो, हो सकता है मैं अंदर से गर्मी महसूस कर रही होऊँ। नन्ही लड़की ने इस बारे में तो सोचा ही न था। फिर भी बहस में इतनी आसानी से हार क्यों मानना, सो उसने कहा, 'ठीक है, ठीक है, नन्ही चिड़िया। लेकिन यह बताओ, पानी में डुबकी लगाने के बाद

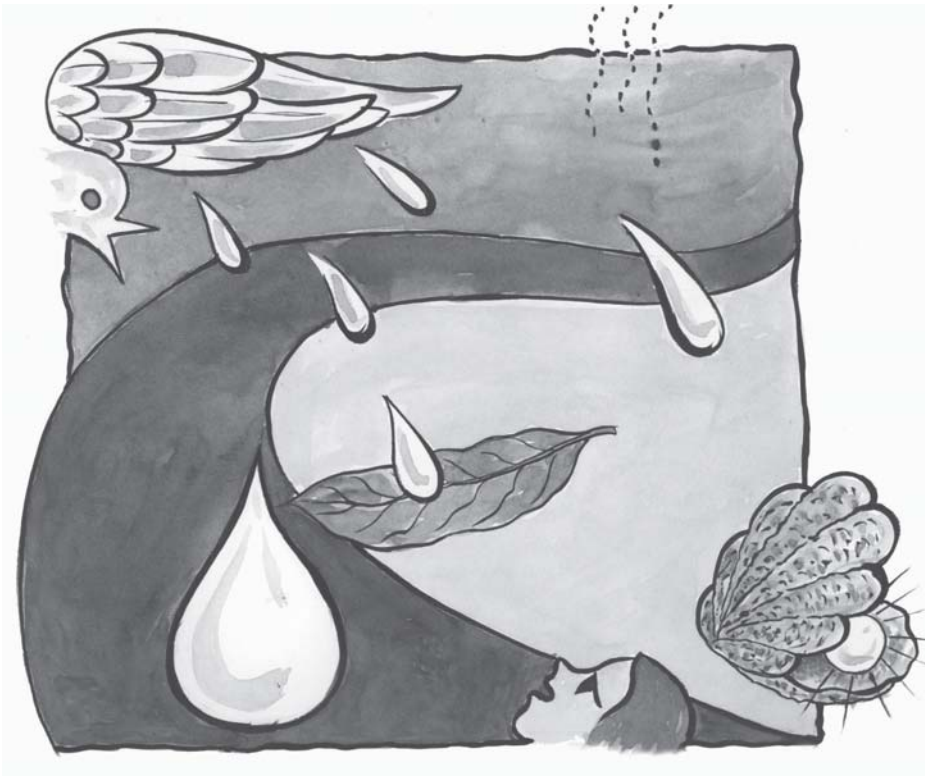

तुम इतनी ज़ोर से अपने पंख क्यों फड़फड़ाती हो, क्यों नहीं पानी को धीमे-धीमे वाष्प बनकर उड़ने देती हो, जिससे तुम्हें अधिक देर तक शीतलता मिले?' चिड़िया भी अब बहस में लड़की को यूँ ही छोड़ने वाली नहीं थी। वह बोली, 'जब मैं अपने पंख फड़फड़ाती हूँ, कुछ बूँदें सूरज की रोशनी पड़ने पर मोती जैसी बन जाती हैं, कुछ सूखी पत्तियों पर गिरती हैं जिनके साथ तुम खेल रही हो, कुछ अन्य चिड़ियों पर गिरती हैं और कहती हैं तुम भी नहा लो'। फिर जैसे कुछ सोचते हुए उसने अपनी बात बढ़ाते हुए कहा कि सूखी पत्तियों पर पानी की बूँदें पड़ने से जल्दी खाद बन जाती हैं, बूँद से भारी हो जाने पर हवा उनको बहुत दूर तक नहीं उड़ा पाती। इस तरह इन पेड़ की जड़ों को वह पोषण देती हैं, जिनके नीचे बैठकर हम बात कर रहे हैं। लेकिन कुछ बूँदें हवा में खो जाती हैं। चिड़िया ने लड़की से पूछा, 'बता सकती हो वे कहाँ जाती हैं?'

लड़की चुप थी, उसे नहीं पता था। क्या आपको पता है?

स्रोत : स्वयं का संग्रह

एक अनगढ़ी मूर्ति की अपूर्ण कहानी

वज्रासन विधानपुर के जाने-माने मूर्तिकार थे। विधानपुर प्रसिद्ध नदी रेवती के तट पर स्थित, कला और शिल्प के लिए ख्यात, एक छोटा-सा राज्य था। वज्रासन की मूर्तियों के खरीदारों में अधिकांश राज्य के संभ्रांत वर्ग के लोग थे। राज्य से बाहर के लोग भी ग्राहकों में शामिल थे। वज्रासन अपने ग्राहकों को शायद ही कभी निराश करते थे। लेकिन उनकी बस एक समस्या थी - वह मूर्ति के किसी एक हिस्से को अधूरा छोड़ देते थे। उदाहरण के लिए, मानव मूर्तियों में कोई एक हाथ या पाँव

या फिर कोई अन्य अंग अपूर्ण होता था। यही बात अन्य प्रकार की मूर्तियों पर भी लागू होती थी।

यह ऐसी बात थी जिसे लोग पसंद तो नहीं करते थे लेकिन इतने बड़े मूर्तिकार की इस आदत का किया भी क्या जा सकता था। लोगों ने इस सनक को जैसे स्वीकार कर लिया था। मूर्तिकार का मानना था कि अपूर्ण हिस्सा कृति पर चर्चा का प्रस्थान बिंदु बनता है और धीरे-धीरे बातें पसंदीदा हिस्सों तक पहुँच जाती हैं। एक दिन एक युवा प्रशिक्षु मूर्तिकार नचिकेता से एक मूर्ति बनने के दौरान ही क्षतिग्रस्त हो गई। हालाँकि नचिकेता बहुत निष्ठापूर्वक मूर्तिकार के कामों में हाथ बँटाता था, लेकिन यह देखकर वज्रासन क्रोधित हो उठे और नचिकेता को फटकारने लगे। नचिकेता ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'मान्यवर, आपको मूर्ति का कोई एक हिस्सा अधूरा छोड़ ही देना होता है तो क्यों नहीं इस क्षतिग्रस्त हिस्से को ही अधूरा छोड़ दें?' यह सुनकर वज्रासन और अधिक क्रोधित हो उठे। गुस्से में वह बोले, 'मूर्ख, क्या तुम्हें अपूर्णता के सिद्धांत के बारे में कुछ पता है? जब तक मुझे मूर्ति में एक विशेष संतुलन बनता नहीं दिखाई पड़ जाता, तब तक मैं यह तय नहीं करता कि किस हिस्से को मुझे अधूरा छोड़ देना है। इस मूर्ति में अभी मैं उस अवस्था तक नहीं पहुँचा हूँ।'

नचिकेता की समझ में यह तर्क नहीं आया, लेकिन उसने मौन ही रहना उचित समझा। क्या आपकी समझ में आया? क्यों अपूर्णता प्रासंगिक है, किस रूप में कहाँ, किस हिस्से में कितना और कब अधूरेपन का महत्व है? शायद, ये अपूर्णताएँ ही हमें वह नज़र देती हैं जिससे हम किसी व्यक्ति या कार्य में पूर्णता देख पाते हैं। क्या ये अपूर्णताएँ ही नहीं हैं जो किसी कार्य, घटना या व्यक्ति को हमारे सम्मुख बनाए रखती हैं? क्योंकि पूर्ण रूपों या कार्यों को हम सराहते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। उन्नत व उत्कृष्ट गतिविधियों के संदर्भ में कदाचित इन अपूर्णताओं का महत्व अधिक बढ़ जाता है।

अपूर्णता के सिद्धांत व दिनोंदिन जीवन पर इसके प्रभाव पर अपने अनुभवों को लिखकर हमें भेजें। सर्वाधिक रोचक उत्तर को प्रकाशित किया जाएगा और पत्रिका की एक वर्ष की सदस्यता भी उपहार स्वरूप प्रदान की जाएगी (संपा.)।

क्या खोजा, क्या पाया?

यह जापान देश के दो मेंढक की कहानी है। एक मेंढक ओसाका कस्बे के निकट समुद्र तट पर एक गड्ढे में रहता था, जबकि दूसरा क्योटो शहर के बीच से बहने वाली एक छोटी स्वच्छ जलधारा का निवासी था। दोनों के बीच काफ़ी दूरी थी। ज़ाहिर है कि दोनों एक दूसरे के बारे में नहीं जानते थे। लेकिन यह एक बहुत मज़ेदार बात है कि दोनों के दिमाग में एक ही समय में एक जैसा ख़्याल आया और वह था कि थोड़ी-बहुत दुनिया घूमी जाए।

क्योटोवासी ओसाका घूमना चाहता था और ओसाका में रहने वाले मेंढक की इच्छा क्योटो घूमने की थी, जहां महान मिकाडो का अपना महल था।

एक खुशनुमा सुबह को दोनों ने अपने घर से आमने-सामने यात्रा का श्रीगणेश किया। जितना उन्होंने सोचा था, यात्रा उससे कहीं अधिक कठिन थी। घुमक्कड़ी का उन्हें कोई अनुभव भी नहीं था। दोनों नगरों के बीचों-बीच एक पहाड़ था जिसे पार करने के लिए उस पर चढ़ने की ज़रूरत थी। इसे चढ़ने में बहुत समय लगा। शिखर तक पहुंचने के लिए उन्हें अनगिनत बार कूदना पड़ा। आखिरकार वे दोनों पहुंच ही गए। लेकिन उनके अचरज का ठिकाना नहीं रहा जब उनमें से हरेक ने वहां एक दूसरा मेंढक देखा।

दोनों ने बिना कुछ बोले क्षणभर के लिए एक दूसरे को देखा। फिर वे बातचीत में लग गए। दोनों अपने घरों से इतनी दूर आने और इस मुलाकात की वजह पर बात करने लगे। दोनों को यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि दोनों के मन में एक ही जैसी चाहत पैदा हुई थी - कि अपने देश के बारे में कुछ जाना जाए। चूंकि दोनों को ही ऐसी कोई ज़ल्दी नहीं थी इसलिए दोनों ने उस ठंडे, नम स्थान पर अपने पांव पसार लिए। दोनों सहमत थे कि अपने-अपने रास्ते जाने से पहले भरपूर आराम कर लिया जाए।

'कितना अफ़सोसजनक है कि हमारा आकार बड़ा नहीं है,' ओसाका वाले मेंढक ने कहा, 'बड़ा आकार होता तो हम इस जगह से दोनों नगरों को देख सकते थे और तब हम यह भी जान पाते कि इस यात्रा के उद्देश्य में हम कितने सफल हुए हैं।'

"अरे, इसका तो आसान उपाय है,' क्योटो वाले मेंढक ने उत्तर दिया, 'हमें केवल अपने पिछले पांवों पर खड़ा होना होगा, फिर हम एक दूसरे को मज़बूती से पकड़ लें। अब हम जिस-जिस नगर को देखना चाहते हैं, उसे देख सकते हैं'।

इस विचार से ओसाका वाला मेंढक इतने हर्षातिरेक में आ गया कि उसने फ़ौरन ही कूदते हुए अपने दोनों अगले पांव अपने दोस्त के कंधों पर रख दिए। दूसरा वाला भी अपने पिछले पांव पर खड़ा हो चुका था। अब वे दोनों खड़े थे और जितना अधिक ऊपर उठ सकते थे, उठ गए थे, दोनों ने एक दूसरे को कस के पकड़ा हुआ था कि कहीं नीचे न गिर पड़ें। क्योटो वाले मेंढक ने अपनी नाक ओसाका की तरफ कर ली थी और ओसाका वाले ने क्योटो की तरफ। लेकिन अहम बात यह थी कि वे दोनों ही यह भूल गए कि खड़े होने के बाद उनकी आंखें तो पीछे की तरफ देख रही हैं। नतीज़ा यह हुआ कि उनकी नाक तो उसी स्थान की ओर थी जहां वे जाना चाहते थे लेकिन उनकी आंखें जहां से वे आए थे उस दिशा की ओर हो गयी थीं।

'प्यारे!' ओसाका वाला मेंढक चिल्लाया, 'क्योटो तो एकदम ओसाका जैसा है। इतनी लंबी यात्रा का कोई फ़ायदा नहीं हुआ। मैं तो घर चला जाऊंगा!'

'यदि मुझे जरा सा भी यह पता होता कि ओसाका तो हूबहू क्योटो जैसा है तो मैं कभी भी इतनी लंबी दूरी नहीं तय करता,' क्योटो वाले मेंढक ने कहा, और यह कहते हुए उसने अपने दोस्त के कंधे से अपने अगले पांव हटा दिए। दोनों नीचे घास पर लुढ़क गए। दोनों ने विनम्रता के साथ एक दूसरे से विदा ली और अपने-अपने घर की ओर चल पड़े। जीवन की आखिरी सांस तक वे यही समझते रहे कि ओसाका और क्योटो उतने ही समान हैं जितने मटर के दो दाने हो सकते हैं, हालांकि दोनों नगर उतने ही अलग थे जितने दो नगर हो सकते हैं।

कभी-कभी एक दूरी लेकर ही हमें इसका अहसास होता है कि हम अपनी दृष्टि और जीवन के प्रभावों से किस कदर चिपके हुए हैं। इस बात को दूरी की मात्रा के बजाय खुलेपन के संदर्भ में लिया जाना चाहिए। कहने का अर्थ यह कि हम दिमाग बंद कर लेते हैं, दृष्टिदोष के शिकार हो जाते हैं। हम नई राहों का अन्वेषण नहीं कर पाते हैं क्योंकि हम हमेशा मेंढक की आंख से दुनिया को देखने में ही सुकून पाने लगते हैं। चेतना यदि हमेशा आरामदेह जगत में ही विचरण करना चाहे तो नवप्रवर्तन कैसे होंगे? और यदि कोई इससे बाहर आकर नवप्रवर्तन करे भी तो उस पर ध्यान कैसे जाएगा? यदि हम अनिश्चितता, अनजान स्थलों, लोगों, संस्कृतियों, गतिविधियों से हमेशा दूरी बनाए रखेंगे तो क्या हम कभी नई राहें खोज पाएंगे? मेंढक कहते हैं- नहीं। आप क्या कहते है? - संपादक

यहां क्या

?

क्या आप यह पृष्ठ हमारे लिए अपनी तरफ से भरना चाहते है? आप कोई भी सुनी हुई या पढ़ी हुई एक सुन्दर बोध कथा लिखकर भेजें। बोध कथा की इस श्रृंखला में अपनी एक कथा को शामिल करना चाहेगें, ऐसी हमारी आशा है। चुनी हुई उत्तम कथा हम प्रकाशित करेंगे और विजेताओं को ५००/- रु. का इनाम तथा एक साल के लिये सूझ बूझ के अंक मुफ्त मिलेंगे।

परन्तु हां... कथा लिखकर भेजते वक्त उसका स्त्रोत तथा संदर्भ लिखना न भूले ....!

सृष्टि

सृष्टि की स्थापना हनी बी नेटवर्क, यानि सूझबूझ सम्पन्न लोगों के गठजोड़ को समर्थन देने हेतु की गई थी। प्रकृति के प्रति हमारा समर्पण, नैतिकता के नये आयामों की समझ और स्थानीय रचनात्मकता और सर्जनशीलता को प्रोत्साहन देना हमारी जिम्मेदारियाँ है। देश में ज्ञान सम्पन्न पर आर्थिक रुप से गरीब लोगों के समर्थन में नीति बने, यह प्रयास हमें निरंतर करना है, देश को टिकाऊ तकनीक के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बनाना हमारा कर्तव्य है। सृष्टि ने तकनीकी सूझबूझ ही नहीं, सामुदायिक मर्यादाओं में स्थानीय नवाचार और प्राथमिक शिक्षा में बिना किसी बाहरी मदद के नये प्रयासों का ज्ञान कोष भी बनाया है।

सृष्टि का मुख्य उद्देश्य है :

- स्थानीय सूझबूझ, नैतिकता, मूल्य, मर्यादाओं, उत्कृष्टता और सामाजिक न्याय के आपसी सम्बन्ध को सुदृढ़ करना।
- समाज की प्रकृति के प्रति निष्ठा को आगे बढ़ाना और स्थानीय मर्यादाओं से सीखने का व्यवस्थित प्रयास करना।
- औपचारिक व अनौपचारिक विज्ञान के बीच सेतु बनाना,
- स्थानीय सूझबूझ में गुणवत्ता बढ़ा कर व नये उत्पाद बनाकर स्थानीय आविष्कारकों, पारम्पारिक ज्ञान सम्पन्न लोगों व कारीगरों को आर्थिक लाभ उपलब्ध कराना है।
- नवाचारकों के बौद्धिक सम्पदा के अधिकारो की सुरक्षा

  और

- समाज को मूक प्राणियों के प्रति अधिक संवेदनशील बनना, स्थानीय सूझबूझ को विकास का आधार बनाना और संवेदनशीलता, संपेक्षण, सामाजिक लाभ और सामुदायिक सम्पदा की भावना को फैलाना

web : www.sristi.org, www.indiainnovates.com

ज्ञान

gian

भारतीय प्रबंध संस्थान (Indian institute of Management, Ahmedabad) में एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी १९९७ में आयोजित की गई जिसका उद्देश्य था, स्थानीय सूझबूझ व रचनात्मकता के महत्व को पहचानना।

१ नवाचार, निवेश व उद्यम को जोड़ना और सूझबूझ पर आधारित व्यवसायों की स्थापना करना,

२ स्थानीय अविष्कार व नवसर्जन पर आधारित तकनीकों का वाणिज्य माध्यमो से प्रसार करना,

३ सूझबूझ सम्पन्न लोगो के बौद्धिक अधिकारों की सुरक्षा,

४ लोगों को उनकी सूझबूझ के बाजार में आने से होने वाले लाभ का न्यायोचित हिस्सा दिलवाना, साथ ही इस लाभ को उनके समुदाय, प्रकृति व औपचारिक विज्ञान तकनीक, डिजाइन इत्यादि संस्थाओं के साथ भी बांटना

web : www.gian.org

लोगों के ज्ञान, सूझबूझ, अन्वेषण व अनुभवों पर आधारित साहित्य
आप तक पहुँचाना ही सृष्टि इन्नोवेशन्स का मुख्य उद्देश्य हैं।

* फसल बिना ज़हर के
* नैसर्गिक पशु चिकित्सा
* व्यंजनो की विरासत

सूझबूझ की सदस्यता लेने में ही सूझबूझ हैं

किसान, कारीगर एवं व्यक्तिगत	१५० रु.
छोटी स्वयं सेवी संस्थायें	२०० रु.
बड़ी संस्था	१००० रु.
सहचर - मित्र	१००० रू.

पांच वर्ष की सहयोग राशि देकर आप छः साल तक पत्रिका पा सकते हैं। कृपया अपनी सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट एवं मनीऑर्डर या **(Payable at Par)** चेक के ज़रिये हमारे पते पर भेजिये।

सृष्टि इन्नोवेशन्स

AES बॉयज होस्टल केम्पस, युनिवर्सिटी लायब्रेरी के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-३८० ००९

फोनः ०७९-२७९१३२९३, २७९१२७९२

Email: honeybee@sristi.org, Web: www.sristi.org